अराध्या हिंदी

(Teacher Manual) **Part-3 to 8**

BlueRay Exceedingly Good

अराध्या हिंदी-3

पाठ- 1: सूरज जल्दी आना जी

(क) स्वयं कीजिए **(ख)** 1. स 2. ब 3. स 4. अ 5. ब **(ग)** 1. बरसात का 2. धूप 3. कोहरा 4. आर-पार दिखाई नहीं देता। 5. कपड़े गीले हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. शिक्षा 2. अज्ञान 3. श्रेय

(ख) 1. बहुवचन 2. एकवचन 3. एकवचन 4. बहुवचन **(ग)** 1. क्ष 2. ज्ञ 3. त्र 4. श्र

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ- 2 : सफाई और स्वास्थ्य

(क) 1. शाम 2. माला 3. मम्मी 4. पानी

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. स 2. स 3. अ 4. ब

(घ)1. मम्मी ने समझा यश खेलकर जय के घर चला गया होगा। 2. एक प्रकार के अति सूक्ष्म जीवाणु। 3. गंदगी में। 4. पेट की बीमारियाँ, पेचिश, हैज़ा, टाइफाइड

भाषा-बोध

(क) 1. बीमारियाँ 2. बाल्टियाँ 3. चीजें 4. तौलिये

(ख) 2. चुहिया 3. मम्मी 4. बिल्ली 5. मामी 6. कबूतरी 7. चाची 8. घोड़ी

आओ सीखें : स्वयं कीजिए

पाठ-3 : पीड़ित की सहायता

(क) 1. सायं 2. मुस्कराते 3. पीछे 4. अटैची

(ख) 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब) 6. (ब)

(ग) 1. उनके दोनों बेटे शाम होने तक भी शहर से लौटकर नहीं आए थे, इस कारण वे चिंतित थे।

2. जॉन और लिलि शहर में नौकरी करते थे।

3. लोगों ने चोरों को पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया और उनसे अटैची लेकर महिला को दे दी।

4. पुलिस ने चोरों को हवालात में डाल दिया।

भाषा-बोध

(क) 1. एक स्थान पर बस रुकी।

2. जॉन और लिलि शहर में नौकरी करते थे।

3. दरवाजे की घंटी बजी।

4. हम बस से लौट रहे थे।

5. चोर अटैची लेकर भागे।

(ख) प्रातः = सुबह, अँधेरा = अंधकार, निकट = समीप, उत्तर = जवाब, महिला = स्त्री, अपराध = कानून के विरुद्ध कार्य।

(ग) 1. रक्षा, परीक्षा, कक्षा

2. पत्र, मित्र, मात्रा

(घ) 1. बचपन 2. मित्रता 3. वीरता 4. शत्रुता 5. लड़कपन 6. बुढ़ापा

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-4 : आओ लौट चलें

(क) 1. डाँट 2. नहीं लगता 3. क्रिकेट 4. नौकरी।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1.(स) 2.(ब) 3.(ब) 4.(ब)

(घ) 1. वे न तो पढ़ाई में ध्यान देते हैं और न ही खेती के काम में अपने पिता का हाथ बँटाते हैं।

2. अपनी आदतों के कारण उन्हें स्कूल में अध्यापक की डाँट खानी पड़ती है। इससे दुःखी होकर वे स्कूल छोड़ देते हैं। 3. ठीक से बाजा न बजाने पर बैंडमास्टर उन्हें भगा देता है। 4. उन्हें सभी जगह अपनी आदतों के कारण डाँट खानी पड़ती है। अंत में वे सोचते हैं कि इससे तो अच्छा है स्कूल में अध्यापक की ही डाँट सुन लें। इसलिए वे स्कूल चले जाते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. बाजे 2. जूते 3. तुरहियाँ 4. नौकरियाँ 5. कपड़े 6. जालियाँ

(ख) 1. बुद्धिमान बालक 2. तीन छात्र
3. सफेद कपड़ा 4. कोरा कागज
5. गर्म दिन 6. अँधेरी रात

(ग) 1. हरिशंकर (पुल्लिंग) 2. गोविन्द (पुल्लिंग) 3. अध्यापक (पुल्लिंग) 4. नौकरी (स्त्रीलिंग) 5. माता (स्त्रीलिंग) 6. भाई (पुल्लिंग)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-5 : निराला जादूगर

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. ब 2. ब 3. स

(ग) 1. जादूगर

2. करतब 3. बड़े-बड़े जादू दिखाता है 4. मूँछे नुकीली, पगड़ी लम्बी 5. तगड़ी 6. खाली टोकरी में बड़ा-सा मुर्गा ला दिया।

भाषा-बोध

(क) 1. जादूगर 2. चालाक 3. चोर 4. झूठा

(ख) 1. मोरनी 2. गाय 3. बाघिन 4. चुहिया 5. ग्वालिन **(ग)** 2. पढ़ना-लिखना 3. हाथ-पैर 4. सोचो-समझो 5. खेल-कूद

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-6 : उपयोगी अग्नि

(क) 1. धू-धू 2. प्रकाश 3. कच्चा 4. लाभ

(ख) 1. × 2. ✓ 3. × 4. ✓

(ग)1.(ब)2. (स) 3. (स) 4. (अ)

(घ) 1. माचिस की जलती हुई तीली फेंकी जाने पर खूँटी पर टँगे कपड़ों पर गिर गई थी जिससे वे जलने लगे थे। 2. भोजन पकाने, सर्दी दूर करने, उद्योगों को चलाने व प्रकाश करने के काम आती है। 3. पानी को गर्म करने पर भाप बनती है। भाप की शक्ति से अनेक कार्य किए जा सकते हैं। 4. हमें आग के प्रयोग में पूर्णतया सावधानी रखनी चाहिए।

भाषा-बोध

(क) 1. ✓ 2. × 3. ×

(ख) 1. सलिल की शैतानी से सभी परेशान थे।

2. जेम्स वाट ने भाप के इंजन का अविष्कार किया था।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-7 : तीन बहिनें

(क) 1. तवे 2. गर्म 3. घास 4. वृक्ष 5. ठंडी

(ख) 1. × 2. × 3. ✓ 4. ✓ **(ग)** 1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब)

(घ) 1. तेज धूप से मेरा शरीर तवे की तरह जल रहा है। सभी तालाब सूख गए हैं- ऐसे में शरीर को कहाँ ठंठा करूँ। इसलिए वर्षा को खोजने जा रही हूँ। 2. भाई वृक्ष! चारों तरफ कीचड़-ही-कीचड़ हो गया है। चलने को भी रास्ता नहीं। मैं तो जाती हूँ सर्दी बहन की खोज में। 3. भाई! मेरे अंग सर्दी से ठिठुर रहे हैं। मैं गर्मी की खोज में जा रही हूँ। चिलचिलाती धूप ही मुझे इस ठंड से मुक्ति दिला सकती है। 4. बहिन, ठीक कहती हो। तुम तीनों गर्मी, सर्दी और वर्षा के आने और चले जाने में ही मेरी भलाई है।

(ङ) 1. वृक्ष ने 2. गर्मी 3. सर्दी 4. वृक्ष 5. वर्षा

(च) आकाश में कोहरा छाया रहता था। धूप न निकलने से ठंड और भी अधिक बढ़ गई थी।

भाषा-बोध

(क) सच्चा, व्यापार, अस्सी, दिल्ली।

(ख) स्वयं कीजिए। **(ग)** स्वयं कीजिए।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

पाठ-8 : समझदार बंदर

(क) 1. वानरों 2. पानी 3. अफ्रीका 4. घने जंगलों

(ख) 1. ✓ 2. × 3. ✓ 4. ×

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. सामान्य रूप से बंदर पेड़ों पर रहते हैं। 2. समूह में बंदर परस्पर प्रेम से रहते हैं परंतु उनमें झगड़े भी होते रहते हैं। 3. गोरिल्ले पेड़ों की डालियों से हाथियों की सूँड़ पर प्रहार करके उन्हें भगाते हैं। 4. गोरिल्ले हिंसक स्वभाव के होते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. गाँव, बुढ़िया 2. दिन, घर, साँप 3. पेड़, बंदर, 4. हाँडी, बंदर, पेड़।

(ख) 1. बँदरिया 2. बूढ़ा 3. हथिनी 4. नागिन

(ग) 1. डालियाँ 2. सेनाएँ 3. नालियाँ 4. दीवारें 5. फलियाँ 6. कलाइयाँ 7. कलियाँ 8. गोरिल्ले 9. पत्तियाँ 10. समस्याएँ।

आओ सीखे : स्वयं कीजिए।

पाठ-9 : दुखियारों की पीर हरूँगा

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. ✓ **(ग)** 1. स 2. स 3. ब

(घ) 1. पढ़-लिखकर ऊँचा नाम कमाने के लिए। 2. मुन्नी 3. छोटा, छोटी 4. अफसर

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. द्रव्यवाचक संज्ञा 2. समूहवाचक संज्ञा 3. जातिवाचक संज्ञा 4. व्यक्तिवाचक संज्ञा 5. भाववाचक संज्ञा

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-10 : पवित्र तुलसी

(क) 1. डालियों 2. औषधि 3. जल 4. दो-तीन।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ×

(ग) 1.(ब) 2.(स) 3.(स) 4.(स) 5.(अ)

(घ) 1. माताजी प्रात:काल स्नान करने के बाद तुलसी में जल डालती हैं, पश्चात् हाथ जोड़कर उसकी परिक्रमा करती हैं। सायंकाल गमले पर दीपक जलाकर रखती हैं।

2. तुलसी पर फूलों की बाल निकलती है, जिसे

मंजरी कहते हैं। 3. मंजरी में बड़ी मीठी गंध होती है। जब यह पककर सूख जाती हैं। तब बीज नीचे मिट्टी में गिर जाते हैं। वर्षा के दिनों में इन्ही बीजों से नए पौधे उग जाते हैं। 4. तुलसी की सूखी डालियों के गोल टुकड़ों से बनी माला को पहना जाता है तथा इसके द्वारा लोग मंत्रों का जाप भी करते हैं।

5. जिस आँगन में तुलसी का पौधा लगा हो, वहाँ रोग के कीटाणु प्रवेश नहीं करते।

भाषा-बोध

(क) 1. तुलसी (एकवचन) 2. वैद्य (एकवचन) 3. पत्ती (एकवचन) 4. हकीम (एकवचन) 5. पत्ते (बहुवचन) 6. डालियाँ (बहुवचन) 7. पौधे (बहुवचन) 8. साँप (एकवचन) 9. मंजरी (एकवचन) 10. बिच्छू (एकवचन)।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. **संज्ञा पद** - मंजरी, गंध **विशेषण पद** - मधुर 2. **संज्ञा पद** - तुलसी, पत्ते **विशेषण पद** - छोटे 3. **संज्ञा पद** - आँगन, गमला **विशेषण पद** - ऊँचा

आओ सीखे : स्वयं कीजिए।

पाठ-11: दीपावली

(क) 1. प्रकाश 2. दीयों 3. दीपावली 4. जुए।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. ✓

(ग) 1.(अ) 2.(स) 3.(स) 4.(ब)

(घ) 1. दीपावली का अर्थ है 'दीपों की पंक्ति'।

2. इस दिन श्रीराम रावण को मारकर अयोध्या वापस आए थे। इसी खुशी में लोगों ने अपने घरों में दीपकों का प्रकाश किया था।

3. दीपावली की रात दीये व मोमबत्तियाँ आदि जलाकर लक्ष्मी देवी की पूजा की जाती है। लोग मिठाइयाँ बाँटते हैं व पटाखे-फुलझड़ियाँ छुड़ाते हैं।

4. लक्ष्मी देवी की पूजा की जाती है।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. सुख और समृद्धि 2. फल और फूल 3. खील और बताशे 4. रंगाई और पुताई 5. रात और दिन 6. माता और पिता

(ग) 1. दीये 2. मोमबत्ती 3. मिठाइयाँ 4. बताशा

आओ सीखे : स्वयं कीजिए

पाठ-12 : उचित न्याय

(क) 1. प्रेमपूर्वक 2. चिट्ठू 3. धूर्तता 4. बाल्टी

(ख) 1. × 2. ✓ 3. × 4. × 5. ✓

(ग) 1. स 2. अ 3. ब

(घ) 1. उसी धूर्तता के कारण 2. खेत के सूखने की। 3. सौ रुपये देने की बात पर। 4. कि तुमने तालाब के पैसे दिये हैं, पानी के नहीं। 5. अब सियार सारे जंगल में एक वर्ष तक बिना वेतन के झाड़ू लगाएगा।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

आओ सीखे : स्वयं कीजिए

पाठ-13 : सागर तट की रौनक

(क) 1. × 2. × 3. ✓ 4. ✓ 5. ×

(ख)1.(अ)2.(ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(ग) 1. नाव चलाते माझी ऊँचे स्वर में गाते हैं।

2. चिंकी सीप ढूँढ़ने व उसका भाई पुराने शंख ढूँढ़ने जाते हैं। 3. वे नाव पर लाल वस्त्र बाँधकर खतरे का संकेत दे रहे हैं। 4. तूफान आने वाला है और उन्हें घर जाने के लिए लंबी दूरी तय करनी है। जहाँ उनकी मम्मी राह देखती होंगी।

भाषा-बोध

(क) 1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3.परिमाणवाचक विशेषण 4. संकेतवाचक विशेषण 5. गुणवाचक विशेषण 6. गुणवाचक विशेषण

(ख) सागर, तट, नाव, माझी, सखा, बालक, वस्त्र, बाँस, खतरा **(ग) गहरा** सागर, **घना** वन, **तेज** आँधी, **ऊँचे** पर्वत, **पुराने** शंख, **नया** वस्त्र।

(घ) 1. निर्बल 2. सहपाठी।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-14 : प्रशांत की बहादुरी

(क) 1. धीमे 2. शहर 3. दरवाजा 4. पुलिस।

(ख) 1. × 2. × 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (अ)

(घ) 1. रात के समय छत पर किसी के कूदने की आहट पाकर प्रशांत की आँख खुल गई।

2. छत पर किसी के चलने की आवाज पर प्रशांत ने जाना कि डाकू आए हैं। 3. पिताजी की धोतियों में गाँठ लगाकर उसके छोर को रेलिंग से बाँधकर उसके सहारे वह नीचे गली में उतर आया।

4. प्रशांत की सूझ-बूझ से डाकू पकड़े गए।

भाषा-बोध

(क) चिकना, पतला, सुंदर, महान।

(ख) 1. पुरानी 2. सुंदर 3. असंख्य 4. काली 5.

कायर

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-15 : सच्चा मित्र

(क) 1. दो 2. सहायता 3. पापा 4. पिताजी 5. संकट। **(ख)** 1. × 2. × 3. ✓ 4. × 5. ✓

(ग) 1.(ब) 2.(स) 3.(ब) 4. (स)

(घ) 1. वह बहुत दयावान था और परोपकार करना कर्तव्य समझता था। 2. वह उन्हें बचाकर रख लेता तथा उसने कभी वृद्ध भिखारियों को भोजन खिला देता तो कभी किसी साथी की आर्थिक सहायता कर देता। 3. मैं जानता हूँ कि तुम फिजूलखर्ची नहीं करोगे। फिर भी यदि मुझे पता चल जाता तो मैं ठीक प्रकार से तुम्हारी मदद करता।

4. समीर ने आशीष को पुस्तकें खरीदकर दीं।

(ङ) 1. ईमानदार बालक 2. वृद्ध भिखारी 3. आर्थिक सहायता 4. फिजूल खर्च।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 2. गाड़ीवान 3. कोचवान 4. ज्ञानवान।

(ग) नौकर, कौआ, स्कूटर, मेज, कुर्सी, चश्मा।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-16 : चाँद का कुरता

(क) 1. ऊन का। 2. ऊनी। 3. ऊनी झिंगोले की।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. ✓

(ग) 1.(स) 2.(स) 3.(अ) 4.(ब)

(घ) 1. एक दिन चाँद अपनी माता से ऊन का मोटा झिंगोला सिलवाने की हठ कर बैठा।

2. सन-सन चलती हवा में ठिठुर-ठिठुर कर यात्रा पूरी करना बताया। 3. माँ ने कहा कि वह चाँद को कभी एक नाप में नहीं देखती है। 4. कभी एक अंगुला भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा तथा किसी दिन बड़ा हो जाता है और किसी दिन छोटा।

भाषा-बोध

(क) 1. आना-जाना 2. उठना-बैठना
3. उलटा-सीधा 4. बड़ा-छोटा
5. खरा-खोटा 6. पतला-मोटा

(ख) 1. मीठी **जलेबी** 2. ठंडी **रात** 3. खट्टी-मीठी **यादें** 4. काले **बादल** 5. नन्हीं **बूँदें**, 6. खोटा **सिक्का**,

(ग) 1. चाँद ऊनी झिंगोला सिलवाने की हठ कर बैठा। 2. कुछ लोग जादू-टोना करके अन्य लोगों में भय पैदा करते हैं। 3. चाँद का एक नाप न होने के कारण झिंगोला नहीं सिलाया जा सका।

आओं सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-17 : कुसंगति का परिणाम

(क) 1. किसान 2. नदी पार 3. सियार 4. सियार

(ख) 1. ✓ 2. × 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. अ 2. ब 3. ब 4. स

(घ) 1. वह दिन भर ऊँट से काम लेता, परन्तु चारा पानी न देता। 2. गाँव के बाहर पेड़ों की पत्तियाँ खा कर। 3. वह ऊँट पर सवारी करके नदी सरलता से पार करना चाहता था। 4. नदी पार तरबूज़ और खरबूज़े के खेत में। 5. सियार के कारण

(ङ) 1. द 2. य 3. अ 4. ब 5. स

(भाषा-बोध): (क) 2. बनावट 3. जल्दी 4. दोस्ती 5. नसीब 6. सूचना 7. कमर 8. आवाज़

(ख) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

अराध्या हिंदी-4

पाठ-1 : कुछ काम करो

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (ब)

(ग) 1. श्रम करने से ही तन की उपयुक्तता सिद्ध होती है। 2. प्रभु ने मनुष्य को कर्म करने के लिए हाथ और विचारने के लिए मस्तिष्क दिया है। इनके द्वारा कर्म करके वह वांछित वस्तु प्राप्त कर सकता है।

3. मनुष्य रूप में सार्थक कर्म करते हुए जीवन बिताना चाहिए। 4. कवि मनुष्य को कविता के माध्यम से कर्मशील बने रहने का संदेश देना चाहता है।

भाषा-बोध

(क) 1. स्त्रियाँ 2. बच्चा 3. लताएँ 4. कुत्ता 5. लड़कियाँ **(ख)** 1. शिक्षक (पुल्लिंग) 2. नायक (पुल्लिंग) 3. देव (पुल्लिंग) 4. नर (पुल्लिंग)
5. महोदय (पुल्लिंग) 6. पुत्र (पुल्लिंग)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-2 : भीड़ ही भीड़

(क) 1. छत्ता 2. दंग 3. टिकट 4. रेलवे 5. दो।

(ख) 1. ✓ 2. × 3. ✓ 4. × 5. ×

(ग) 1.(स) 2.(स) 3.(अ) 4.(ब) 5.(स)

(घ) 1. किसी भी गाड़ी में स्थान नहीं था।

पूछने पर मालूम हुआ कि भीड़ ही इतनी रहती है कि एक माह पहले ही सभी सीटें आरक्षित हो जाती हैं।

2. भाई साहब, भीड़ है तो ऐसा ही होगा। यह तो रोज ही होती है। 3. दिल्ली तक का रास्ता क्या मैं जीवित ही पूरा कर पाऊँगा - मुझे ऐसा नहीं लगता था।
4. लेखक को लगा कि जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश न लगा तो इस संसार में दुखों के अलावा कुछ न मिलेगा। इस पर अंकुश तो लगाना ही होगा।

भाषा-बोध

(क) 1. शब्द 2. एकार्थी शब्द 3. विपरीतार्थी

(ख) 1. भाई साहब (पुल्लिंग) 2. बेटा (पुल्लिंग) 3. मामा (पुल्लिंग) 4. बेटी (स्त्रीलिंग) 5. मामी (स्त्रीलिंग) 6. मुन्नू (पुल्लिंग)।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-3 : स्वस्थ शरीर

(क) 1. शरीर 2. आहार 3. नाक 4. जीवन 5. ताप।

(ख) 1. × 2. × 3. ✓ 4. × 5. ✓

(ग) 1.(अ) 2.(स) 3.(ब) 4.(स)

(घ) 1. स्वस्थ रहने पर ही हम खेल-कूद सकते हैं, पढ-लिख सकते हैं, अच्छी चीजें खा सकते हैं तथा प्रकृति के अद्‌भुत उपहारों का आनंद ले सकते हैं। 2. बीमार व्यक्ति न अच्छा खा-पी सकता है, न सुंदर कपड़े पहन सकता है, न मनोरंजन कर सकता है, न सैर-सपाटा कर सकता है और न ही पढ़ाई-लिखाई कर सकता है। 3. आहार से तात्पर्य उन वस्तुओं से है जो हम भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं। विहार से तात्पर्य है समय पालन, श्रम और व्यायाम से। 4. साँस लेते समय शरीर के भीतर जाने वाली वायु जितनीं शुद्ध तथा अधिक होगी, रक्त उतना ही शुद्ध होगा।
5. कल-कारखानों, घनी बस्तियों, बंद कमरों तथा गंदगी वाले स्थानों पर अशुद्ध वायु पाई जाती है।

भाषा-बोध

(क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है, जैसे - मैं, वह, तुम, वे आदि।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. धन = रुपया-पैसा 2. शरीर = तन 3. आनंद = सुख 4. सदा = हमेशा 5. आवश्यक = जरूरी 6. वायु = हवा

(घ) 1. नियमित - अनियमित 2. सुख - दुख 3. विश्राम - क्रियाशील 4. पुष्ट - अपुष्ट 5. स्वस्थ - अस्वस्थ 6. आवश्यक - अनावश्यक

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-4 : कोयल (कविता)

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स)

(ग) 1. कोयल का रंगरूप काला व वाणी मीठी है।
2. बहुत दिनों बाद कोयल के दिखाई देने पर बालक कोयल से प्रश्न करता है कि वो क्या संदेशा लाई है।
3. कोयल के कुहुकुने पर बालक कोयल से पूछता है कि वह किसे बुला रही है और क्या वह प्यासी धरती को देखकर बादलों से पानी माँग रही है।
4. कोयल की मीठी बोली के कारण सभी उसे पसंद करते हैं।
5. कोयल बहुत ही अच्छी है, और हमेशा अपनी माँ की बात मानती है, इसलिए बालक के अनुसार कोयल चिड़ियों की रानी बन सकी है।

भाषा-बोध

(क) 1. दिन - रात 2. मधुर - कटु, 3. भला - बुरा 4. विशेष - सामान्य 5. मीठी - कड़वी 6. गुण - दोष। **(ख)** 1. कोयल - कोकिल, श्यामा, पिक; 2. मेघ - बादल, नीरद, जलद; 3. पानी - जल, नीर, वारि; 4.माँ - जननी, माता, अंबा;

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-5 : सच्चे हिरन

(क) 1. थका 2. प्राण 3. शिकार 4. अलग 5. धनुष

(ख) 1. × 2. × 3. × 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1.(ब) 2.(स) 3.(स) 4.(ब) 5.(स)

(घ) 1. शिकार पाने की आस में शिकारी तालाब के निकट पेड़ पर बैठ गया था।
2. भाई शिकारी! मैं जानती हूँ कि अब मैं भागकर तुम्हारे बाण से बच नहीं सकती; किन्तु तुम मुझ पर दया करो। मुझे घर जाकर अपने भूखे बच्चों को दूध पिला आने दो। मैं उन बच्चों को अपनी सहेली हिरनी को सौंपकर तुम्हारे पास लौट आऊँगी।
3. हिरन बोला-अपनी हिरनी और बच्चों से अलग हुए मुझे देर हो गई। उनसे मिल लूँ और उन्हें समझा दूँ, तब मैं तुम्हारे पास अवश्य आऊँगा। इस समय दया करके तुम मुझे चला जाने दो।
4. भाई शिकारी! अब हम लोग आ गए हैं। तुम अब हमें अपने बाणों से मारकर हमारे मांस से अपनी क्षुधा तृप्त कर लो।

भाषा-बोध

(क) 1. प्रिया 2. मोहन

(ख) 1. सुंदर 2. बुद्धिमान 3. ऊँचा 4. कच्चा
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-6 : गुणकारी नीम

(क) 1. कड़वा 2. नीरोगी 3. खा 4. शीत 5. निम्बौली **(ख)** 1. ✓2. ✓ 3. × 4. ✓ 5. ✓
(ग) 1.(ब) 2.(अ) 3.(स) 4. (स)
(घ) 1. नीम की पत्तियों के किनारे दोनों तरफ से कटे हुए होते हैं। 2. नीम की कोमल पत्तियों को खा लेने से आँखें नहीं दुखने पातीं। नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर नहाने से त्वचा संबंधी रोगों में लाभ होता है अथवा वे नहीं होते। नीम की सूखी पत्तियों को किताबों, कपड़ों व अनाज में रखने से उनमें कीड़े नहीं हो पाते।
3. निम्बौलियाँ खाने से पेट की बीमारियाँ दूर होती हैं।
4. इसे साबुन बनाने के उपयोग में लाया जाता है। नीम के तेल से बना साबुन फोड़े-फुन्सियों को ठीक कर देता है। 5. नीम के प्रत्येक भाग को औषधि के रूप में किसी-न-किसी प्रकार से काम में लाया जाता है। इसीलिए नीम के पेड़ को 'बीमारी भगाने वाला पेड़' भी कहते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. नीम का स्वाद **कड़वा** होता है।
2. नीम का पेड़ आम के पेड़ के समान **ऊँचा** होता है।
3. निम्बौलियों का रंग **हरा** होता है।
(ख) 1. नीम (पुल्लिंग) 2. पत्ती (स्त्रीलिंग) 3. ऋतु (स्त्रीलिंग) 4. धुआँ (पुल्लिंग) 5. पेड़ (पुल्लिंग) 6. मच्छर (पुल्लिंग)
(ग) 1. सुगंध (दुर्गंध) 2. शीत (उष्ण) 3. नीरोगी (रोगी) 4. स्वस्थ (अस्वस्थ) 5. गुणकारी (गुणहीन) 6. कड़वी (मीठी)
(घ) 1. स्वस्थ 2. अमर 3. साकार 4. निराकार।
(ङ) 1. आकाश, पृथ्वी, कवि, जल
(च) 1. पत्तियाँ 2. निम्बौलियाँ 3. किरणें 4. गुठलियाँ 5. टहनियाँ 6. पुस्तकें 7. जड़ें 8. फोड़े
(छ) 1. यह 2. तुम 3. कुछ
(ज) 1. × 2. ✓ 3. ✓
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-7 : फूल और काँटा

(क) स्वयं कीजिए।
(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. × 5. ✓
(ग) 1. हैं जनम लेते जगह में एक ही।
2. मेह उन पर है बरसता एक-सा।
3. छेद कर काँटा किसी की अँगुलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर वसन।।
4. है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।
(घ) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ)
(ङ) 1. दोनों एक ही पौधे में जन्म लेते हैं।
2. पोषण के लिए दोनों को समान रूप, पानी, हवा, मिट्टी तथा अन्य अवसर प्राप्त होते हैं।
3. फूल अपने रंग-रूप व सुगंध से प्राणी को प्रसन्न कर देता है।
4. काँटे का व्यवहार सदा ही चुभन देने का होता है।
5. फूल अपनी सुगंध व रंग-रूप से देवता के शीश को सुशोभित करता है। परंतु काँटा अपनी कटुता व चुभन की प्रकृति के कारण न केवल अत्यंत तुच्छ वरन् अनावश्यक वस्तु समझा जाता है। इसलिए हमें फूल से ही गुणों को अपनाना चाहिए।

भाषा-बोध

(क) 1. आँखें - नेत्र, दृग, चक्षु
2. चाँद - शशि, राकेश, चंद्रमा
3. रात - निशा, रजनी, निशि
(ख) 1. पौधा - पौधे 2. तितली - तितलियाँ
3.आँख - आखें 4. काँटा - काँटे
5. अँगुली - अँगुलियाँ 6. कली - कलियाँ
(ग) स्वयं कीजिए।
(घ) 1. पुरूषवाचक सर्वनाम 2. निजवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. पुरूषवाचक सर्वनाम
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-8 : वृक्षों की बातें

(क) 1. सुख 2. जीवन 3. उपकार 4. भाप 5. सूखा। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. ✓ 5. ×
(ग) 1.(ब) 2.(स) 3.(अ) 4.(ब)
(घ) 1. वृक्षों की बस्ती में साल, सागौन, देवदारु आदि के वृक्ष थे। 2. आठ-दस आदमी सवेरे ही कुल्हाड़ी लेकर वृक्षों के अंगों पर आघात करते, फिर उन्हें जड़ों से काट डालते। इस प्रकार उनका जीवन खतरे में पड़ गया था। 3. जिस देश के नागरिक ईमानदारी से काम नहीं करते, अपने स्वार्थ को देशहित से अधिक महत्त्व देते हैं, वह देश अवनति के गड्ढे में गिरता चला जाता है।

4. वृक्ष दूषित वायु (कार्बन डाइऑक्साइड) को अपने भीतर खींच लेते हैं और बदले में शुद्ध ऑक्सीजन देते हैं। सूरज की रोशनी द्वारा अपने भीतर विभिन्न प्रकार के खाद्य-पदार्थों की रचना करते हैं जो मनुष्य के काम आते हैं। प्रकाश संश्लेषण क्रिया के जादू से ही मनुष्यों को अन्न, दाल, फल, चीनी आदि खाद्य पदार्थ मिलते हैं।

5. साल ने बताया की वृक्षों की पत्तियों से सूरज की किरणें नमी खींचकर उसे भाप में बदल देती हैं और भाप बादल बनकर वर्षा करती है।

भाषा-बोध

(क) 1. (स) 2. (द) 3. ब 4. अ

(ख) 1. **सर्वनाम** - मैं, वह, वे

2. **विशेषण** - नन्हा, आठ-दस, सारे

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-9 : बेपेंदी का लोटा

(क) 1. चाटुकारी 2. हाथी 3. सवारी 4. चींटी, तट 5. घोड़े **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. जिन लोगों का कोई सिद्धांत नहीं होता, वे पल-पल बदलते रहते हैं। ऐसे लोगों को बेपेंदी का लोटा कहा जाता है। 2. सारा जीवन यूँ ही व्यतीत हो गया, अब कुछ धर्म अर्जित कर लिया जाए। इसके लिए गंगा स्नान उपयुक्त रहेगा। 3. चींटी की चाल से चलता हाथी महीनों में गंगा तट पहुँचेगा। इसका तात्पर्य था कि हाथी सुस्त चाल के कारण ठीक सवारी नहीं रहेगी।

4. राजा ने कहा कि ऊँट चलते हुए इतना हिलता है कि कमर टूट जाएगी और कूबड़ निकल आएगा।

5. घोड़े पर कायदे से बैठना पड़ेगा। धूप और धूल में कायदे से बैठकर घंटों यात्रा करना संभव नहीं रहेगा।

भाषा-बोध

(क) 1. राजा (रानी) 2. हाथी (हथिनी)
3. लुटिया (लोटा) 4. घोड़ा (घोड़ी)
5. ऊँट (ऊँटनी) 6. श्रीमान (श्रीमति)
7. स्त्री (पुरूष) 8. बंदर (बंदरिया)

(ख) 1. विशेषण (थोड़ी) 2. सर्वनाम (मैं)
3. विशेषण (सुस्त) 4. सर्वनाम (वह)

(ग) 1. पाप 2. शोक 3. निंदा 4. अशुभ।

(घ) 1. मनुष्यता 2. मानवता 3. देवता 4. देवत्व 5. पढ़ाई।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-10 : एक पत्र : पुत्री के नाम

(क) 1. बर्बरता 2. ज्यादा 3. लड़ाई 4. आसान 5. अच्छा। **(ख)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1.(ब) 2.(स) 3.(ब) 4.(अ) 5.(स)

(घ) 1. सबके हित में अपना हित देखना और सबके प्रति अनुकूल व्यवहार रखने की स्थिति सभ्यता है। 2. व्यक्ति के पशुवत व्यवहार को बर्बरता कहते हैं। 3. यूरोप के बहुत-से आदमी स्वयं को सभ्य और एशियावालों को जंगली समझते हैं।

4. इस लड़ाई में लाखों आदमी मारे गए और हजारों के अंगभंग हो गए। कोई अंधा हो गया, कोई लूला, कोई लँगड़ा। 5. भला आदमी, जो स्वार्थी नहीं है और सबकी भलाई के लिए हित दूसरों के साथ मिलकर काम करता है, सभ्यता की बड़ी पहचान है।

भाषा-बोध

(क) 1. यूरोपवाला 2. अफ्रीकावाला
3. एशियावाला 4. टोपीवाला
5. ठेलेवाला 6. गाड़ीवाला

(ख) 1. बर्बरता 2. राष्ट्रीयता 3. स्वच्छता 4. सभ्यता 5. उदारता 6. मूर्खता

(ग) 1. वे समझते हैं कि हमीं सभ्य है और एशियावाले जंगली हैं। 2. अंग्रेज जर्मनी वालों के खून के प्यासे थे और जर्मनी अंग्रेजों के खून के प्यासे थे।

आओ सीखें :स्वयं कीजिए।

पाठ-11 : भक्ति-नीति माधुरी

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1.(स) 2.(ब) 3.(स) 4.(ब)

(घ) 1. कही जाने वाली बात को उचित-अनुचित का विचार करके बोलना चाहिए। 2.जीवन पल-पल बीतता है और प्रत्येक पल अनिश्चित होता है। अनिश्चितता के ऊपर कार्य टालना ठीक नहीं क्योंकि विलंब होने पर उसमें रुकावटे भी आती हैं।

3. जिस प्रकार वृक्ष और नदियाँ परोपकार करते हैं, उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति परोपकार के लिए ही जन्म लेते हैं। 4. निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख भी ज्ञानवान हो जाता है। 5. उत्तम प्रकृति वालों पर किसी भी बुरी बात का प्रभाव नहीं पड़ता।

भाषा-बोध

(क) 1. **हलधर** (पुल्लिंग) 2. **चंदन** (पुल्लिंग) 3. **मैया** (स्त्रीलिंग) 4. **नदी** (स्त्रीलिंग)

5. **भैया** (पुल्लिंग) 6. **रहीम** (पुल्लिंग)।

(ख) 1. **विषैला** सर्प 2. **बलिष्ठ** शरीर 3. **ऊँचे** वृक्ष, वाक्य स्वयं बनाएँ

(ग) 1. कुसंगति – सुसंगति 2. विष – अमृत
3. अंधकार – प्रकाश 4. शीतल – उष्ण
5. जीवन – मृत्यु 6. उत्तम – अधम।

(घ) 1. **भुजंग** – साँप, सर्प, विषधर।
2. **जल** – नीर, वारि, पानी।
3. **वृक्ष** – तरु, पेड़, पादप।
4. **कृष्ण** – मोहन, केशव, कन्हैया।

(ङ) 1. निर्लज्ज 2. नियमानुसार 3. अनियमित
4. दुश्चरित्र 5. मंदबुद्धि 6. परोपकारी।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-12 : होली है भाई!

(क) 1. सुबह 2. मम्मी 3. मम्मी 4. पीठ

(ख) 1. × 2. ✓ 3. ✓ 4. ×

(ग) 1. ब 2. स 3. अ 4. स

(घ) 1. क्योंकि उसकी मम्मी रंग लाने के लिये पैसे नहीं दे रही थीं। 2. क्योंकि बाजार के रंग केमिकल युक्त होते हैं। 3. पीयूष के चाचा 4. पीयूष और रचना 5. प्राकृतिक व हानिरहित

भाषा-बोध

(क) 2. भलाई 3. ऊँचाई 4. चौड़ाई 5. लंबाई 6. चतुराई **(ख)** 2. हँसकर 3. खेलकर 4. पढ़कर 5. सुनकर 6. सोकर 7. बोलकर 8. जागकर

आओ सीखें : स्वयं कीजिए

पाठ-13 : अंधेर नगरी

(क) 1. पश्चिम 2. दीवार 3. कारीगर 4. गड़रिए 5. गुरुजी **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. × 5. ×

(ग) 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब)

(घ) 1. नगरी में महत्त्वहीन व महत्त्वपूर्ण गुणों व अवगुणों, सभी को समान रूप से देखा-माना जाता है। यह अनीति की नगरी है। इसलिए इसे अंधेर नगरी नाम दिया गया है। 2. जिस नगरी में अनीति का बोलबाला हो, मूर्ख और अन्यायी लोग रहते हों, उसे अंधेरी नगरी कहा जाता है। 3. जहाँ मिठाई व सब्जी समान दर पर मिलते हैं, गलती किसी की और दंड किसी को मिलता हो, ये सब दर्शाते हैं कि नगर में अनीति का बोलबाला है। इस प्रकार के अनेक लक्षण नगर को अनीति की नगरी दर्शाते हैं।

4. महंत जानते थे कि यह अनीति की नगरी है, यहाँ रहने से हानि होने की संभावना है। अत: वे अंधेर नगरी छोड़कर चले गए थे। 5. शिष्य को अंधेरी नगरी में भिक्षा और भोजन भरपूर मिले, इसलिए उसने वहीं रह जाने का निर्णय किया।

भाषा-बोध

(क) 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन
4. बहुवचन 5. एकवचन 6. बहुवचन
7. एकवचन 8. एकवचन।

(ख) 1. बकरी (बकरा) 2. गाय (बैल)
3. नारी (नर) 4. नौकरानी (नौकर)
5. स्त्री (पुरुष) 6. ब्राह्मणी (ब्राह्मण)
7. बच्ची (बच्चा) 8. रानी (राजा)

(ग) 1. सुंदर नगरी 2. मोटा आदमी 3. तीन सेर मिठाई 4. भारी गठरी 5. बड़ी भेड़।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-14 : स्वच्छता का महत्त्व

(क) 1. स्वच्छता 2. स्वच्छ 3. कूड़ेदान 4. मक्खी- मच्छर 5. रोग।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. ✓ 5. ×

(ग) 1.(स) 2.(अ) 3.(स) 4.(स) 5.(स)

(घ) 1. कूड़ेदान के बाहर कूड़ा फैला हुआ था। वहाँ मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। उसके चारों ओर गंदगी फैली हुई थी। सड़क के दोनों ओर बहने वाली नालियों में कूड़े के कारण पानी रुका हुआ था जो दुर्गंध उत्पन्न कर रहा था।

2. सलिल, तुम्हारे मुहल्ले में इतनी गंदगी क्यों है? क्या नगरपालिका इसे साफ नहीं करती ?

3. रविवार के दिन सभी टोकरी व झाड़ू लेकर सलिल के मुहल्ले में आ गए। सड़क पर सफाई करके उन्होंने कूड़ा इकट्ठा किया, नालियों की सफाई की और पानी बहने का रास्ता बनाया। उसमें मक्खी-मच्छर मारने वाली दवा डाली।

4. कूड़ा कूड़ेदान में ही डालें, सड़क पर न फैलाएँ। कूड़ेदान का ढक्कन बंद रखें। इससे नगरपालिका को गंदगी-नियंत्रण में सहायता मिलती है।

भाषा-बोध

(क) देशज शब्द – चिड़िया, डिबिया, आटा, घोंसला

विदेशी शब्द – बटन, डॉक्टर, मकान, आदमी

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. गलियाँ 2. छिलके 3. मक्खियाँ 4. मुहल्ले

5. टोकरियाँ 6. नालियाँ। **(घ)** स्वयं कीजिए।
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-15 : ताजमहल

(क) 1. इमारतें 2. देशवासी 3. सामने 4. खुदा 5. मकबरा **(ख)** 1. × 2. × 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓
(ग) 1.(अ) 2.(ब) 3.(ब) 4.(ब) 5.(स)
(घ) 1. मलिका मुमताज महल की अंतिम इच्छा थी कि उसके मरने के बाद उसके नाम पर ऐसी यादगार इमारत बने, जिसे दुनिया के लोग हमेशा याद रखें। 2. ताजमहल के दोनों ओर लाल पत्थर की दो मस्जिदें बनी हैं तथा सामने एक छोटी-सी नहर है जिसमें फव्वारे चलते हैं। दाएँ-बाएँ हरे-हरे वृक्षों की पंक्तियों में रंग बिरंगे फूल खिले हैं। समीप ही दूर तक फैला हरा-भरा बाग है, जिसमें अनेक प्रकार के सुंदर छायादार वृक्ष लगे हैं।
3. ताजमहल संगमरमर से बना है। अपनी अद्‌भुत सुंदरता के कारण यह देश-विदेश के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।
4. ताजमहल वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है। यह प्रेम की अमर निशानी का प्रतीक है। आज भी यह संसार के महान आश्चर्यों में से एक माना जाता है।
भाषा-बोध
(क) स्वयं कीजिए।
(ख) 1. असंभव 2. दूर 3. प्रारंभिक 4. निराशा 5. अपरिचित 6. तुच्छ 7. नाशवान 8. उजाला
(ग) 1. आँख - नेत्र, चक्षु, अक्षि।
2. वृक्ष - पेड़, तरू, विटप।
3. रात - रात्री, निशा, रजनी।
(घ) आश्चर्य हरियाली वृक्ष पर्यटक दृश्य वास्तुकार साम्राज्य बीमार
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-16 : सर आइजक न्यूटन

(क) 1. सीधा-सादा 2. आकर्षित 3. गरीब 4. देहांत 5. नापा।
(ख) 1. ✓ 2. × 3. ✓ 4. ✓ 5. ×
(ग) 1.(ब)2.(स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)
(घ) 1. पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर आकर्षित करती है। पृथ्वी द्वारा आकर्षित करने वाला यह एक प्रकार का बल होता है जिसे गुरुत्वाकर्षण बल कहते हैं। इसी बल के कारण हाथ से जाने पर प्रत्येक वस्तु नीचे की ओर गिरती है। 2. न्यूटन सीधा-सादा, शर्मीला व कम बोलने वाला बालक था। हथौड़ी लेकर ठुक-ठुक करना, मिट्‌टी के घर बनाना तथा उल्टी-सीधी चीजें बनाना उसे भाता था।
3. वह गरीब परिवार में पैदा हुआ था। उसके जन्म से पहले ही उसके पिता चल बसे थे। माँ खेतों में काम करके उसका पालन करती थी। इस प्रकार परिवार कठिनाइयों में था परंतु बाद में उसकी माता ने एक पादरी से विवाह कर लिया था जिससे उनकी स्थिति में सुधार हुआ।
4. वह अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर पाने को सोचता रहता। इस हेतु व नए-नए प्रयोग करता।
5. एक दिन न्यूटन ने एक अद्‌भुत पतंग का निर्माण किया। कुछ कंडील बनाकर उनमें प्रकाश कर दिया और पतंग से बाँधकर उड़ाया। इस प्रकार सारे शहर में न्यूटन की धूम मच गई।
6. न्यूटन ने विज्ञान व गणित की अनेक गुत्थियों को सुलझाया। इस क्षेत्र में उनके अत्यधिक योगदान के कारण उन्हें विज्ञान जगत का पिता कहा जाता है।
भाषा-बोध
(क) 1. उसने एक घड़ी बनाई **जो** पानी से चलती थी। 2. वह पढ़ाई में लग गया **और** सदा प्रथम आने लगा। **(ख)** 1. विधिवाचक 2. प्रश्नवाचक 3. प्रश्नवाचक 4. विस्मयसूचक **(ग)** स्वयं कीजिए।
(घ) 1. बहुवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन 4. एकवचन
आओ सीखे : स्वयं कीजिए।

पाठ-17 : रबड़ और इसके उपयोग

(क) 1. रबड़ 2. जलवायु 3. लचीला 4. मलेशिया 5. तमिलनाडु। **(ख)** 1. × 2. × 3. ✓ 4. × 5.×
(ग) 1.(ब) 2.(स) 3.(स) 4.(अ) 5.(ब)
(घ) 1. इसका निर्माण एक प्रकार के वृक्षों से निकलने वाले दूध जैसे सफेद पदार्थ से होता है।
2. उसने अमेरिका के आदिवासी बालकों को वृक्ष की गोंद से बनी गेंद से खेलते देखा। वह गेंद बहुत उछलती थी। 3. हमारे देश के दक्षिण में केरल और तमिलनाडु आदि राज्यों में इसके वृक्ष लगाए जाते हैं।
4. 'बैंजीन' नामक द्रव में रबड़ को घोलकर 'रबर सोल्यूशन' बनाया जाता है। 5. रबड़ को अधिक

उपयोगी बनाने का श्रेय चार्ल्स गुडइयर को जाता है।

भाषा-बोध

(क) 1. सहपाठी 2. यात्री 3. दर्शक 4. दर्शनीय।

(ख) 2. ग्रह - आकाशीय पिंड, गृह - घर

3. हंस - एक पक्षी, हँस - हँसने की क्रिया

4. देव - देवता के लिए संबोधन रूप, दैव - भाग्य; देवता संबंधी, 5. पवन - वायु; पावन - पवित्र

6. चिता - शव को जलाने के लिए लकड़ियों का ढेर, चीता - एक जंगली पशु।

(ग) 1. खिलौने 2. गुब्बारे 3. जूते 4. साइकिलें।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-18 : नकली तेनालीराम

(क) 1. ऊपरी मन से 2. उदास 3. विनम्र 4. रिश्वतखोरी

(ख) 1. × 2. × 3. × 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. ब 2. स 3. ब 4. ब 5. अ

(घ) 1. राज्य की प्रजा और अधिकारी भ्रष्ट होते जा रहे थे इसी कारण से राजा उदास बैठे थे।

2. तेनालीराम के पास प्रत्येक प्रश्न का उत्तर खोजने की चाबी रूपी मस्तिष्क था। 3. सड़के नापने का। 4. लोगों के मकान सड़क चौड़ी होने के कारण न गिराये जायें इसलिए। 5. राजा ने देखा कि नकली तेनालीराम राज्य के अधिकारियों व मंत्रियों के साथ मिलकर रिश्वत से प्राप्त धन का बँटवारा कर रहा था।

भाषा-बोध

(क) 1. तेनालीराम 2. बालक 3. फल 4. आम 5. अधिकारी 6. औरत **(ख)** 2. रिश्वतखोर 3. झूठा 4. सत्यवादी **(ग)** 2. कृपालु 3. विनम्र 4. क्रोधी 5. भूखा 6. प्यासा **(घ)** 1. उदास 2. कायर 3. उत्तर 4. समाधान 5. सुखद

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

अराध्या हिंदी-5

पाठ-1 : समय बहुत ही मूल्यवान है

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. स 2. ब 3. अ 4. स **(ग)** 1. वह समय है जिसके समान कुछ भी मूल्यवान नहीं है। 2. जो सदा समय को खोता है, वही कर मल-मलकर पछताता है। 3. गाँधी जी को समय के एक क्षण की बरबादी बहुत खटकती थी। 4. महात्मा गाँधी की कमर में लटकी घड़ी से समय का पता चलता है जो कि उनके लिये बहुत मूल्यवान थी। 5. प्रस्तुत कविता में कवि समय के मूल्य को स्पष्ट करते हुए उसे व्यर्थ न खोने और उसका महत्व समझने का संकल्प करने के लिये कहता है।

भाषा-बोध

(क) 1. बिटिया 2. चुहिया 3. बुढ़िया 4. कुतिया 5. लुटिया 6. डिबिया

(ख) स्वयं कीजिए। **(ग)** स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-2 : हरियाली बचाओ

(क) 1. गली 2. माता-पिता 3. बाग 4. पेड़ 5. ठेकेदार

(ख) 1. ✓ 2. × 3. ✓ 4. × 5. ✓

(ग) 1. स 2. ब 3. ब 4. स 5. स

(घ) 1. स्वास्थ्य लाभ के लिये। 2. अनेक सड़े-हुए कूड़े के ट्रक बाग की सड़क पर खड़े थे। 3. उन्होंने 'नगर सेवा' नाम की संस्था के अध्यक्ष को फोन किया। 4. फोन करके 5. नगर सेवा अध्यक्ष ने नगरपालिका अध्यक्ष के विरुद्ध नारेबाजी की, जुलूस निकाला और नगरपालिका अध्यक्ष से शांतिपूर्ण ढ़ंग से बात करके समस्या का समाधान किया। 6. दादाजी के प्रयासों के कारण बाग की सड़कों से कूड़े के ट्रक हट गये थे। लोग वहाँ पुन: टहलने आने शुरू हो गये थे, ये देखकर दादाजी को बड़ा संतोष हुआ।

भाषा-बोध

(क) 1. पर 2. से 3. के लिए 4. पर 5. में

(ख) पुल्लिंग (1, 2, 4, 5, 7, 8) स्त्रीलिंग (3, 6)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए

पाठ-3 : चुन्नू के पापा

(क) 1. समय 2. हाथ 3. धरती

(ख) 1. × 2. × 3. ✓ **(ग)** 1. अ 2. स 3. स

(घ) 1. चुन्नू के पापा कुत्तों को रोटी खिलाने के लिये दरवाजे पर खड़े हो जाते हैं। 2. चुन्नू के पापा घर व समाज के प्रति दायित्व का निर्वहन करते हैं। 3. चुन्नू के पापा को लोग ऐसे व्यक्ति के रूप में जानते हैं, जो छिपकर लोगों व पशुओं की कठिनाइयों का पता लगाते हैं, और उनकी सहायता करने मे पीछे नही रहते।

भाषा-बोध

(क) 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग **(ख)** 1. बंजर उपजाऊ 2. भूखे 3. दो

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-4 : कठिन परीक्षा-1

(ख) 1. प्यास 2. प्रतीक्षा 3. वनवास 4. शाप 5. प्रतिज्ञाओं **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ)

(घ) 1. पांडव वनवास की अवधि में वन में भूखे-प्यासे बेहाल भटक रहे थे।

2. युधिष्ठिर ने नकुल से कहा, "नकुल, सामने से ऊँचे वृक्ष पर चढ़कर चारों ओर देखकर पता लगाओ कि क्या निकट कहीं पानी का स्रोत, तालाब या नदी है।" 3. वृक्ष पर चढ़े नकुल को थोड़ी दूरी पर जल पक्षी और जल में उगने वाली वनस्पति दिखाई दे रही थीं। 4. "रुक जाओ! माद्री पुत्र! यह सरोवर मेरा है। पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो, उसके पश्चात् जल ग्रहण करना।" 5. वे सभी चेतावनी पर ध्यान दिए बिना जल पीने को उद्यत हुए, परिणामस्वरूप बिना पिए ही मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़े।

6. युधिष्ठिर चिंतित हुए सोच रहे थे, "क्या वे किसी शाप के शिकार हो गए हैं या वे अभी भी जल की खोज में जंगल में भटक रहे हैं ? क्या वे मूर्च्छित हो गए हैं या मर गए हैं ? 7. युधिष्ठिर भाइयों की प्रतीक्षा छोड़ भाइयों की खोज में तालाब की ओर चल पड़े।

भाषा-बोध

(क) 1. नकुल 2. सहदेव, नकुल 3. युधिष्ठिर।

(ख) स्वयं कीजिए। **(ग)** 1. देशभक्त 2. वनवास 3. महात्मा 4. वनदेवी 5. विद्यालय 6. विद्यार्थी

(घ) 1. नकुल (दौड़ता है।)

2. उन्होंने सरोवर में अंजलि (डुबोई)

3. सहदेव ने जल (पी लिया।)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-5 : कठिन परीक्षा-II

(क) 1. साहस 2. मन 3. सुख 4. इच्छा 5. चेतना **(ख)** 1. × 2. ✓ 3. × 4. × 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स)

(घ) 1. युधिष्ठिर को यह समझने में एक क्षण भी न लगा कि ये शब्द किसी यक्ष के हो सकते हैं।

2. उन्हें उपाय सूझा कि यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए। इसी से उनके भाई पुनर्जीवित हो सकते हैं।

3. धर्म का पालन करने के कारण युधिष्ठिर ने नकुल को पुनर्जीवित करने को कहा। पाँचों पांडवों ने दो माताओं से जन्म लिया था। नकुल को माद्री ने जन्म दिया था जबकि युधिष्ठिर कुंती के पुत्र थे। इस प्रकार नकुल के पुनर्जीवित हो जाने से दोनों माताओं का एक-एक पुत्र जीवित रहने से न्याय के पलड़े बराबर हो जाते। 4. युधिष्ठिर की निष्पक्षता को देखकर यक्ष बहुत प्रसन्न हुआ।

5. सरोवर के स्वामी एक यक्ष थे। मृत्युलोक के स्वामी यमराज ने यक्ष रूप धारण किया हुआ था ताकि युधिष्ठिर से मिला जा सके और उनकी परीक्षा ली जा सके। प्रश्नों का उत्तर ने दे सकने की स्थिति में युधिष्ठिर की दशा अपने भाइयों के समान होती।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. मृत्यु के समय धर्म व्यक्ति के साथ जाता है।

2. सुख अच्छे आचरण का परिणाम है।

3. क्रोध को त्यागकर व्यक्ति धनवान बन जाता है।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-6 : छोटू, चाय ला!

(क) 1. सुखद 2. नींद 3. अशांत

(ख) 1. × 2. × 3. ✓ **(ग)** 1. ब 2. स 3. ब

(घ) 1. स्कूल न जाने पर पिताजी द्वारा चाँटा खाने के कारण छोटू ढ़ाबे पर चला आया था।

2. ढ़ाबे पर काम करते-करते थकावट के कारण हालत बहुत बुरी हो जाती थी। 3. बच्चों को स्कूल जाता देखकर उसे अपनी गलतियों पर रह-रहकर पछतावा हो रहा था। 4. छोटू ने सोचा कि मेरी माँ का मेरे बगैर रो-रोकर बुरा हाल हो गया होगा, छोटे भाई बहन कितना प्रेम करते थे, पिताजी भले ही कठोर स्वभाव के हैं फिर भी प्रेम तो करते ही हैं। इन्हीं विचारों ने छोटू को घर वापस लौटने के लिये विवश किया।

भाषा-बोध

(क) 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग 6. स्त्रीलिंग

(ख) 1. ब 2. स

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-7 : पहले तुम इंसान बनो (कविता)

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब)

(ग) 1. 'ऊँचे-नीचे कंटक वाले मार्ग' से अभिप्राय है जीवन में पग-पग पर सुख-दुःख बगैर संघर्ष का होना। 2. 'ऐसे तुम बलवान बनो' से अभिप्राय है कि जीवन-मार्ग में आने वाले संकटों का सामना करने

के लिए तन और मन से सुदृढ़ हों जिससे कठिनाई से पीछे हटना न पड़े। 3. लोग जात-पात और धर्मों में बँटे होते हैं? उन्हें इससे पूर्व स्वयं को मनुष्य के रूप में सिद्ध करना चाहिए। पहले व्यक्ति इंसान बने, उसके बाद जाति और धर्म के रूप में सोचे। 4. जो जग में न्यारे काम करता है, वही यश को प्राप्त होता है। ऐसे यशस्वी लोगों से ही देश का नाम ऊँचा होता है। अत: देश का नाम ऊँचा करने के लिए जग से न्यारे, विशेषता से परिपूर्ण कार्य करने होंगे। 5. विचारवान ही अपने कर्तव्य का पालन कर पाते हैं अन्यथा लोग छल और लालच के वशीभूत कार्य करते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. खेल रहा है। - अकर्मक क्रिया
2. बाँसुरी बजाता है - सकर्मक क्रिया
3. हिरन दौड़ता है - अकर्मक क्रिया

(ख) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-8 : अनचाहे मेहमान

(क) 1. सायं 2. मम्मी 3. चूहेदान

(ख) 1. × 2. × 3. ✓ **(ग)** 1. अ 2. स 3. ब

(घ) 1. वर्षा रुकने पर राजू आँगन में बिछी चारपाई पर लेट गया। 2. टिड्डियाँ भूमि के एक छेद से निकली थी। 3. चमगादड़ टिड्डियों के ऊपर मंड़रा रहे थे। 4. चूहे ने देवताओं की तस्वीरें, शिवलिंग लुढ़का दिया व गणेश जी को अर्पित अक्षत भी गिरा दिया। 5. राजू के घर में खटमलों ने चारपाइयों में व कॉकरोचों ने गुप्त जगह बना ली थी।

भाषा-बोध

(क) 1. राजू, चारपाई 2. रामू, चाय

(ख) 1. चुहिया चूहेदान में आ गई। 2. मुर्गा दाना चुग रहा था। 3. मोरनी नाच रही थी।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-9 : गायों की गोष्ठी

(क) 1. उदास 2. खाया 3. आती

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(घ) 1. बूढ़ी होने के कारण सोना गाय दूध न दे पाती थी, जिस कारण उसका मालिक अब उसे उपयोगी न मानता था। इस कारण सोना गाय को डर था कि मालिक उसे कसाई को न दे दे।
2. सोना गाय की पीड़ा सुनकर काली गाय ने कहा कि ये मनुष्य बड़े ही स्वार्थी होते हैं। उसका मानना था कि सोना गाय के मालिक के बच्चे उसका दूध पीकर पले-बढ़े हैं परंतु उसी पर वे अत्याचार करते हैं।
3. श्वेता गाय के अनुसार हजारों वर्ष पहले भारतवासी गायों को माँ कहते थे तथा माँ के समान पूजा करते थे। बैल और बछड़ों पर सारी अर्थव्यवस्था आधारित थी। गौ-पालन और कृषि ही उनकी जीविका का प्रमुख साधन था।
4. नंदा ने कहा कि पहले सप्ताह वह बीमार पड़ गई और छह दिन तक कुछ न खाया। मालिक ने डॉक्टर नहीं बुलवाया, बल्कि स्वयं ही जड़ी-बूटी लाकर देता था जबकि उसके घर में कोई बीमार पड़ता है तो डॉक्टर को बुलवाते व दवा लाकर देते हैं।
5. आभा ने मनुष्य की नृशंसता बताते हुए कहा कि वे उसके नन्हें बछड़े की खाल से पर्स और सैंडिल आदि फैशनेबल चीजें बनाते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. गाय = स्त्रीलिंग 2. ग्वाला = पुल्लिंग 3. राक्षस = पुल्लिंग 4. बाँसुरी = स्त्रीलिंग।

(ख) 1. प्रसन्नता (प्रसन्न) 2. नृशंसता (नृशंस) 3 सरलता (सरल) 4. दुख (दुखी)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-10 : दिल्ली की सैर

(क) 1. भोजन 2. लालकिला 3. चाँदनी चौक 4. कुतुबमीनार 5. संसद भवन

(ख) 1. × 2. ✓ 3. × 4. × 5. ×

(ग) 1.(स) 2.(ब) 3.(स) 4.(ब) 5.(स)

(घ) 1. प्रस्तुत पत्र किसी पत्र का उत्तर है जो चिन्मय ने सीतापुर से अपने मित्र को लिखा है।
2. दिल्ली देखने पंद्रह विद्यार्थियों का समूह गया था। उन्होंने लाल किला, चिड़ियाघर, बिड़ला मंदिर, पुराना किला, हुमांयूँ का मकबरा, कुतुबमीनार, जामा मस्जिद, संसद भवन राष्ट्रपति भवन, उच्चतम न्यायालय आदि भवन देखे। 3. दिल्ली यात्रा के दौरान विद्यार्थी बिड़ला मंदिर में ठहरे व छह दिन दिल्ली में रहे। 4. व 5 (स्वयं कीजिए)

भाषा-बोध

(क) 1. मूलावस्था 2. उत्तमावस्था 3. उत्तरावस्था

(ख) 1. किला (पुल्लिंग) 2. मामा (पुल्लिंग)
3. बोरा (पुल्लिंग) 4. चाचा (पुल्लिंग)

5. लुटिया (स्त्रीलिंग) 6. साड़ी (स्त्रीलिंग)
7. चुहिया (स्त्रीलिंग) 8. माता (स्त्रीलिंग)
(ग) 1. सहपाठिनी 2. लेखिका 3. धोबिन 4. शिक्षिका 5. बाघिन 6. अध्यापिका।
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-11 : पक्षी जीवन

(क) 1. दाने-दुनके 2. सेता 3. मुँह
(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓
(ग) 1.(स) 2.(अ) 3.(स)
(घ) 1. प्राचीन काल में नल के पास दमयंती का हंस के द्वारा संदेश भेजना तथा वर्तमान में छत पर बैठे कौए की काँव-काँव मानव और पक्षी के घनिष्ठ संबंधों की पुष्टि करते हैं। 2. कुछ पक्षी अपने घोंसले में परंतु अधिकतर पक्षी वृक्षों के झुरमुट या डाल पर बसेरा लेते हैं। यहाँ रहकर वे रात बिताते हैं। जल पक्षी जल में बसेरा लेते हैं। अधिकतर पक्षी अपने डैनों के परों में अपनी गरदन डालकर सोते हैं। सारस तो एक पाँव पर खड़े होकर शयन क्रिया कर लेता है। 3. खतरा जानकर पक्षी एक-दूसरे को अपनी विशेष आवाज में चेतावनी देते हैं। ऐसे में बच्चे जल्दी से लपककर अपनी माँ के पंखों के नीचे छिप जाते हैं। संतान की रक्षा के लिए वे शत्रुओं पर चोंच से प्रहार तक करते रहते हैं।
4. कीड़े-मकोड़ों का नाश करने में पक्षी हमारी बड़ी सहायता करते हैं। खेतों, जंगलों, फूलों और फलों के बाग-बगीचों का कीड़ों की सेनाएँ सफाया करने को उद्यत रहती है। ऐसे में पक्षी उनका सफाया करते हैं। इस प्रकार ये फसलों की रक्षा करते हैं। पक्षी पौ फटते ही खेतों और बागों में जा पहुँचते हैं और धूप निकलते-निकलते ऐसे कीड़ों का चट कर ड़ालते हैं।

भाषा-बोध

(क)1. मरियल 2. सड़ियल 3. बिकाऊ 4. कमाऊ
(ख) 1. हंस (पुल्लिंग) 2. चूहा (पुल्लिंग) 3. छिपकली (स्त्रीलिंग) 4. साँप (पुल्लिंग) 5. झरना (पुल्लिंग) 6. नदी (स्त्रीलिंग) 7. वाल्मीकि (पुल्लिंग) 8. दमयंती (स्त्रीलिंग)
(ग) 1. निश्चित संख्यावाचक 2. अनिश्चित संख्यावाचक 3. निश्चित संख्यावाचक
4. अनिश्चित संख्यावाचक
आओं सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-12 : सरिता (कविता)

(क) स्वयं कीजिए।
(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)
(ग) 1. हिमगिरि के हिम से अर्थात् बर्फीले पर्वतों से बहकर सरिता का जल आता है।
2. कवि ने सरिता के जल की तुलना दूध से की है।
3. सरिता का जल बहता हुआ मानो पृथ्वी का हृदय धो रहा होता है। 4. व्याकुल पथिक सरिता का शीतल जल पीकर शांति अनुभव करता है।

भाषा-बोध

(क) 1. कोमलता 2. शीतलता 3. निर्मलता 4. लघुता **(ख)** स्वयं कीजिए। **(ग)** स्वयं कीजिए।
आओं सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-13 : काकी

(क) 1. काकी 2. पतंग 3. राम
(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓
(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स)
(घ) 1. श्यामू की माँ की मृत्यु पर घर में कोहराम मचा हुआ था। 2. माँ के शव को श्मशान के लिए उठाने के समय श्यामू ने उपद्रव किया क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी माँ को इस प्रकार कहाँ ले जाया जा रहा है।
3. गुरुजनों ने उसे बहलाते हुए विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई हैं।
4. श्यामू ने एक पतंग राम के यहाँ ऊपर भेजने की सोची। उसका विचार था कि काकी इसे पकड़कर नीचे उसके पास चली आएगी।

भाषा-बोध

(क) 1. बहुत 2. बिल्कुल 3. ज्यादा 4. बहुत 5. अत्यंत **(ख)** 1. हटाया 2. चले गए 3. ले जाएँगे
आओं सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-14 : राजस्थान की सैर

(क) 1. पशुपालन 2. भेड़, ऊन 3. चुनरी
(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓
(ग) 1.(स) 2.(ब) 3.(स)
(घ) 1. (अ) राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। (ब) यह वीर राजपूतों की धरती हैं।
(स) आधुनिक राजस्थान का उदय 30 मार्च, 1949 को हुआ था। 2. ऐसा प्रदेश जहाँ वनस्पति और जल का अभाव पाया जाता है, मरुस्थल कहलाता है। यहाँ बहुत तेज हवाएँ चलती हैं जिस कारण रेत उड़ने से स्थान-स्थान पर बालू के टीले बन जाते हैं।

3. राजस्थान की जलवायु बड़ी कठोर है। यहाँ गर्मीयों में अधिक गर्मी तथा सर्दियों में अधिक सर्दी पड़ती है। गर्मी के मौसम में गर्म और धूल भरी हवाएँ चलती हैं। वर्षा कम होती है। गर्मियों में दिन काफी गर्म होता है जबकि रात में तापमान कम हो जाता है।

भाषा-बोध

(क) 1. वीरता 2. सुंदरता 3. विशालता 4. गर्मी

(ख) 1. वीर 2. बेटा 3. प्रशंसक 4. माली 5. क्षत्रिय 6. ग्वाला

(ग) 1. इसलिए 2. अत: 3. और 4. अरे

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-15 : पशुओं की महासभा

(क) 1. अभिनंदन 2. जल्लादों 3. बेहोशी 4. मनुष्य 5. बेघर **(ख)** 1. ✓ 2. × 3. ✓ 4. ×

(ग) 1. ब 2. स 3. ब 4. स

(घ) 1. शेर को एक छोटे से पिंजरे में रखा जाता, खाने के लिए थोड़ा सा माँस दिया जाता, और करतब सिखाने के हेतु घंटों पीटा जाता। 2. भालू को मनुष्य से यह शिकायत थी कि हम मनुष्य को किसी प्रकार की पीड़ा पहुँचाने उसके घर नहीं जाते, परन्तु वह वनों में आकर हम पर भाँति - भाँति के अत्याचार करता है। भालू ने कहा जब मैं छोटा था। एक मदारी मुझे पकड़कर ले गया था। ..... यातना से गुजरा। 3. सभी वनवासियों को पूर्ण रूप से सावधान रहना होगा। कहीं भी मनुष्य दिखाई दे, सभी शोर मचाकर जंगल सिर पर उठा लें और हमला करने के लिए दौड़ें। उन्हें जंगल छोड़ने पर मजबूर कर दें। 4. मनुष्य ने मेरे वंशजों ..... यातना झेले। 5. तोते ने कहा, मुझे लगता है ..... क्या करें?

भाषा-बोध

(क) 1. सरस 2. प्रहार 3. सजीव 4. प्रचार 5. सफल 6. प्रताप **(ख)** 1. भयानक 2. गहरा 3. मीठा 4. चालाक 5. मीठे 6. नुकीला

(ग) 1. ऊपरी 2. चलाऊ 3. ऊँचा 4. पिछला 5. लड़ाका 6. राष्ट्रीयता

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-16 : अश्वमेध का घोड़ा

(क) 1. वन-प्रांत 2. काठी 3. पत्र 4. वटवृक्ष।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. × 4. ✓

(ग) 1.(अ) 2.(स) 3.(स)

(घ) 1. लव-कुश श्रीराम और सीता जी के पुत्र थे। ये महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहते थे।

2. अश्वमेध एक प्रकार का यज्ञ है जिसे कोई चक्रवर्ती राजा ही कर सकता था। इस यज्ञ में एक घोड़े को भली प्रकार सजाकर सभी राज्यों में घुमाया जाता था। इसे अश्वमेध का घोड़ा कहा जाता था। जो राजा अपने राज्य की सीमा में इसे पकड़ लेता, उसे अश्व (घोड़े) की रक्षा करने वाली सेना से युद्ध करना पड़ता था। यह अश्वमेध का घोड़ा अयोध्यापति श्रीरामचंद्र का था। 3. अश्वमेध का घोड़ा वाल्मीकि के आश्रम में आ गया था। यह सुंदर सजा-धजा घोड़ा था जो लव-कुश के मन को भा गया था। इस कारण उन्होंने उसे पकड़ लिया था।

4. सीता जी द्वारा लव-कुश को यह बताए जाने पर कि श्रीराम उनके पिता हैं, उन्होंने बाण नहीं चलाया और उनके प्रति युद्ध करने पर उनसे क्षमा माँगी।

भाषा-बोध

(क) 1. ऋषिपुत्र = ऋषि + पुत्र = ऋषि का पुत्र

2. वटवृक्ष = वट + वृक्ष = वट का वृक्ष

3. रणक्षेत्र = रण + क्षेत्र = रण का क्षेत्र

4. अयोध्यापति = अयोध्या + पति = अयोध्या का पति (राजा) **(ख)** स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-17 : भक्ति-नीति माधुरी (दोहे)

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1.(ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ)

(ग) 1. गुरु भगवान से बड़ा होता है क्योंकि वही भगवान की प्राप्ति का उपाय बताता है।

2. सबके प्रति प्रेम का भाव अपनाने से मनुष्य के मन का पाप दूर हो सकता है। 3. ढाई अक्षर से बने प्रेम को जानकर ही व्यक्ति पंडित अथवा ज्ञानी हो सकता हैं। क्योंकि इसी के बल पर वह 'मनुष्यता' को सार्थक कर सकता है। 4. मनुष्य को सदा मधुर वाणी में बोलना चाहिए क्योंकि इसी से वह स्वयं प्रसन्न रहता है और दूसरों को प्रसन्न कर पाता है।

भाषा-बोध

(क) 1. (द) 2. (स) 3. (य) 4. ब 5. (अ)

(ख) 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग **(ग)** 1. गुणवाचक विशेषण 2. परिमाणवाचक विशेषण

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-18 : सादा जीवन, उच्च विचार

(क) 1. अनुभव 2. भोजन 3. कापी 4. गुण 5. हरिश्चंद्र **(ख)** 1. ✓ 2. × 3. × 4. ✓5. × **(ग)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर में हुआ था। 2. वे कुटुंबप्रेमी, सत्यप्रिय, शूर, उदार किन्तु क्रोधी थे। वे घूसखोरी से दूर भागते थे, इसलिए शुद्ध न्याय करते थे। उनकी शिक्षा मात्र अनुभव की थी परंतु व्यावहारिक ज्ञान इतने ऊँचे प्रकार था कि सूक्ष्म प्रश्नों को सुलझाने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती थी। धार्मिक शिक्षा नहीं के बराबर थी फिर भी धर्म का सहज ज्ञान रखते थे। उन्होंने द्रव्य एकत्र करने का लोभ कभी नहीं रखा। 3. माता साध्वी स्त्री थीं। पूजा-पाठ किए बिना कभी भोजन न करती थीं। वे सदैव मंदिर जातीं तथा कठिन व्रत शुरू कर उन्हें निर्विघ्न समाप्त करती। 4. वे शिक्षकों के प्रति विनयी थे। बड़ों के दोष देखने का अवगुण उनमें नहीं था, बल्कि यह जानते थे कि बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। 5. उन पर इसकी गहरी छाप पड़ी और मन में विचारने लगे कि उन्हें भी श्रवण कुमार के समान बनना चाहिए।

भाषा-बोध

(क) 1. सत्यवादी 2. घूसखोर 3. विद्यालय निरीक्षक **(ख)** 1. चाचाजी, लंबे 2. बच्चा, बुद्धिमान 3. खिलौने, ढ़ेरों **(ग) जातिवाचक संज्ञा** - पिता, माता, स्त्री, मंदिर, पाठशाला।

भाववाचक संज्ञा - सत्य, बचपन, दुख, दोष, गुण

विशेषण - सत्यप्रिय, शूर, उदार, क्रोधी, साध्वी।

क्रिया - सीखा था, खेला होगा, रोया हूँ, लौट जाती, डूब जाती।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-19 : काबुलीवाला

(क) 1. लड़की 2. देश 3. घर 4. सर्दियों 5. रुपए। **(ख)** 1. ✓ 2. × 3. ✓ 4. ✓ 5. × **(ग)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (ब)

(घ) 1. काबुलीवाला अफगान था जो प्रतिवर्ष सूखे मेवे आदि बेचने के लिए भारत आता और बेचकर धन अर्जित कर अपने देश को लौट जाता था। 2. मिनी को डर लगा कि काबुलीवाला उसे पकड़ न ले। उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि काबुलीवाले की झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसे और भी दो-चार बच्चे मिल सकते हैं। 3. काबुलीवाला प्रतिदिन आता और मिनी को किशमिश-बादाम देता, ढेर सारी बातें करता। इस प्रकार मिनी के साथ काबुली वाले की मित्रता हो गई थी। 4. एक आदमी ने रहमत से एक चादर खरीदी थी। उसके कुछ रुपये उस पर बाकी थे, जिन्हें देने से उसने इन्कार कर दिया था। इसी पर दोनों में बात बढ़ गई थी और रहमत ने उसे छुरा मार दिया था। इस कारण रहमत को सिपाहियों ने पकड़ लिया था। 5. मिनी को युवावस्था में देख उसे लंबा समय बीतने का आभास हुआ। शिथिलतावश वह वहीं जमीन पर बैठ गया। उसकी समझ में आ गया था कि उसके जेल में बीते आठ वर्षों में दुनिया कितनी बदल गई थी। उसकी बेटी भी मिनी जितनी बड़ी हो गई होगी, उसने सोचा। और वह उसकी याद में खो गया। 6. उनके अनुसार रहमत की अवस्था अब परिवार से दूर रहने की न थी, सो मिनी के पिता ने रहमत को अपने घर जाने को कहा।

भाषा-बोध

(क) 1. **काबुलीवाला** प्रतिदिन आता रहा।
2. **रहमत**, तुम अपनी बेटी के पास देश चले जाओ।
3. मैंने उसी समय **मिनी** को बाहर बुलवाया।

(ख) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-20 : श्रीनगर की सैर

(क) 1. श्रीनगर 2. शिकारे 3. प्रसन्नता 4. बीच 5. स्वर्ग। **(ख)** 1. × 2. × 3. × 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. श्रीनगर जाने के लिए जम्मू से होकर जाना पड़ता है। जम्मू से श्रीनगर की दूरी दो सौ किलोमीटर है। बस से जाना पड़ता है। बस में बैठा यात्री जब टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ी सड़क पर चढ़ता हुआ नदी, नालों, झाड़ियों, झरनों और पर्वतीय गुफाओं को पार करता हुआ आगे बढ़ता है, तो लगता है जैसे पंख लग गए हों।

श्रीनगर के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं– चश्माशाही, निशातबाग, शालीमार बाग, परीमहल, आम्या मस्जिद, हरिपर्वत का किला, शंकराचार्य जी का मंदिर व डल झील आदि। 2. डल या दल का अर्थ है पत्ता। इस झील में बहते उद्यान इसके स्थायी आकर्षण हैं। अत: 'डल' नाम ठीक प्रतीत होता है। 3. यहाँ

पानी के ऊपर लकड़ी के तख्ते बिछाकर, उन पर मिट्टी की सतह बनाकर क्यारियाँ तैयार कर ली जाती हैं। इनमें अनेक प्रकार की साग-सब्जियाँ उगाई जाती हैं। 4. शालीमार बाग एक सीढ़ीनुमा बाग है जिसकी प्रत्येक सीढ़ी पर हरी घास का गलीचा, फूलों की क्यारियाँ और फलों से लदे वृक्ष दिखाई देते हैं। इनमें आड़ू, बदाम, खुबानी और चेरी के सुंदर पेड़ हैं। सेब के पेड़ अपने बोझ से झुके हुए सुंदर लगते हैं।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. जो सबको प्रिय हो - सर्वप्रिय

2. जिसकी बुद्धि तेज हो - बुद्धिमान, तीव्रबुद्धि

3. नगर में रहने वाला - नागरिक

4. जिसके पास धन हो - धनवान

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-21 : मैं और मेरा देश

(क) 1. दंड 2. हीनता 3. प्रतिष्ठा 4. प्लेटफार्म 5. संस्कृति।

(ख) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ)

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓

(घ) 1. रेलवे स्टेशन पर फल न मिल सकने पर स्वामी रामतीर्थ ने कहा कि जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते। 2. उसने सोचा कि स्वामी जी अपने देश में जाकर यह न कह दें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। इससे देश की बदनामी हो जाती। 3. देश के नागरिक देश के सम्मान को बचाने व बढ़ाने का कार्य करते हैं, तो देश का सम्मान बढ़ता है। यदि वे भ्रष्टता व अशिष्टता में लिप्त रहते हैं, तो देश के सम्मान को आघात पहुँचता है। देश के लोग अपने घर, दफ्तर, गली, होटलों, धर्मशालाओं जीनों के कोनों व अन्य सार्वजनिक स्थानों को गंदा रखते हैं। विदेशी पर्यटकों, महमानों से अशिष्टता का व्यवहार करते है। इससे देश के सम्मान को आघात पहुँचता है। यदि सभी स्थानों पर साफ-सफाई व विदेशी पर्यटकों व मेहमानों के साथ शिष्टता का व्यवहार करते हैं, तो देश का सम्मान बढ़ता है।

भाषा-बोध

(क) 1. दूरदर्शी 2. जिज्ञासा 3. दयालु 4. न्यायप्रिय 5. प्रेमी

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

पाठ-22 : गणतंत्र दिवस समारोह

(क) 1. राष्ट्रपति 2. लालकिले 3. सलामी 4. संविधान 5. पर्व।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1.(स) 2.(स) 3.(अ) 4.(अ)

(घ) 1. गणतंत्र दिवस की परेड विजय चौक से प्रारंभ होती है तथा राष्ट्रपति उसकी सलामी लेते हैं। 2. गणतंत्र दिवस परेड में सेना की चुनी हुई टुकड़ियाँ अपने-अपने कमांडरों के नेतृत्व में मार्च करती हैं। इनके अतिरिक्ति सेना के टैंक व बख्तरबंद गाड़ियाँ भाग लेती हैं। पुलिस, सीमा सुरक्षाबल, एन.सी.सी. तथा स्कूलों के बच्चे भी परेड में भाग लेते हैं। 3. यह परेड विजय चौक से चलकर राष्ट्रपति द्वारा सलामी मंच पर पहुँचकर तिरंगा फहराने से होती है और परेड के अंत में वायुसेना के लड़ाकू विमान उड़ान भरकर राष्ट्रपति को सलामी देते हैं। वे आकाश में राष्ट्रध्वज के तीनों रंगों के धुएँ छोड़कर राष्ट्रध्वज बनाते हुए अपने-अपने ठिकानों पर चले जाते हैं। 4. 26 जनवरी, 1930 ई० को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भारत की पूर्ण आजादी का प्रस्ताव पास हुआ था। इसी कारण जब स्वतंत्र भारत का संविधान तैयार हो गया, तो उसे 26 जनवरी, 1950 को लागू करके भारत को गणंत्रत घोषित किया गया। तभी से इस तिथि को भारत का गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। 5. भारत के लगभग हर राज्य की ओर से एक झाँकी परेड में भाग लेने के लिए तैयार करके भेजी जाती है। ये झाँकियाँ हमारे देश की विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति को प्रदर्शित करती हैं। यही नहीं, ये भारत के विभिन्न क्षेत्रों के रीति-रिवाज, खान-पान, पहनावे तथा लोक-नृत्य आदि भी प्रदर्शित करती हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. जा रहे हैं 2. सलामी लेते हैं 3. आते हैं।

(ख) 1. दिवस (पुल्लिंग) 2. वाणी (स्त्रीलिंग) 3. रात्रि (स्त्रीलिंग) 4. पिताजी (पुल्लिंग) 5. टैंक (पुल्लिंग) 6. गिरिजा (स्त्रीलिंग)

(ग) 1. राष्ट्रपति <u>की</u> सवारी 2. भारत <u>का</u> संविधान 3. सेना <u>के</u> अधिकारी 4. परेड़ <u>की</u> सलामी 5. देश <u>का</u> सम्मान 6. सेना <u>की</u> टुकड़ियाँ 7. वीरता <u>का</u> पुरुस्कार। 8. अंगरक्षकों <u>के</u> घोड़े।

आओं सीखें : स्वयं कीजिए।

अराध्या हिंदी-6

पाठ-1 : इतने ऊँचे उठो

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. ब 2. स 3. ब 4. अ

(ग) अति लघु : 1. तुच्छ भावनाओं से 2. जाति, धर्म, रंग-रूप का भेद 3. निरंतर आगे बढ़ने का चिंतन 4. प्रतिपल आगे बढ़ना

लघु उत्तरीय : 1. जाति, धर्म, वेश, रंग के भेदभाव को मिटाना है। 2. जग की ज्वालाओं को अपनी ठंडक से बुझाने की सीख लेनी चाहिए। 3. कि हम तुच्छ बातों और भावनाओं से ऊपर उठें। 4. शीतलता की प्रेरणा मलय पवन से, गतिशीलता की प्रेरणा परिवर्तन से, सुन्दरता की प्रेरणा आकर्षण से और मौलिकता की प्रेरणा सृजन से मिलती है। 5. स्वर्ग 6. यहाँ पूर्ण सुख, सौन्दर्य व प्रेम की स्थापना करना। 7. कि यद्यपि स्वर्ग की बातें अभी कल्पना ही हैं किन्तु इस कल्पना को सच कर दिखाना मानव का कर्तव्य है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कवि चाहता है कि मनुष्य निरंतर अपने चरित्र और व्यक्तित्व को महान बनाए। वह पूरे विश्व के लिए समता व बंधुत्व का भाव रखे और जाति, रंग व देश की तुच्छ सीमाओं का बंदी न बने। इन तुच्छ विभाजनों से जलती मनुष्य जाति को सुगंधित पवन की तरह शीतलता प्रदान करे। 2. हमें अपने अतीत के रीति-रिवाजों को बिना सोचे-समझे दोहराते नहीं जाना चाहिए बल्कि उनमें से केवल उपयोगी बातों को ही ग्रहण करना चाहिए। पुराने से चिपटने का मोह घातक है। प्रतिपल गतिमान नदी की धारा के समान आगे बढ़ते रहना ही सच्चा जीवन है। 3. मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए कि वह इसी धरती पर ऐसा वातावरण बना दे कि वह स्वर्ग तुल्य बन जाए अर्थात धरती पर किसी प्रकार का दुख न रहे और सुख, सौन्दर्य तथा शांति व प्रेम का प्रसार हो। धरती को अपना मनचाहा रूप प्रदान करने मे मनुष्य को सतत प्रयास करते रहना चाहिए।

भाषा-बोध

(क) 1. शांतिपूर्वक- सभा शांतिपूर्वक समाप्त हो गई। 2. उत्सुकतापूर्वक - पुत्र के विदेश से लौटने का माता-पिता उत्सुकतापूर्वक इन्तजार कर रहे थे। 3. उत्तेजनापूर्ण- उत्तेजनापूर्ण भाषण सुनकर जनता भड़क गई। 4. गौरवपूर्ण - भारत का इतिहास गौरवपूर्ण है। 5. भावपूर्ण - महात्मा गाँधी की पुण्य तिथि पर प्रधानमंत्री ने भावपूर्ण श्रद्धाजलि प्रकट की।

(ख) 1. हवा, वायु, समीर 2. भू, पृथ्वी, भूमि 3. अंबर, गगन, आसमान

(ग) 2. ऐतिहासिक 3. सामाजिक 4. दैनिक 5. भोगौलिक 6. औपचारिक 7. ऐच्छिक 8. जैविक

(घ) 1. अज्ञान 2. असंतोष 3. अशांति 4. अपमान

2. नादान दोस्त

(क) 1. केशव 2. बच्चे 3. चेहरे 4. पाप

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब)

(घ) अति लघु : 1. चिड़ा और चिड़िया को देखने के लिए 2. अंडे देखने के लिए 3. ताकि चिड़िया को दाना लाने बाहर न जाना जड़े 4. अंडों पर टोकरी से आड़ कर दी।

लघु उत्तरीय : 1. वे सोचते थे कि चिड़िया बच्चों का पालन-पोषण किस प्रकार करेगी। 2. केशव के स्पर्श पर चिड़िया ने अंडे नहीं सेके और नीचे गिरा दिए जिससे वे टूट गए। 3. अंडे टूटे हुए देखकर केशव के चेहरे का रंग उड़ गया। 4. केशव द्वारा चिड़िया के अंडों के साथ छेड़छाड़ करने पर माँ केशव पर क्रोधित हुई।

दीर्घ उत्तरीय : 1. केशव ने श्यामा को अंडे न दिखाए थे। उसे इस बात का डर था कि कहीं श्यामा इस बात से नाराज होकर माँ को न बता दे। उधर श्यामा ने यह बात किसी से न कही। उसे डर था कि इससे भैया की पिटाई हो जाएगी। केशव का दिल काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे। वह श्यामा पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। श्यामा भातृप्रेम के कारण चुप थी अथवा इस कसूर में भागीदार होने की वजह से माँ को बता न पा रही थी, यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता था। शायद दोनों ही बातें रही हों।

2. केशव का व्यवहार श्यामा व संपूर्ण घटनाओं के प्रति नेतृत्व करने वाले का रहा है। वह श्यामा पर इस प्रकार हुक्म चलाता है कि वह बड़ा ज्ञानी है, सभी बातों का पूर्ण जानकार है; जबकि श्यामा उससे प्रश्न पूछकर संतुष्ट हो जाती है और उसके कहे अनुसार सहायता करती रहती है। दोनों की सभी चेष्टाएँ बाल सुलभ हैं और प्राय: भाई बहनों में देखने को मिलती हैं जहाँ भाई बड़ा होता है और बहन छोटी तथा दोनों

की उम्र में अंतर भी इतना ही होता है जितना केशव व श्यामा की उम्र में।

भाषा-बोध

(क) 1. यह (विशेषण) 2. यह (सर्वनाम) 3. यह (विशेषण)

(ख) 1. प्रत्यक्ष 2. मूक 3. जिज्ञासु

(ग) 1. सँकरा - चौड़ा 2. सुखद - दुखद

3. उत्कृष्ट - निकृष्ट 4. आगमन - प्रस्थान

5. प्रशिक्षित - अप्रशिक्षित 6. अनुज - अग्रज

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

3. अहंकारी राजा

(क) 1. शूरवीर 2. रत 3. दान-पुण्य 4. सन्मार्ग 5. सन्यासियों

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. द 2. य 3. अ 4. ब 5. स

(घ) 1. ब 2. ब 3. अ 4. ब 5. स

(ङ) अति लघु : 1. राजगढ़ का 2. एक यशस्वी राजा थे। 3. नहीं दान-पुण्य से उसका लेशमात्र भी नाता था।

लघु उत्तरीय : 1. राजा रणवीर सिंह शूरवीर था परंतु प्रजा की भलाई के लिए कुछ नहीं करता था। 2. प्रजा बहुत दुखी थी। 3. राजा ने अहंकार के कारण संयासियों का अपमान करके निकाल दिया।

दीर्घ उत्तरीय : 1. राजा को कुछ ही क्षण में नरक के दर्शन करा दिये 2. राजा ने अपनी जीवन शैली बदल दी वह प्रजा की भलाई में ही रहने लगा।

भाष-बोध

(क) 1. चालाकी 2. देवत्व 3. अच्छाई 4. पुरूषत्व 5. हार 6. मुस्कुराहट 7. नारीत्व 8. शत्रुता

(ख) 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. जातिवाचक संज्ञा 4. जातिवाचक संज्ञा 5. जातिवाचक संज्ञा

(ग) विशेषण- 1. पक्की 2. घनी 3. खाली 4. शीतल 5. यशस्वी 6. उचित 7. सुखी 8. अनुचित

विशेष्य- 1. सड़कें 2. छाया 3. हाथ 4. जल 5. राजा 6. बात 7. लोग 8. विचार

(घ) 1. चीखना 2. प्रकट 3. चलना 4. समझना 5. अहंकार था।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए

4. स्वावलंबन

(क) 1. भोला 2. पलंग 3. हैप्पी 4. शहतीर

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. ब 2. ब 3. अ

(घ) अति लघु : 1. हैप्पी 2. भोला-सा 3. चितकबरा

लघु उत्तरीय : 1. तेज दौड़ना, ऊपर उछलना, फेंकी गई वस्तु उठाकर लाना, व्यक्ति व वस्तुओं की पहचान करना आदि। 2. घोंसला टूटा पड़ा था। 3. सूखे तिनके एकत्र करके, कुछ टहनियाँ लाकर तार से घोंसले का साँचा बनाकर।

दीर्घ उत्तरीय : 1. क्योंकि चिड़िया ने आकर दीपू का बनाया हुआ घोंसला तोड़ दिया था। 2. कि जब नन्हीं चिड़िया भी अपना काम अपने आप करती है तो मैं भी अपना अधिकतर काम अपने आप ही करूँगा।

भाषा-बोध

(क) 1. वर्तमानकाल 2. भविष्यकाल 3. भूतकाल 4. वर्तमानकाल 5. भूतकाल

(ख) 1. माता, जननी, अम्बा 2. कूकर, कुक्कुर, शुनक 3. खग, विहग, पंछी

(ग) 1. टोकरे 2. टोकरियाँ 3. घोंसले 4. गलतियाँ 5. तिनके 6. टहनियाँ

आआ सीखें : स्वयं कीजिए।

5. ठुकरा दो या प्यार करो

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब)

(ग) अति लघु : 1. सुभद्रा कुमारी चौहान। 2. ईश्वर की आराधना के लिए केवल सच्चे प्रेम-भाव की आवश्यकता है न की बाहरी आडम्बरों की।

लघु उत्तरीय: 1. स्वयं को कहा है क्योंकि वह भाव रूप में स्वयं को ही भगवान को अर्पण कर रही है।

2. भाव भरा हृदय दिखाने और चढ़ाने आई है।

3. कवयित्री भाव भरे हृदय को देव को अर्पित करती हुई कहती है कि उसके पास यही है, चाहो तो स्वीकार करो अथवा ठुकरा दो, परंतु यह वस्तु देव की ही है।

दीर्घ उत्तरीय: 1. वास्तव में कवयित्री भावपूर्ण हृदय को पूजा-सामग्री में सर्वोपरि मानती है और यही अर्पित करती है। वह स्वयं को भी यह कहते हुए समर्पित करती है कि पूजा, पुजापा, दान-दक्षिणा सब कुछ वह स्वयं ही है। भक्त सदैव याचक बने रहते हैं, सो स्वयं को भिखारिन बताते हुए हाथों से रिक्त है

परंतु पूजा की सामग्री भावपूर्ण हृदय है। 2. कवयित्री ईश्वरप्रेम में पागल है। उसे ईश्वर प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं सूझता। उसके लिए जीवन में कुछ भी कहने-करने योग्य नहीं, बस एक ही धुन सवार है, प्रभुमिलन की। यही कारण है कि वह स्वयं में भाव की उच्चता में भरकर उन्मत्त हो गई है। वास्तव में प्रेमविह्व भक्तों की यही दशा होती है, वे उन्मत्त हो जाते हैं, प्रेमी (प्रभु) के स्मरण में ही खोए रहते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. माधुर्य–कर्कशता 2. साहस–कायरता 3. गुण–दोष 4. धैर्य–अधैर्य 5. बहुमूल्य–मूल्यहीन 6. चातुर्य– मूर्खता

(ख) 1. पूजा (संज्ञा) 2. देव (संज्ञा) 3. बहुमूल्य (विशेषण) 4. उपासक (संज्ञा) 5. गरीबनी (विशेषण) 6. चातुर्य (विशेषण) 7. वाणी (संज्ञा) 8. सेवा (संज्ञा) 9. पुजापा (संज्ञा)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

6. पुस्तकें जो अमर हैं

(क) 1. पांडुलिपियाँ 2. लकड़ी 3. राज्य 4. शत्रुओं। **(ख)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब)

(घ) अति लघु : 1. चीनी सम्राट 2. पुस्तकें पढ़ने के कारण 3. पुस्तकें नष्ट करने का 4. मनुष्य की चतुराई, अनुभव, ज्ञान, भावना, कल्पना और दूरदर्शिता।

लघु उत्तरीय : 1. पुस्तकें फिर से लकड़ी के कुंदों के रूप में प्रकट हो गई थीं। 2. आक्रमणकारी की दलील यह थी कि यदि इन ग्रंथों में वह नहीं लिखा है जो उसके धर्म की पवित्र पुस्तक में लिखा है, तो उन्हें पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं; और अंत में पुस्तकें वही कहती हैं, जो उसके पवित्र ग्रंथ ने पहले ही कह रखा है, तो उन पुस्तकों को रखने का कोई लाभ नहीं। 3. सपने में उसने देखा कि विश्वविद्यालय का सुंदर भवन कहीं गायब हो गया है और वहाँ शिक्षकों और विद्यार्थियों के स्थान पर भैंसें बँधी हुई हैं।

दीर्घ उत्तरीय : 1. भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है। प्राचीन काल से ही भारतीय भाषाओं जिनमें संस्कृत प्रमुख है, में ज्ञान को लिपिबद्ध करते रहने की परंपरा रही। इस प्रकार निरंतर साहित्य की रचना होती रही। भारत के कोने-कोने से कवियों और विद्वानों ने संस्कृत के जरिए ही भारतीय साहित्य का भंडार भरा। प्राचीन भारत का दर्शन तथा विज्ञान दूर-दूर के देशों तक फैला। हिमालय पर्वत और गहरे सागरों को पार करके भारतीय साहित्य दूर देशों तक पहुँचा और अपनी महानता से विदेशियों को परिचित करवाया।

2. कागज़ ही जलता है शब्द तो उड़ जाते हैं। ज्ञान तो ज्ञानवान में सदा ही विद्यमान रहता है। वह जितना विचारता है खोजता है, उतने ही उन्नत विचारों का संग्रह कर लेता है। पुस्तकें तो कागज़ का रूप होती हैं, सो नष्ट हो जाती हैं; परंतु जिन लोगों ने उनसे ज्ञान प्राप्त कर लिया अथवा सूचनाएँ, जानकारियाँ प्राप्त कर लीं, वे भावरूपी शब्द तो नष्ट नहीं होते, वे तो उड़कर उन लोगों के मस्तिष्क में एकत्र हुए ही रहते हैं, जो उनके लेखक अथवा पाठक रहे हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. सरल (सरलता) 2. सादा (सादगी) 3. अच्छा (अच्छाई) 4. सज्जन (सज्जनता) 5. नौकर (नौकरी) 6. मित्र (मित्रता)

(ख) 1. बहुत कम 2. अधिक 3. बाईं ओर 4. बाहर 5. पहले **(ग)** 1. ये 2. ये 3. उस 4. उस 5. वे 6. वे

(घ) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)

(ङ) अतीत–भारत का अतीत उसकी महान संस्कृति का उद्घोषक रहा है।

दूरदर्शी–दूरदर्शी आने वाले समय में होने वाली घटनाओं को ध्यान में रखकर क्रियाएँ करता है।

दूरदर्शिता–सफल व्यक्ति वही है जिसकी दूरदर्शिता से सभी लाभान्वित हों।

आक्रमणकारी–आक्रमणकारी का कार्य है दुर्बल को सताना और उन पर आद्यिपत्य स्थापित कर लेना।

अनुभव–ज्ञान अनुभव से ही प्राप्त होता है।

कल्पना–आलसी लोग केवल कल्पना ही करते रहते हैं जबकि कर्मठ लोग कल्पना को साकार कर लेते हैं।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

7. विचार-विवेक

(क) 1. चरित्र 2. बुराई 3. प्रिय, अप्रिय 4. सुख 5. प्रतिकूलता **(ख)** 1. ✓2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) अति लघु : 1. जीवन को उन्नत और श्रेष्ठ बनाना 2. सत्य पर 3. सत्य की महिमा 4. विद्याभ्यास छोड़ना पड़ेगा 5. कड़ी मेहनत 6. जिनके

गलत अभ्यास व गलत आदतें बन जाती हैं उन्हें अनुकूलता में प्रतिकूलता दिखाई देती है।

लघु उत्तरीय : 1. समुद्र का खारा जल आकाश में उन्नत होकर अमृत-तुल्य जीवनप्रद बनता है। 2. जिसका जीवन मधुर है, उस का मरण भी मधुर रहता है। 3. सुख देने वाली वस्तु अच्छी और दुख देने वाली वस्तु बुरी लगती है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. विद्वान का बल वाणी और मूर्ख का बल मौन है। वास्तव में यदि विद्वान मौन रहेगा, तो उसका ज्ञान प्रकट न हो सकेगा। बोलकर, वाणी के द्वारा ही वह ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का प्रकटीकरण कर सकता है। कोयल और कौए का भेद बोलने पर ही प्रकट होता है। गुरु वाणी के द्वारा ही शिष्यों तक अपनी बात, अपना मत व शास्त्र-संदेश प्रेषित कर पाते हैं परंतु यदि कोई मूर्ख है तो मूर्खता की ही बातें बोलेगा, सो उसका मौन रहना ही श्रेयस्कर होगा।

2. जिनके गलत अभ्यास व गलत आदतें बन जाती हैं, उन्हें अनुकूलताएँ भी प्रतिकूलताएँ लगती हैं। मदिरापान करने वाले को दूध कहाँ प्रिय होगा? किसी मछुआरे को पुष्पों की सुगंध प्रिय न लगेगी। सूअर को गंदगी का अभ्यास है, वह स्वच्छ स्थान पर नहीं बैठ सकता वास्तव में जिनके अभ्यास गलत हो जाएँ, वे उन्हीं में अनुकूलता पाने लगते हैं।

3. मनुष्य का अपने जीवन को उन्नत और श्रेष्ठ बनाना ही चरित्र है। समुद्र का खारा जल आकाश में उन्नत होकर अमृत-तुल्य जीवनप्रद बनता है, परंतु उस स्थिति में पहुँचाने के लिए जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश और उष्णता की आवश्यकता है, वैसे मनुष्य के चरित्र-निर्माण के लिए ज्ञान और पवित्रता आवश्यक हैं। इन दोनों की प्राप्ति स्वाध्याय से होती है। उन्नत चरित्र ही सद्‌गुणी शक्तियों के चालक होते हैं। इसलिए चरित्र निर्माण निरंतर होता रहे, यह महती आवश्यकता है।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. कौन - प्रश्नवाचक 2. स्वयं - निजवाचक 3. जो-सो - संबंधवाचक 4. ये - संकेतवाचक 5. कुछ - अनिश्चयवाचक

(ग) 1. जो 2. तुम, वे 3. तुझे, कोई 4. आप, जिसकी, कुछ 5. मेरा-तेरा

(घ) 1. **उष्ण**=गरम। 2. **बल** = ताकत। 3. **अनुकूल** = इच्छानुरूप। 4. **श्रेष्ठ** = उत्तम। 5.**अभिलाषा** = इच्छा। 6. **जगत** = संसार। 7. उचित 8. **प्रकाश** = रोशनी। 9. **सतत्** = निरंतर।

(ङ) 1. चोरी, बेईमानी, चोरबाजारी, घूसखोरी, डकैती, ठगी, लूट वस्तुओं में मिलावट आदि चरित्र को भ्रष्ट करने वाले सारे अपराधों का मूल लोभ ही है। 2. शारीरिक हो या मानसिक, सभी प्रकार के अभाव मनुष्य के संतुलित विकास में बाधक हैं। अभावों में पलने वाले बच्चे बड़े होने पर भीरू बने रहते हैं। उनमें न बुद्धि रह जाती है, न स्फूर्ति और न प्रेरणा।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

8. हिमालय की एक घटना

(क) 1. पहाड़ 2. धूप 3. कँपा 4. रस्सियों 5. बहुत

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ग)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स)

(घ) अति लघु : 1. 1916 ई० में, दिल्ली में 2. श्रीनगर की घाटी में 3. पहला अनुभव

लघु उत्तरीय : 1. जोजी-ला घाटी की चोटी से उन्होंने देखा, तो एक तरफ नीचे पहाड़ों की घनी हरियाली थी और दूसरी तरफ कड़ी नग्न चट्टान।

2. सब कुछ बहुत मनोरम था और दूर की वस्तुएँ वास्तविक दूरी से कम पर प्रतीत होती थी।

3. हिम सरोवर उनकी ओर इस प्रकार बह रहे थे मानो रंग रहे हों और उनसे मिलने आ रहे हों।

दीर्घ उत्तरीय : 1. बर्फीले पहाड़ों पर बड़ा धोखा था क्योंकि वहाँ दरारे बहुत-सी थीं और ताजी गिरने वाली बर्फ खतरनाक दरारों को ढक देती थी। इस नई बर्फ पर ज्योंहि नेहरू जी का पैर पड़ा, वह नीचे खिसक गई और वे धम्म से मुँह बाए हुए एक विशाल दरार में जा गिरे यह दरार इतनी बड़ी थी और कोई भी चीज उसमें हजारों वर्षों तक सुरक्षित रह सकती थी। यह उनके दिल को कँपा देने वाला अनुभव था। 2. निर्जन घाटियों में बहते ग्लेशियर, स्वच्छ हवा, तेज धूप प्रकृति का सूनापन, नंगी चट्टाने, सुंदर फूल, प्रकृति की संपूर्ण सुषमा ने उन्हें अजीब-सा संतोष प्रदान किया। उन्होंने लिखा है कि मेरे उत्साह और उमंग का ठिकाना न था। आगे वे बताते हैं कि लगातार बारह घंटे चढ़ते रहने पर उन्हें एक विशाल हिम-सरोवर और उसके चारों ओर बर्फ से ढकी हुई पर्वत चोटियाँ दिखाई दीं जो ऐसी प्रतीत होती थी मानों देवताओं का मुकुट अथवा

अर्धचंद्र हो। 3. ऊँची पहाड़ियों में भयानक रपटीली दरारें और स्वयं के साथ हुए हादसे ने उनके सामने अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दी थी। हादसे से सभी घबरा गए थे। आगे के मार्ग में दरारों की तादाद और उनकी चौड़ाई और भी बढ़ गई थी जिनमें से कुछ को पार करने के साधन भी उन लोगों के पास न थे। इसलिए वे लोग थके-माँदे हताश हो लौट लाए और इस प्रकार अमरनाथ की गुफा अनदेखी ही रह गई।

भाषा-बोध

(क) 1. पहाड़ (पुल्लिंग) 2. दर्रा (पुल्लिंग) 3. घाटी (स्त्रीलिंग) 4. ग्लेशियर (पुल्लिंग) 5. सरोवर (पुल्लिंग) 6. तंबू (पुल्लिंग) 7. गुफा (स्त्रीलिंग) 8. गड़रिया (पुल्लिंग) 9. धूप (स्त्रीलिंग) 10. बर्फ (स्त्रीलिंग) 11. नाला (पुल्लिंग) 12. आँधियारा (पुल्लिंग) **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) 1. **हमारी** (विशेषण) **मुश्किलें** (संज्ञा)

2. **धीरे-धीरे** (क्रिया विशेषण)

3. **सँकरी** (विशेषण)

4. **अमरनाथ** (संज्ञा) **यहाँ** (क्रियाविशेषण)

5. **हवा** (संज्ञा)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

9. वीरों की पूजा

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स)

(घ) अति लघु : 1. संयासी को 2. चित्तौड को 3. संयासी की

लघु उत्तरीय : 1. चित्तौड़ वीरों और वीरांगनाओं की भूमि है जिसे वह पवित्र तीर्थ मानता है, इसलिए वहाँ जाना चाहता है। 2. पथिक उत्तर देता है कि मुझे गंगा सागर, रामेश्वर या काशी नहीं जाना है, मेरी आँखें तो तीर्थराज चित्तौड़ को देखने के लिए प्यासी हैं।

3. कवि उस मार्ग में कोई तीर्थ नहीं देखता जिधर पथिक जा रहा है, इसलिए पूछता है कि क्या पथिक अपना मार्ग भूल गया है।

4. चित्तौड़ वीरों की भूमि है, तीर्थ मानकर संन्यासी वहाँ वीरों की पूजा करने जा रहा है। अतः कविता का शीर्षक 'वीरों की पूजा' उचित ही है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कवि ने चित्तौड़ को वीरों की भूमि बताया है। उसने चित्तौड़ की वीरांगनाओं के जौहर-व्रत का उल्लेख किया है। चित्तौड़ की भूमि सदा से ही अपनी आन-बान शान की रक्षा के लिए शत्रुओं से लोहा लेती रही है। वीर भूमि की स्वतंत्रता के लिए स्वयं को बलिदान करना यहाँ के जन-जन की विशेषता रही है। 2. इस भूमि के लोग शत्रुओं की ललकार सुनकर तलवारें लेकर उनसे युद्ध करने के लिए निकल पड़ते थे। यहाँ की स्त्रियाँ अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए जौहर व्रत करके जलती हुई चिताओं में अपने शरीर की आहुति दे देती थीं। यहाँ वीर जवानों की गर्वीली आवाज में मातृभूमि की जय-जयकार सुनाई देती थी। यहाँ के लोगों ने कभी परतंत्रता को नहीं स्वीकारा। इन सब कारणों से चित्तौड़ को वीरों की भूमि कहा जाता है।

भाषा-बोध

(क) 1. ईश्वरभक्त 2. अवर्णनीय 3. निराकार 4. सदाचारी 5. दुर्भावना

(ख) 1. फूल (पुल्लिंग) 2. दुर्ग (पुल्लिंग) 3. टोली (स्त्रीलिंग) 4. तलवार (स्त्रीलिंग) 5. माला (स्त्रीलिंग) 6. पीतांबर (पुल्लिंग)

(ग) 1. जो **स्वतंत्र** है, वही विकास कर सकता है। 2. **स्वतंत्रता** सभी को प्रिय है। 3. पर्वत अपने **अचल** रूप में जाने जाते हैं। 4. पराक्रम व्यक्ति को **गर्वित** किए बिना नहीं छोडता। 5. भक्तजन देव की पूजा हेतु **माला-फूल** लेकर जाते हैं।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

10. गिरवन के सिंह

(क) 1. बीस 2. तीन मीटर 3. गिरवन 4. नाहर

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(घ) अति लघु : 1. जहाँ प्राणी बंद बाड़ों में नहीं बल्कि खुले और प्राकृतिक वातावरण में निर्भय और बरोक-टोक आजादी से घूम सकते हैं। ऐसे विशेष क्षेत्रों को **राष्ट्रीय प्राणी उद्यान** नाम दिया गया है। 2. वन्य प्राणियों को लुप्त होने से बचाने के लिए 3. सिंह, बाघ, चीता

लघु उत्तरीय : 1. पहला गिरवन का विश्व प्रसिद्ध होना व दूसरा सिंह का जंगल का राजा होना। 2. जूनागढ़ आदि से गिरवन तक पर्यटकों के लिए बसें चलती हैं। जिनके द्वारा वहाँ पहुँचा जा सकता है। 3. गिरवन का अनुकूल वातावरण सिंहों के रहन-सहन में मौजमस्ती की उपलब्धता बनाए रखता है। 4.

पास-पड़ौस के गाँव वाले उन्हें विषयुक्त आहार देकर मार डालते थे। 5. चुस्त, चतुर, शक्तिशाली और निडर होने के कारण सिंह को वनराज कहा जाता है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. सिंह पहले उत्तरी भारत में काफी बड़े क्षेत्र तक और दक्षिण में नर्मदा नदी तक पाए जाते थे, परंतु अब ये गुजरात के सौराष्ट्र के गिरवन क्षेत्र में ही रह गए हैं। पश्चिमी भारत का यह स्थल पहले भूतपूर्व जूनागढ़ रियासत के शासकों का प्रसिद्ध आखेट स्थल था। शिकारियों की हवस, सिर और खाल के शोक वनों की कटाई, आबादी की बढ़ोत्तरी, खेती के लिए भूमि के अधिकाधिक उपयोग आदि के कारणों से सिंह विनाश की अवस्था में पहुँच गए हैं। 2. सिंह अपनी रोबीली आकृति, शांत एवं गंभीर प्रकृति, राजसी शान वाली चाल और गर्जना के कारण अद्‌भुत है। इसकी तुलना अन्य किसी प्राणी से नहीं की जा सकती। इसके गले में कैंसर (अपाल) इसकी खास पहचान है परंतु गुच्छेदार पूँछ नर और मादा दोनों की होती है। शरीर बिना धब्बों को मटमैले बादामी रंग का यानी भूरापन लिए होता है। सिंह विड़ाल कुल का प्राणी है। इसके मुड़े हुए और पैने पंख माँस की मुलायम गद्दियों के अंदर ढ़के तथा सिमटे होते हैं, जिन्हें आवश्यकतानुसार यह बाहर निकाल लेता है और दाँतों के साथ मिलकर शिकार पकड़ने में मदद करते हैं। शरीर लचीला और फुर्तीला होता है। इसके जबड़े और मांसपेशियाँ इतनी मजबूत होती हैं कि यह भैंसे तक को मुँह में दबाकर आसानी से ले जा सकता है। जीभ की कड़ी कलियों की सहायता से यह हड्डी से मांस को रेती की तरह छील सकता है।

3. गिरवन एक अनोखा, आकर्षक और दर्शनीय स्थान है और ऐसा शरण वन दुनिया में और कहीं नहीं है। यह पूरा घना जंगल नहीं बल्कि अर्धबंजर भूमि का विस्तृत भू-भाग है। इस वन को सिंह अभयारण्य में बदलने वाली परियोजना सन् 1972 में शुरु हुई। एशियाई सिंह का यह शरण स्थल 1295 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में किस्म-किस्म के पतझड़ी वृक्षों और कँटीली झाड़ियों वाले सूखे तथा खुले जंगल के रूप में फैला हुआ है।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. **गिरनार** – संज्ञा 2. **कैमरे** – संज्ञा

(ग) वन – जंगल, अरण्य, कानन

सिंह – शेर, केहरी, मृगेश।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

11. उठो, दरवाजा खोल दो

(क) 1. शिराओं 2. कच्चा 3. भटक 4. असावधान 5. अंधेरे **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) अति लघु : 1. प्रकाश ने 2. किरण ने 3. प्रकाश ने 4. किरण ने

लघु उत्तरीय : 1. प्रकाश कमरे में अंधकार की उपस्थिति में नकारात्मक विचारों से दो-चार हो रहा है। 2. सारा कमरा रोशनी से भर उठता है।

3. हमने अपने दामन में खुशियों के स्थान पर, उसमें तोहमतें, घृणा, द्वेष और अलगाव की आग भर ली है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. लोग क्षणिक अनुकूल परिस्थितियों को ही सुख मान बैठते हैं। प्रकाश के अनुसार वास्तव में सुख की खोज में वे नरक की ओर मुड़ गए हैं, जिस दामन को खुशियों से, फूलों से भरना था, उसमें भर ली है। जमाने भर तोमतें, घृणा, द्वेष, और अलगाव की आग। वह स्थायी सुख की खोज में क्षणिक सुख प्राप्त कर पुनः दुख की छाया में चला जाता है।

2. वास्तविक प्रकाशरूपी सुख सकारात्मक विचारों, द्वारा, चितंन, द्वारा प्राप्त हो जाता है। उसे भीतर से प्राप्त करना होता है। उसे विचारों को उन्मत करते हुए पाया जाता है। उसे निराशा को तजकर पाया जाता है। वास्तविक प्रकाश ज्ञान का प्रकाश है जो सुख को स्थायित्व की ओर ले जाता है। उसे प्राप्त करने के लिए विचारों को चितंन की प्रक्रिया से ऊँचा उठाकर कठिनाइयों का मार्ग खोजा जाता है।

3. प्रकाश की अनुपस्थित में अंधकार का साम्राज्य फैल जाता है। बाह्य प्रकाश की प्राप्ति के लिए जिस प्रकार खिलाडियों और दरवाजों को खोलना पड़ता है, उसी प्रकार भीतरी प्रकाश को पाने के लिए चितंन के सकारात्मक विचारों के द्वारों को खोलना होता है। इससे ज्ञानरूपी प्रकाश भीतर स्थान प्राप्त कर लेता है और अज्ञानरूपी अंधकार को वहाँ से पलायन करना होता है।

भाषा-बोध

(क) 1. (अ) 2. (द) 3. (स)

(ख) स्वयं कीजिए।

आओ सीखे : स्वयं कीजिए।

12. परस्पर वैर का कुफल

(क) 1. तृण 2. स्वाभाविक 3. परिवार 4. यमुनादत्त **(ख)** 1. ✓2. ✗ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स)

(घ) अति लघु : 1. गंगदत्त को प्रियदर्शन (सर्प) के भोजन की चिंता होने लगी। 2. सर्प 3. प्रियदर्शन को देखकर गंगदत्त ने सोचा क्यों न इससे अपने शत्रुओं का विनाश करवा दूँ।

लघु उत्तरीय : 1. गंगदत्त ने विनती की कि वह उसके शत्रुओं का विनाश कर दे। 2. प्रियदर्शन ने गंगदत्त के सभी शत्रुओं का विनाश कर डाला।

3. कुएँ में गंगदत्त के परिजनों के अतिरिक्त सभी मेढ़कों को वह खा चुका था इसलिए उदरपूर्ति हेतु गंगदत्त के परिजनों की बारी आई। 4. गंगदत्त बहाना करके कुएँ से बाहर आया और अपनी जान बचाई।

दीर्घ उत्तरीय 1. पैर में गड़े काँटे को किसी दूसरे काँटे से ही निकाला जा सकता है। कहानी में इसका अभिप्राय है कि शत्रु को ही साधन बनाकर उससे निकट के शत्रु का विनाश करवा डालना। गंगदत्त के बंधु-बांधव उसके शत्रु बने बैठे थे। वे उसे चुभे हुए काँटे की तरह पीड़ा दे रहे थे। गंगदत्त का सर्प भी शत्रु था परंतु उसने सर्प रूपी काँटे के बल पर निकटतम शत्रु बंधु-बांधवों का विनाश करवाकर इस उक्ति का चरितार्थ किया।

2. प्रियदर्शन ने गंगदत्त को कुलांगार अर्थात् कुल का विनाश करने वाला माना क्योंकि वह उसके द्वारा कुल का विनाश करवाना चाहता था। इसी प्रकार गंगदत्त की पत्नी ने उसे कुलक्षयकारक माना। गंगदत्त द्वारा प्रियदर्शन को कुएँ में लेकर आने के फलस्वरूप ही उसका पुत्र यमुनादत्त काल का विनाश हुआ और गंगदत्त का कुल समाप्त हो गया। उसका पुत्र, बंधु-बांधव सब मारे गए।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) 1. व्याकुलता (संज्ञा) 2. शत्रु (संज्ञा) 3. सुख (संज्ञा) 4. व्याकुल (विशेषण) 5. दुख (संज्ञा) 6. बलवान (विशेषण)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

13. सूर के पद

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. ✓2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ)

(घ) अति लघु : 1. वन जाकर अपने हाथ से फल तोड़कर खाना चाहते थे। 2. अपने मित्रों के साथ 3. यशोदा को भय है कि कृष्ण छोटे है, वह थक जाएँगे।

लघु उत्तरीय : 1. वे कहते हैं कि हे माता तू नंद बाबा व बड़े से कह देना कि वे डरें नहीं, मैं सभी ग्वालों के साथ बंशीवट के नीचे ही खोलकर सुख पाऊँगा 2. कृष्ण को कंस तथा अन्य बैरियों का वध करना हैं, इसलिए वे जल्दी से बड़े हो जाना चाहते हैं। 3. दूध, दही, घी, मक्खन व जो भी रूचिकर हो, माता यशोदा उसे खाने को दें।

दीर्घ उत्तरीय : 1. श्रीकृष्ण के मन में कंस पर विजय पाने की अभिलाषा थी। कंस ने उनके माता-पिता को कारागार में बंदी बनाया हुआ था ऐसी आकाशवाणी हुई थी कि कंस की मृत्यु देवकी की आठवी संतान के हाथों थी। कृष्ण देवकी की आठवीं संतान थे। कंस उनका शत्रु था और येन-केन-प्रकार उनकी मृत्यु का उपाय खोजता रहता था, परंतु उनका बाल भी बाँका न हुआ था। कंस अत्याचारी राजा था, सो इन सब कारणों से कृष्ण को उस पर विजय पाने की अभिलाषा थी।

2. (अ) कृष्ण द्वारा गाय चराने जाने की बालहठ देखकर यशोदा माता उन्हें समझाते हुए कहती हैं कि तुम्हारे छोटे-छोटें पैर हैं, वन में कैसे चल पाओगे? आते-आते थकान चढ़ जाएगी। (ब) वन में दिन भर घूमते-घूमते तुम्हारा यह कमल जैसा कोमल मुख (शरीर) कुम्हला जाएगा (स) श्री कृष्ण माता से कहते हैं कि हे माता! मुझे बड़ा कर दो। मैं दूध, दही, और घी, मक्खन और मेवा जो कुछ भी माँगू, मुझे वही दे दिया करों। 3. सूरदास जी कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन करते हुए कहते है। श्रीकृष्ण माता से कहते हैं- हें माँ! मैं गायें चराने जाऊँगा। नंद महर मुझे जाने से रोकते हैं, तू उन्हें समझा देना कि अब मैं बड़ा हो गया हूँ। वन में तनिक डरूँगा नहीं। डरने की बात क्या है, मैं तो रैता, पैता, मना, मनसुख

और बलराम के साथ रहूँगा। वन में जाएँगे, वंशीवट के नीचे पहुँचेंगे, वहाँ ग्वालों के साथ खेलते हुए मैं बहुत सुख पाऊँगा। हे माता! मुझे भोजन के लिए भात दे दे, काँवड़ में दही दे दे जब भूख लगेगी खा लूँगा। हे माता! यमुना का जल साथी है, यदि मैं नहाऊँ, तो इसी की सौगंध है।

भाषा-बोध

(क) 1. बदन (शरीर) 2. कछु (कुछ) 3. तनक (छोटा) 4. तुम्हरौ (तुम्हारा) 5. पछारौ (पछाड़ूँ) 6. सौं (सौगंध) 7. गाई (गाय) 8. बड़ी (बड़ा) 9. माखन (मक्खन)।

(ख) 1. **कमल** -जलज, नीरज, पंकज। 2. **वृक्ष** - पेड़, पादप, तरु।

(ग) 1. **बैरी** = शत्रु। 2. **तट** = किनारा। 3. **स्वामी** = मालिक, प्रभु। 4. **घृत** = घी। 5. **साँझ** = सायंकाल। 6. **कर** = हाथ। 7. **सबल** = बलशाली। 8. **सदा** = हमेशा। 9. **पग** = पैर

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

14. नृत्यांगना सुधाचंद्रन

(क) 1. शारीरिक 2. मद्रास 3. दायीं

(ख) 1. ✗2. ✓ 3. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब)

(घ) अति लघु : 1. पाँच वर्ष 2. कला सदन 3. डॉ० सेठी

लघु उत्तरीय : 1. उनकी इच्छा थी कि उनकी पुत्री राष्ट्रीय ख्याति की नृत्यांगना बने।

2. एक दुर्घटना में उसकी बाऐं पाँव की हड्डी टूट गई और दायाँ पाँव बुरी तरी जख्मी हो गया।

दीर्घ उत्तरीय : 1. जहाँ उम्मीद की कोई किरण न दिखाई दे और सब कुछ होना असंभव ही प्रतीत हो, वहाँ किसी विशेषज्ञ द्वारा यह कहना कि प्रयास करो तो सब कुछ संभव है, आशा की किरण को जगाने का कार्य करता है। परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो अधिक प्रयास की भी आवश्यकता नहीं होती परंतु परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो अधिक प्रयास की भी आवश्यकता नहीं होती परंतु परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों तो अत्यधिक कठिन प्रयास किया जाता है जिसके लिए व्यक्ति को भी असामान्य होने की आवश्यकता होती है। डा० सेठी के ऐसा कहने के पीछे भाव था कि सुधाचंद्रन ने नैराभ्य की भावना उत्पन्न न हो। वह इस विचार के साथ अपनी शक्ति संगठित करती रहे कि प्रयास से उसका कार्य संभव हो सकता है। 2. 28 जनवरी 1984 को मुंबई के 'साउथ इंडिया वेलफेयर सोसाइटी' के हाल में सुधाचंद्रन के नृत्य का सार्वजनिक प्रदर्शन बेहद सफल रहा। प्रशंसकों ने उसे पलकों पर उठा लिया और वह रातों रात ऐतिहासिक महत्त्व की हो गई। उसकी अद्‌भुत जीवन यात्रा से प्रभावित होकर तेलुगु के फिल्मकार ने उसकी जिंदगी को आधार बनाकर 'मयूरी' फिल्म बनाई। सुधा ने स्वयं इसमें जीवंत अभिनय किया। फिल्म को अद्‌भुत सफलता मिली। 33वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में इसे विशेष पुरस्कार दिया गया। आज सुधा एक व्यस्त नृत्यांगना ही नहीं, फिल्मकार भी है। सुधा को उसके असामान्य साहस और श्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुकें हैं।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. जीतना (जीत) 2. हारना (हार) 3. दौड़ना (दौड़) 4. नाचना (नाच) 5. पछताना (पछतावा) 6. सींचना (सिंचाई) 7. पढ़ना (पढ़ाई) 8. चढ़ना (चढ़ाई) 9. लिखना (लिखावट)

(ग) 1. असंभव 2. दुर्गम 3. शिक्षार्थी 4. शिक्षक

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

15. अमरनाथ की यात्रा

(क) 1. सिहरन 2. जवाहर सुरंग 3. धार्मिक 4. हरियाली **(ख)** 1. ✓2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स)

(घ) अति लघु : 1. कन्हैया लाल नंदन जी 2. फोन पर 3. साढ़े चौदह हजार फीट 4. शिवलिंग की प्रतीक

लघु उत्तरीय : 1. टटू बिगड़ गया था जिस पर सवार लेखक जी जान पर बन आई थी। 2. हरे-भरे पाईन के सीधे तने खडे हुए वृक्षों के बीच लाल छतों के मकानों की शोभा देखते ही रह जाने लायक थी। 3. स्वयं करें। 4. पहाड़ पर ऑक्सीजन की कमी होती है जिसके कारण साँस लेने में लकलीफ होती है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. लिद्दर असाधारण तौर पर

खूबसूरत नदी बताई जाती है। अल्हड़पन और पानी के स्वच्छ सफेद घाट में उसकी सुंदरता पूर्ण रूप से प्रकट होती है। कहा जाता है कि लिद्दर की तेजी ऐसी है कि साँप शरमाए और गर्जन ऐसी कि समूचा पहलगाम उसके बिना सूना हो जाए। चिनाब के बहाव में शक्तिशाली उफान देखने वालों को चकित कर देता है। वर्षा ऋतु में यह कहर बरपाती है।

2. पौराणिक कथा है कि एक बार बातों ही बातों में भगवान शिव का मुख श्री पार्वती जी के नेत्रों से स्पर्श हो गया था। परिणाम यह हुआ कि उनका मुख नेत्रों से अंजन लग जाने के कारण काला हो गया। भगवान सदाशिव ने अपने मुख को काला देखा तो उसे श्री गंगा (नीलगंगा) में धोया, जिससे गंगाजी का रंग काला पड़ गया। इस जल के स्पर्श से महापापों का नाश हो जाता है। 3. टट्टू के बिदकने पर लेखक की जान साँसत में थी। घोड़ा उनकी जान लेने पर उतारू था कि लेखक टट्टू से नीचे जमीन पर जा गिरे और जान बच गई। उन्हें चोट भी न आई थी। वे बार-बार भगवान को धन्यवाद दे रहे थे। कहाँ तो टट्टू द्वारा पहाड़ी से गिराए जाने पर उनकी जान भी न बचती और कहाँ वे सही सलामत बच गए। वे व्यंग्य करते हुए कहते हैं श्रद्धावान लोग तीर्थ यात्रा में प्राण चले जाने पर कहतें कि यदि तीर्थ यात्रा में प्राण चलें जाएँ तो सीधे बैकुंठ जाता है। परंतु मेरा बैकुंठ का टिकट कैंसिल हो चुका था। 4. तीर्थ यात्रा लोग विभिन्न मन्नतों के लिए करते हैं। उनमें एक मन्नत यह भी है कि उन्हें मरने के बाद मोक्ष मिले, बैकुंठ में निवास करें आदि। लेखक का व्यंग्य है कि वह टट्टू की सवारी पर तो जैसे बैकुंठ की ही तैयारी में ही था क्योंकि उसके बिदक जाने पर जान बचने की उम्मीद न रही थी। यदि प्राण चलें जाते तो बैकुंठ पाने की कहावत चरितार्थ हो जाती। बैकुंठवासी होना तीर्थयात्रा का सफल होना था परंतु प्राण बचने पर बैकुंठवासी न हुए और यात्रा सफल होते-होते रह गई।

भाषा-बोध

(क) 1. ईश्वरीय (विशेषण) 2. सन्नाटा (संज्ञा) 3. प्रेमकपूर (संज्ञा) 4. ज़मीन (संज्ञा) 5. एक दर्जन (विशेषण) 6. मजबूर (विशेषण)

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. ऊपर (ऊपरी) 2. नीचे (निचला) 3. पीछे (पिछला) 4. क्रोध (क्रोधी) 5. बाहर (बाहरी) 6. भीतर (भीतरी)

(घ) मंगल – एक ग्रह का नाम, शुभ

तीर – बाण, किनारा

अर्थ – किसी शब्द का अर्थ, धन

सूर – नेत्रहीन, सूर्य

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

16. मैं हूँ रोबोट

(क) 1. प्लास्टिक 2. शिराओं 3. मस्तिष्क 4. बोलने **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ)

(घ) अति लघु : 1. यंत्रमानव को 2. लोहा-इस्पात और प्लास्टिक से 3. गंदे, विषैले, और विषम वातावरण में

लघु उत्तरीय : 1. रोबोट के शरीर में फैले तारों में बहती विधुत धारा से उसे कार्य करने के लिए शक्ति प्राप्त होती है। 2. रोबोट के शरीर में लगे माइक्रोफोन में सुनता व लाउडस्पीकर से बोलता है।

3. रोबोट का नियंत्रण मनुष्य के हाथों में होता है अत: वह मनुष्य का गुलाम माना जाता है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. यंत्र मानव का शरीर लोहा-इस्पात और प्लास्टिक से बना होता है। टाँगें, भुजाएँ और अँगुलियाँ धातुओं से बने होते हैं। उसके शरीर में तारों का जाल बिछा होता है जिनमें विद्युत धारा बहती है जो रोबोट को कार्य करने की शक्ति देती है। उसमें एक कंप्यूटर को मस्तिष्क के रूप में लगाया जाता है जिसमें उसके नियंत्रण की सभी बातें संचित रहती हैं। रोबोट के शरीर में आँखों के स्थान पर कैमरे, कानों के स्थान पर माइक्रोफोन व बोलने के लिए लाउडस्पीकर लगा होता है।

2. रोबोट चंद्रमा की सतह पर जाकर वहाँ की मिट्टी खोदकर लाया था। मंगल ग्रह की सतह पर जाकर रोबोट ने वहाँ की लाल मिट्टी खोदी थी और उसका परीक्षण करके पता लगाया था कि मंगल ग्रह पर कोई जीवन नहीं है।

3. रोबोट अनेक ऐसे कार्य कर सकता है जिन्हें हाड़-मांस का इंसान नहीं कर सकता। वह

भूखा-प्यासा बिना कुछ खाए सर्दी और गर्मी में बिना थके और बिना ऊबे अकेले ही काम करता रहता है। वह बर्फीली ठंडक और तेज गर्मी में दोनों जगह एक जैसी तेज गति से काम कर सकता है। वह गंदे, विषैले और विषम वातावरण में काम कर सकता है। वह बिना हिचक और विरोध के अकेला ही बीस-पच्चीस लोगों के बराबर काम कर सकता है। रोबोट सुलगती हुई भट्टी में भी हाथ डालकर लोहे की तपती हुई लाल सलाखों को अपने हाथों में पकड़ सकता है। आग लगे भवन में बिना डरे व घबराए घुसकर आग बुझा सकता है।

भाषा-बोध

(क) 1. जीवन - मृत्यु 2. चतुर - मूर्ख 3. निर्जीव - सजीव 4. स्मृति - विस्मृति 5. सुगंध - दुर्गंध 6. सामान्य - विशेष 7. सेवक - स्वामी 8. विषैला - अमृतमय 9. परिश्रमी - आलसी

(ख) 1. मैं अकेला बीस-पच्चीस मजदूरों के बराबर कार्य कर सकता हूँ।

2. मैं तपती हुई सलाखों को पकड़ सकता हूँ।

3. मेरा शरीर हाड-माँस का नहीं है।

4. तुम सोचते होंगे कि मैं निर्जीव पुतला ये सब कैसे करता हूँ।

(ग) 1. तुम जब तक चाहते, कार्य कर सकते थे। (भूतकाल) तुम जब तक चाहोगे, कार्य कर सकोगे। (भविष्यत्काल) 2. कम्प्यूटर की स्मृति में वह सभी संचित रहता था, जो मुझे करना होता था। 3. तुमने सोचा होगा कि मैं निर्जीव पुतला ये सब काम कैसे कर सका। 4. मैं अकेला ही बीस-पच्चीस मजदूरों के बराबर काम कर सकता था।

(घ) 1. तुम शायद विश्वास नहीं करोगे कि मैं देख सकता हूँ, सुन सकता हूँ, बोल सकता हूँ और छूकर अनुभव भी कर सकता हूँ। 2. वाइकिंग प्रोब, जो मंगलग्रह के अध्ययन के लिए अमेरिका ने भेजा था, उसमें मैं ही था।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

17. खिलौना

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (स)

(ग) अति लघु : 1. राजकुमार ने 2. दीना के लाल ने 3. दास-दासियाँ

लघु उत्तरीय : 1. मैं तो वही खिलौना लूँगा से बालक का अपने मिट्टी के खिलौने के प्रति असंतोष झलकता है। 2. राजपुत्र राजपथ पर चल रहे बालक के खिलौने के प्रति आकृष्ट होकर उसे पाने के लिए मचल रहा था। 3. अपने मिट्टी के खिलौने को एक ओर फेंककर बालक कहता है कि तू ही बता, क्या राजपुत्र मिट्टी के खिलौने से खेलेगा? अर्थात् नहीं।

दीर्घ उत्तरीय : 1. दीना का लाल राजकुमार द्वारा खेले जाने वाले खिलौने को पाने की हठ कर रहा है। वह अपने मिट्टी के खिलौने से संतुष्ट नहीं है। राजकुमार द्वारा उछाल-उछाल खेला जाने वाला खिलौना उसे आकृष्ट कर रहा है। इस पर माता उसे बहलाती है कि बेटा, अपने ही खिलौने से खेलो। भले ही यह मिट्टी का बना है और राजकुमार का स्वर्ण-निर्मित है, परन्तु यह तो जानो कि जैसा खिलौना तुम्हारे पास है, वैसा राजकुमार के पास भी तो नहीं है। माता के कहने का तात्पर्य है कि उसका खिलौना भी तो अद्वितीय है। 2. राजकुमार अपने स्वर्ण-निर्मित खिलौने से संतुष्ट न था। वह उस खिलौने को लेने के लिए मचल उठा था जिसे राजपथ पर चलने वाला बालक बार-बार पुचकार रहा था। राजकुमार को बहलाते हुए दास-दासियाँ उसे बताते हैं कि वह खिलौना तो मिट्टी का बना होगा, तुम सोने के खिलौने से खेलो। वे सब उसे बहलाने का प्रयत्न करते हैं और यह बताने का प्रयास करते हैं कि राजकुमार का खिलौना श्रेष्ठ है और उस बालक का खिलौना निकृष्ट क्योंकि वह मिट्टी-सा साधारण है।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. माता (स्त्रीलिंग) 2. बालक (पुल्लिंग) 3. दादी (स्त्रीलिंग) 4. पुत्र (पुल्लिंग) 5. बच्चा (पुल्लिंग) 6. रानी (स्त्रीलिंग) 7. खिलौना (पुल्लिंग) 8. गड्डा (पुल्लिंग) 9. पत्थर (पुल्लिंग)

(ग) 1. हठी (हठ) 2. दुर्बल (दुर्बलता) 3. पवित्र (पवित्रता) 4. उत्कृष्ट (उत्कृष्टता) 5. व्यापक (व्यापकता) 6. प्रसन्न (प्रसन्नता)

(घ) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

18. क्यों निराश हुआ जाए?

(क) 1. आठ 2. बुराई, अच्छाई 3. ईमानदारी

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब)

(घ) अति लघु : 1. ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार 2. धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को धोखा दिया जा सकता है। इसलिए लोग कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में सकोंच नहीं करते। 3. धोखाधड़ी वाली बातों को चित्त में लाने से 4. क्योंकि भ्रष्ट लोग आने कर्तव्य को भूलकर सुख-सुविधा जुटाने में लगे रहते हैं।

लघु उत्तरीय : 1. प्राय: देखा जाता है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले भोले-भाले श्रमजीवी भी पिस रहें हैं, चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। इससे जीवन के महान मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था हिलने लगी है।

2. जो लोग कानून को कार्यान्वित करने वाले होते हैं, उनका मन सदा पवित्र नहीं होता। वे अपने कर्तव्य को भूलकर अपनी सुख-सुविधा जुटाने में लग जाते हैं और पात्र लोग लाभ से वंचित रह जाते हैं। 3. भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। अत: कानून को भी धर्म से जोड़कर देखा जाने लगा है और उतना ही महत्त्व रखता है जितना धर्म का पालन करना।

दीर्घ उत्तरीय : 1. रेलवे स्टेशन पर जल्दबाजी में टिकट लेकर बचे हुए पैसे भूल जाने पर लेखक को टिकट बाबू ने खोजकर पैसे लौटाए, तो उन्हें लगा कि सच्चाई और ईमानदारी लुप्त नहीं हुई हैं। मनुष्यता अभी बची हुई है। एक अन्य घटना उनकी बस यात्रा के दौरान हुई जब निर्जन स्थान पर बस खराब हो जाने पर कंडक्टर साइकिल लेकर चलता बना था। पता चला था कि उस स्थान पर पहले भी बस को लूटा गया था। विपत्ति में फँसें लोग तरह-तरह के कयास लगा रहे थे कि कंडक्टर यात्रियों के लिए खाली बस लेकर आ गया। यही नहीं, उसने लेखक के बच्चों के लिए पानी और दूध का भी प्रबंध किया। इससे लेखक ने माना कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है। 2. दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं हैं, परंतु यह उचित नहीं है कि बुराई के उद्घाटन में रस लेकर आनंद की अनुभूति की जाए। ऐसा करना भी एक प्रकार के दोष को चरित्र में स्थान देना है। इसी प्रकार लुप्त होती अच्छाई को खोजकर पूर्ण रस के साथ उजागर करने से समाज में अच्छा संदेश जाता है। ऐसा प्रयास होते रहना चाहिए। वास्तव में समाज में श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना हेतु बुराई से बचना व अच्छाई को स्थापित करने की क्रिया चलती रहे, यही प्रयास रहना चाहिए। 3. धर्म व्यक्ति के भीतर बसता है। यह चरित्र और आचरण से संबंध रखता है जबकि कानून बाहरी विषय है। धर्म का पालन मन, वचन, कर्म से करना पढ़ता है जिसे व्यक्ति का अंतर्मन जान सकता है कि वह कितना धार्मिक है परंतु कानून के पालन में लोग शिथिलता का व्यवहार करते हैं। अनेक बार अनेक प्रकार से लोग कानून का उल्लंघन करते हैं, धोखा देकर उससे बच जाते हैं, इससे भी अधिक कानून से रक्षक ही अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते और लगता है उल्लंघन करने वालों के प्रति उनकी वफादारी अधिक है। लोग धर्म को ईश्वर का विधान मानते हैं और कथित रूप से धार्मिक बने रहने का प्रयत्न करते हैं परंतु रेलगाड़ी बिना टिकट यात्रा करना, चोर बाजारी, मिलावट व भ्रष्टाचार करना और करके बच निकलना अपना चातुर्य मानते हैं। लोग जानते हैं और ऐसा मानते हैं कि धर्म विरूद्ध चलने पर ईश्वर दंड देगा। उससे बचने का उपाय नहीं है। परंतु कानून का उल्लंघन करने पर दंड से बचने के बहुतेरे रास्ते हैं जिन पर चलकर लोग बचते रहते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. सरल 2. मिश्र वाक्य 3. मिश्र वाक्य

(ख) 1. **भारतवर्ष** (व्यक्तिवाचक संज्ञा) **सपना** (जातिवाचक संज्ञा) **गाँधी** (व्यक्तिवाचक संज्ञा) 2. **सुख-दुख** (भाववाचक संज्ञा) 3. **ईमानदारी** (भाववाचक संज्ञा) **मूर्खता** (भाववाचक संज्ञा) 4.

प्रेम (भाववाचक संज्ञा)

(ग) 1. भारतवासी 2. गगनचुंबी 3. लाइलाज

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

19. सबसे सुंदर लड़की

(क) 1. लहरों 2. कनक 3. लड़की 4. सीपियों 5. शंख **(ख)** 1. ✓2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (ब)

(घ) अति लघु : 1. सीपियाँ 2. समुद्र से निकली रंग-बिरंगी कौड़ियों, नाना रूप के सुंदर शंख, विचित्र पत्थर से तरह-तरह के खिलौने, तरह-तरह की मालाएँ तैयार करता और पास के बड़े नगर में बेच आता। 3. कलाकार के रिश्तेदार के मित्र की बेटी। 4. कलाकार का बेटा।

लघु उत्तरीय : 1. लहरों को देखकर मंजरी को डर लगता था। 2. मंजरी को कनक ज़रा भी नहीं आती थी। 3. कलाकार ने खिलौने पक्षी सबसे सुंदर लड़की के लिए बनाया था। 4. कनक ने स्वयं से ईर्ष्या करने वाली लड़की के प्राण बचाकर मनुष्यता का परिचय दिया था।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कनक निर्धन परिवार में जन्मी थी। उसके पिता मछुआरे थे जो एक दिन समुद्र में ही कहीं दुर्घटना के शिकार हो गए थे जिससे परिवार को बड़ी क्षति हुई। परिवार के पालन-पोषण की जिम्मेदारी माँ पर आ गई जो मछलियाँ बेचकर घर का खर्च उठाती थी। कनक छोटे-छोटे शंखों की मालाएँ बनाकर बेचती थी। 2. कनक ने जब मंजरी को समुद्र में चट्टान की ओर बुलाया जिस पर वह स्वयं बैठी हुई थी, हर्ष ने कहा कि मंजरी वहाँ नहीं आ सकती। यह सुनकर मंजरी को स्वयं के द्वारा समुद्र के जल में जाने की कमजोरी के तथ्य को झुठलाने की आवश्यकता अनुभव हुई। इतना सोचते हुए उसकी दृष्टि एक सुंदर शंख पर गई। वह उस ओर बढ़ी तो समुद्र की तेज लहरों ने उसे बड़ी चट्टान की ओर लुढ़का दिया। उसके मुँह में खारा पानी भर गया और उसे होश भी न रहा। ये सभी घटनाएँ बहुत तेज़ी से हुई। इस प्रकार यह सब आनन-फानन में हो गया। 3. जब मंजरी को समुद्र की तेज लहरों ने चट्टान की दिशा में लुढ़काया और वह अचेत हो गई तो कनक ने कुछ लहरों के बीच से उसे निकाला। उसने उपचार करके उसके भीतर चले गए पानी को बाहर निकाला। इस प्रकार उसका जीवन सुरक्षित बच पाया था। इस कृतज्ञता के कारण मंजरी के कनक के प्रति व्यवहार में परिवर्तन आया था।

भाषा-बोध

(क) 1. **समुद्र**–जलधि, क्षीरनिधि, वारिधि। 2. **हाथ**–हस्त, कर, पाणि। 3. **लड़की**-बालिका, कन्या, बेटी। 4. **पिता**–जनक, तात, पितृ।

(ख) 1. **कनक** – अच्छी, दयालु, साहसी, गरीब, मेहनती; 2. **मंजरी**–डरपोक, लालची, मूर्ख, लापरवाह

(ग) 1. विचित्र - सामान्य 2. निडर - डरपोक 3. सुंदर - कुरूप, असुंदर, भद्दा 4. मित्रता - शत्रुता 5. क्रुद्ध - प्रसन्नचित्त 6. प्रशंसा - निंदा

(घ) 1. समुद्र – संज्ञा 2. विचित्र - विशेषण 3. लहरें - संज्ञा 4. चिल्लाना - क्रिया 5. टकराना - क्रिया 6. दावत- संज्ञा

(ङ) 1. आ + हार 2. अ + पूर्ण 3. अ + सामान्य 4. स + घन 5. स + कुशल 6. अ + समर्थ 7. सु + शील 8. अ + कारण 9. आ + चरण 10. अ + सफल **(च)** स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

20. वीर बालक

(क) 1. हथियारों 2. पारसाल 3. चाकू 4. खुदा 5. वर्षगांठ **(ख)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब)

(घ) अति लघु : 1. बलकरन की माँ ने 2. बलकरन ने 3. हिन्दू ग्रामीण ने 4. कल्याणी ने 5. ग्रामीण ने 6. जफर ने 7. तैमूर ने

लघु उत्तरीय : 1. बलकरन बारह वर्ष उत्तम सूझबूझ वाला निर्भीक बालक था। 2. स्वयं कीजिए। 3. तैमूर सेना सहित लूटपाट मचाता चला आ रहा था, इससे भयभीत लोगों में आत्मरक्षा हेतु भगदड़ मच गई थी। 4. गाँव में आकर सैनिक घरों को लूटते व गाँवों को बरबाद करते थे।

दीर्घ उत्तरीय : 1. गाँव के घरों को खाली पाकर जफर ग्रामीणों को 'कमबख्त' कहकर संबोधित करते हुए कहता है कि सब भाग गए। गाँव खाली है। वे लोग भूखे हैं और जफर के कथन से स्पष्ट होता

है कि उन्हें इस समय माल-असबाब, सोने-चाँदी से अधिक भोजन की आवश्यकता है। उसके अभिप्राय पर मुबारक कहता है कि यह तो मामूली-सी झोपडी है। यहाँ सोना-चाँदी नहीं मिल सकेगा। इस पर जफर कहता है कि हिन्दुस्तानी लोग मूल्यवान वस्तुएँ दीवारों में छिपाकर रखते हैं, अत: ध्यानपूर्वक देखने की आवश्यकता है। मुबारक अपना मत प्रकट करता है कि ग्रामीण भागते समय सोना-चाँदी साथ ले गये होगें। तभी जफर को मिठाइयाँ दिखाई देती हैं और वह उनकी ताजगी और स्वाद के विषय में बताते हुए खाता है और कहता है कि दो दिन से भोजन नहीं मिल सका था। 2. स्वयं कीजिए।

3. बलकरन की वर्षगाँठ उसके साहस के अनुरूप मनाई गई। उसने दुर्दांत तैमूर से साहसपूर्वक वार्तालाप किया और अपनी प्रतिभा के बल पर स्वयं को प्रस्तुत कर तैमूर को यह जता दिया कि उसकी राह सरल नहीं है। बलकरन की वर्षगाँठ तैमूर से गाँव की रक्षा करते हुए मनी और इस सबका श्रेय बलकरन ने अपनी माता के आर्शीवाद को दिया। वीर बालक की वर्षगाँठ चंदन के तिलक के स्थान अँगुली के खून से तिलक लगाकर मनाई गई।

भाषा-बोध

(क) 1. जंगल (पुल्लिंग) 2. दूध (पुल्लिंग) 3. तैमूर (पुल्लिंग) 4. गाँठ (स्त्रीलिंग) 5. बस्ती (स्त्रीलिंग) 6. बलकरन (पुल्लिंग) 7. माँ (स्त्रीलिंग) 8. तलवार (स्त्रीलिंग) 9. चाकू (पुल्लिंग) 10. कोठरी (स्त्रीलिंग) 11. घर (पुल्लिंग) 12. ग्रामीण (पुल्लिंग)

(ख) 1. वीर (वीरता) 2. बहुत (बहुतायत) 3. मोटा (मोटापा) 4. मारना (मार) 5. हारना (हार) 6. जीतना (जीत) 7. तीव्र (तीव्रता) 8. प्यासा (प्यास) 9. प्रसन्न (प्रसन्नता)

(ग) 1. **हक** = अधिकार 2. **हाजिर** = उपस्थित 3. **हुक्म** = आदेश 4. **इंतजाम** = प्रबंध 5. **खून** = रक्त 6. **वर्षगाँठ** = सालगिरह 7. **रक्षा** = बचाव 8. **तेज** = तीव्र 9. **निर्भीक** = साहसी 10. **पारसाल** = पिछले साल 11. **फौज** = सेना 12. **शुक्र** = आभार, मेहरबानी

(घ) 1.कोई नहीं, कमबख्त सब भाग गए।

2. मूर्ख हो तुम। इन तस्वीरों को पलटो, इनके पीछे दीवारों में कुछ होगा। ये लोग अपना सोना-चाँदी दीवारों में रखते हैं। 3.खामोश! गाजी तैमूर से नाचीज सवाल करता है, कि तुम कौन हो? कमबख्त! अगर बात करने की तमीज नहीं तो खामोश रह।

4. नहीं, तू मेरा छोटा-सा बहादुर दोस्त है। चाकू वाला दोस्त! इस हैसियत से तेरा मुझ पर हक है।

5. अच्छा, तू मुझसे दो दो हाथ लड़ने का भी हौंसला रखता है। पर पहले में दूध पीऊँगा, गला सूख रहा है।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

21. कच्चे दोस्त-1

(क) 1. सर्वाधिक 2. बाहर 3. पिता 4. कक्षाएँ 5. कॉपियाँ **(ख)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. स 2. ब 3. स

(घ) अति लघु : 1. नगर के बाहर एक छोटे से क्षेत्र में 2. कक्षा-6 में

लघु उत्तरीय : 1. नए विद्यालय में प्रवेश लेने से पूर्व आदित्य होनहार विद्यार्थी था। 2. जिस क्षेत्र में आदित्य रहता था, वहाँ का रहन-सहन अर्द्धशहरी था अत: नगर के समीप होते हुए भी वह स्थान कस्बे जैसा था। 3. आदित्य की कक्षा का वातावरण बहुत अव्यवस्थित था। 4. कक्षा में आदित्य को बैठने के लिये स्थान नही मिल पाता था, कुछ छात्र गुंड़ई करते, मार-पीट करते, श्यामपट् भी साफ दिखाई नहीं देता था।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कक्षा की अव्यवस्था के कारण आदित्य मन ही मन हीन भावना से ग्रसित मन मसोसकर रह जाता था, व उसके सारे सपने मिट्टी में मिल गये थे। 2. विद्यालय न जाकर आदित्य आवारा बच्चों के साथ उनकी बस्ती में जाकर खेलने लग गया था। 3. भिखारियों की बस्ती में रहने वाले बालक फिल्मी हीरो की तरह बाल रखना, उनके जैसे डायलॉग बोलना, उनकी तरह बातें करते थे।

भाषा-बोध

(क) 1. मुझे 2. उसे 3. सोना

(ख) 1. भूतकाल 2. वर्तमानकाल 3. वर्तमानकाल 4. भविष्यकाल 5. भविष्यकाल

आओ सीखें : स्वयं कीजिए

22. कच्चे दोस्त-2

(क) 1. परिवार 2. चाबी 3. परिस्थितियाँ 4. बाजार 5. फिल्म **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

5. ✗ **(ग)** 1. ब 2. ब 3. स

(घ) अति लघु : 1. राम प्रसाद की शक्त-सूरत, पहनावा सब भिखारियों जैसा था। 2. बर्फी खाई, फिल्म देखी।

लघु उत्तरीय : 1. उनके जीवन का लक्ष्य मात्र पेट भरकर जीवन व्यतीत करना था। 2. भिखारी बालकों की संगति में आदित्य अपने परिवार की डींगे मारता, अपनी झूठी अमीरी की शेखी बघारता। 3. दस रूपये से आदित्य ने पहले खरीदकर बर्फी खाई, दो बढ़िया पेन लिये, तथा फिल्म के दो टिकट खरीदे। 4. फिल्म देखते समय आदित्य को पिटाई का डर सता रहा था।

दीर्घ उत्तरीय : 1. आदित्य की माँ ने देखा की बक्से में ताला लगा है, व उसकी चाबी उसमें फंसी हुई है, तभी आदित्य की माँ को पता चल गया कि आदित्य ने पैसे चुराए है। 2. आदित्य के पिता को स्कूल जाकर पता चला कि आदित्य दो महीने से स्कूल नहीं आ रहा है इसी कारण उसका नाम स्कूल से काट दिया गया है। 3. आदित्य की माँ ने आदित्य के हाथ कसकर पकड़े व उसकी जमकर ठुकाई की।

भाषा-बोध

(क) 1. चोरी 2. चूक 3. रूलाई 4. अमीरी 5. गरीबी 6. चालाकी **(ख)** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग **(ग)** 1. ढका 2. हो गया 3. खोला 4. पहुँचा

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

अराध्या हिंदी-7

1. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. ब 2. अ 3. ब

(ग) अति लघु : 1. निरन्तर कठिन परिश्रम 2. असफलता को एक चुनौती मानकर स्वीकार करना चाहिए तथा देखना चाहिए कि आखिर आपकी मेहनत में क्या कमी रह गयी; उसमें सुधार कर फिर से ज्यादा उत्साह के साथ आगे बढ़ना चाहिए। 3. चुनौती 4. असफलता को चुनौती मानकर संघर्ष करने पर आप अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुँचेगे।

लघु उत्तरीय : 1. प्रयास करने वालों को सफलता मिलती है। 2. मेहनत करने पर भी जब कुछ नही मिलता तब व्यक्ति दुगुनी शक्ति से प्रयास करता है। 3. यह कि बार-बार असफल होने पर भी कोशिश करते रहो। 4. नहीं 5. जो असफल होने पर पुन: प्रयास नहीं करते, वे हार जाते है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. निरंतर प्रयास सफलता के लिए आवश्यक है। 2. बार-बार गहरे समुद्र में डुबकी लगाता है। 3. असफलता को चुनौती मानकर दुगुनी मेहनत के साथ, नींद, चैन त्यागकर पुन: हिम्मत के साथ उसका सामना करना चाहिए। 4. संसार हमारी जय-जयकार करता है।

भाषा-बोध:

(क) 1. मुट्ठियाँ 2. असफलताएँ 3. चुटकियाँ 4. लहरें 5. दीवारें 6. फुलझड़ियाँ

(ख) 1. सागर, जलनिधि, रत्नाकर 2. सलिल, तोय, पानी

(ग) 1. हार 2. उत्साह 3. साहस 4. असफलता

(घ) 1. गोताखोर 2. चिकित्सक 3. भविष्यवक्ता, ज्योतिषी 4. अनन्य

(ङ) 1. नर मनुष्य, कठोर 2. देहांत, गरीब 3. जो बूढ़ा न हो, झरना 4. पैर, भाट 5. दीर्घ, आँचल 6. धन, तरल पदार्थ

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

2. नींद का गणित

(क) 1. अति 2. युवकों 3. व्याधियों 4. भ्रम

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. ब 2. अ 3. अ 4. ब

(घ) अति लघु : 1. न कठोर न सरल मार्ग 2. अति हर चीज की बुरी है अति से बचना चाहए क्योंकि यह हर विषय में या हर कार्य का सन्तुलन बिगाड़ देती है। 3. अधिक सोने वाले व्यक्ति की सारी स्फूर्ति खत्म हो जाती है और वह ऊर्जाहीन-सा जान पड़ता है।

लघु उत्तरीय : 1."जीवन में भी ऐसी रीति-नीति अपनाओ। अति का अतिक्रमण न कर मध्यममार्ग का चयन करो। वही श्रेष्ठ व हानिरहित है।" 2. पागलों जैसी हो जाती है। 3. आवश्यकता से अधिक सोने वालों में अनेक शारीरिक अनियमितताओं के अतिरिक्त मानसिक गड़बड़ियाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं। 4. शरीर एवं मन:संस्थान संबंधी महत्वपूर्ण क्रियाओं पर नियंत्रण हार्मोन्स ही रखते हैं।

दीर्घ उत्तरीय : 1. जन्तुओं पर किये गये अध्ययन के ..... अत्यंत न्यून हो जाती है। 2. कठोर

शारीरिक श्रम करने वालों के .....परिणाम सामने नहीं आता। 3. नवजात शिशुओं में .... उलझनें पैदा होने लगती हैं।

भाषा-बोध :

(क) 1. ब 2. स 3. अ 4. स

(ख) 1. संबंध कारक 2. करण कारक 3. कर्म कारक 4. कर्ता कारक

(ग) 1. नाटकीय 2. ईर्ष्यालु 3. मानवीय 4. दु:खी 5. ग्रामीण 6. वार्षिक 7. मासिक 8. आलसी 9. लोभी

(घ) 1. वह दिल्ली में कितने वर्ष रहा? 2. दुकानें बंद हो चुकी हैं। 3. गोपाल कक्षा में शोर मचा रहा है। 4. दीदी पत्र लिखती है।

(ड़) 1. विशेषण 2. क्रिया विशेषण 3. क्रिया विशेषण 4. विशेषण 5. आज्ञावाचक वाक्य

(च) 1. इच्छावाचक वाक्य 2. संकेतवाचक वाक्य 3. प्रश्नवाचक वाक्य 4. विस्मयवाचक वाक्य 5. आज्ञावाचक वाक्य

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

3. सच्ची वीरता

(क) 1. अरण्य 2. वीरता 3. पवित्रता 4. वीरता

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स)

(घ) अति लघु : 1. क्योंकि उसने कहा कि में ही ब्रह्मा हूँ। 2. क्योंकि हम सब केवल दिखाने के लिए वीर बनना चाहते हैं।

लघु उत्तरीय : 1. सच्चे वीर पुरुष धीर, गंभीर और आजाद होते हैं। 2. गुलाम ने राजा द्वारा डराए जाने पर कहा, "मैं फाँसी पर चढ़ जाऊँगा, पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ।" 3. राजा मारपीट कर कायर लोगों को डराते थे।

दीर्घ उत्तरीय : 1. वीरता एक प्रकार की अंत: प्रेरणा है जिसकी अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी उसकी अभिव्यक्ति लड़ने-मरने में, खून बहाने में, तलवार-तोप के सामने जान गँवाने में होती है तो कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में।

2. वीरता दैवीय गुण है। सत्य जब संकट में खड़ा होता है, तब किसी वीर द्वारा उसकी रक्षा की अपेक्षा की जाती है। वीरता वीरों के वेश में सदा सत्य की रक्षार्थ प्रकट होती है। दुनिया धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर खड़ी है। वास्तव में वीर ही धर्म की रक्षा कर अधर्म का दर्पण चूर करते हैं। तभी तो उनके जीवन को ईश्वरीय जीवन कहा गया है।

3. देवदार के वृक्ष वनों में स्वयं ही उत्पन्न होते हैं और बिना किसी बाह्य सहायता, पोषण के प्रकृति दत्त गुणों के आधार पर ही संपूर्ण आकार ले लेते हैं। इसी प्रकार वीर पुरुष भी स्वयंमेव ही उत्पन्न होते हैं। वीरों में वीरोचित गुण स्वयमेव ही घर कर लेते हैं और अचानक ही उनका प्रकटीकरण हो जाता है।

4. वीरता कोई प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। वह तो सत्य और धर्म की रक्षार्थ समय आने पर किसी वीर में प्रकट हो जाती है। वह कोई क्षणिक भाव नहीं है कि पल-पल में अपना प्रकटीकरण करे। वीर को धीर और गंभीर माना जाता है, और जहाँ ये गुण होते हैं, वहाँ क्षणिक नहीं, स्थायी भाव होता है जबकि टीन के बर्तन की तरह गर्म और ठंडा होना तो रूष्ट-तुष्ट भाव बन जाते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. घर (घरेलू) 2. भारत (भारतीय) 3. धैर्य (धैर्यवान) 4. रंग (रंगीन, रंगीला) 5. पहाड़ (पहाड़ी) 6. कीमत (कीमती) 7. संसद (संसदीय) 8. रोग (रोगी) 9. गंभीरता (गंभीर)

(ख) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

4. राखी का मूल्य

(क) 1. वीरव्रत 2. हुमायूँ 3. शीतल प्रलेप 4. मेवाड़

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स)

(घ) अति लघु : 1. कर्मवती महाराणा सांगा की धर्मपत्नी थी। 2. मेवाड़ के राजपूत गुजरात के शासक बहादुरशाह के विरुद्ध युद्ध लड़ रहे थे।

3. कर्मवती को युद्ध में हार की आंशका थी, सो हुमायूँ से सहायता प्राप्त करने के लिए उसे रक्षा-सूत्र भिजवाया।

4. हुमायूँ के पास रक्षा-सूत्र लेकर दूत गया था।

लघु उत्तरीय : 1. राजपूत वीरता से ..... आन की रक्षा न कर पाएँगे। 2. बाघ सिंह ने कर्मवती से कह कि और भी तो बाधाएँ है। क्या हुमायूँ पुराने बैर को भुला सकेगा? सीकरी के युद्धों के जख्मों के

निशान क्या आसानी से मिट सकेगे। 3. कर्मवती को विश्वास था कि हुमायुँ सारे वैर-भाव भुलाकर उसकी राखी को स्वीकार करेगे। 4. हुमायूँ पत्र पढ़ते-पढ़ते मग्न हो जाता है और उस पत्र को जादू का पिटारा कहता है और यह भी कहता है कि मेरे सूने आसमान में उन्होंने मुहब्बत का चाँद चमकाया है। वह कर्मवती को बहन मानकर मेवाड़ की रक्षा का वचन देता है और दुश्मनी को भुला देता है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. हुमायूँ की उदारता यही है कि जिस राज्य से उसकी शत्रुता चल रही थी, उस राज्य ने उससे सहायता माँगी और संकट की स्थिति में उसने मेवाड़ को न केवल सहायता देने का विचार किया, अपितु उस पर भाई के रूप में जो विश्वास व्यक्त कर रक्षा-सूत्र भेजा गया, उसकी मर्यादा का निर्वहन करने का भी उसने वचन दिया। पुरानी वैमनस्यता को भूलकर उसने अपने प्रति विश्वास रखने वाली धर्म बहनों को अभय दान दिया और बोला कि बहिन कर्मवती! तुम्हारी राखी मुझे वही ताकत दे, जो राजपूतों को देती आई है। ऐसे समय में जब उसका स्वयं का युद्ध शेर खाँ से चल रहा था और वह सेना लेकर युद्ध की तैयारी में था, परिणाम की चिंता न करके मेवाड़ की रक्षा का वचन दे दिया।

2. तातारखाँ द्वारा राजपूतों को दुश्मन बताने पर हुमायूँ ने एक आदर्शवादी के रूप में कहा कि जिन्हें हम दुश्मन समझते हैं, वे सब हमारे भाई हैं। हम एक खुदा के बेटे हैं। वास्तव में यही वह विचार है जो मनुष्य को वसुधैव कुटुंबकम् की सार्थकता से परिचित करा पाता है। जब कोई वीर जाति या पुरुष असहाय हो जाता है, तब यह सहायता का पात्र होता है। जबकि अप्तायी दंड का भागी। वीर असहाय के प्रति सहायता का भाव ईश्वरीय प्रेरणा है और यही विचार उत्पन्न करता है कि पृथ्वी पर शांति स्थापित रहनी चाहिए। दुश्मनी मिटाने के लिए यह विचार अत्यावश्यक है कि सबको ईश्वर की संतान समझकर भाईचारा बनाए रखा जाए।

भाषा-बोध

(क) 1. भ्रातृत्व (संज्ञा) 2. मनुष्यत्व (संज्ञा) 3. शीतल (विशेषण) 4. खुशकिस्मत (विशेषण) 5. मेवाड़ (संज्ञा) 6. पाक (संज्ञा)

(ख) 1. खूब 2. इधर-उधर, दाएँ-बाएँ 3. अच्छी तरह 4. रातभर

(ग) 1. शरीर (शारीरिक) 2. स्वभाव (स्वाभाविक) 3. अपमान (अपमानित) 4. प्यार (प्यारा) 5. चलना (चलाऊ) 6. आगे (अगला) 7. बाहर (बाहरी) 8. व्यापार (व्यापारिक)

(घ) 1. कौन आया और कौन गया, मुझे पता ही नहीं चला। 2. अमिताभ ने पूछा, "यह क्या हो गया, रवि?" 3. नम्रता, सुकर्म और परोपकार मनुष्य के आभूषण हैं। 4. अध्यापक ने कहा, "पृथ्वी गोल है और सूर्य की परिक्रमा करती है।" 5. समस्त पशु-पक्षी, गाय, भैंस, चील, कौए तथा कीट-पतंगे सभी व्याकुल थे।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

5. सत्साहस

(क) 1. गुप्त 2. अवसर 3. साहस 4. पशुवत् 5. चरित्र **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स)

(घ) अति लघु : 1. हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। 2. क्योंकि क्रोधवश या स्वार्थ से परिपूर्ण साहस प्रशंसनीय नहीं होता, वह नीच श्रेणी का साहस कहलाता है। स्वार्थ की भावना त्यागर ही मनुष्य एक सच्चा कर्तव्यनिष्ठ साहसी बन सकता है। 3. अपने देश और राजा की सेवा के लिए पहुँच गया, स्वदेश छोड़ने पर भी उसने मराठों से अपने देश मारवाड़ की रक्षा की।

लघु उत्तरीय : 1. साहस की तीन श्रेणीयाँ हैं- (i) निम्न या नीच श्रेणी (ii) मध्यम श्रेणी व (iii) उच्चकोटि का साहस।

2. सत्साहस कर्तव्य के पालन में नि:स्वार्थ साहस का प्रकटीकरण है। 3. सत्साहसी कर्तव्यपरायण होता है तथा दूसरों से भी कर्तव्यपरायण होने की अपेक्षा करता है। 4. साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति होती है जिसके बल पर धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के लिए ही नहीं, किंतु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति तक की सहायतार्थ संकट का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कर्तव्य का ज्ञान हो जाने पर ही तो कोई मनुष्यत्व को प्राप्त हो पाता है अन्यथा पशु और मनुष्य में कोई भेद नहीं है। आहार, निद्रा और भय तो मनुष्य व पशु में समान रूप से वास करते हैं परंतु कर्तव्यज्ञान केवल मनुष्य में होता है। यदि उसमें यह गुण नहीं है तो वह पशु ही है।

2. इतिहास तो वास्तव में साहसी ही रचते हैं, कायर तो प्रतिदिन मरते ही रहते हैं। साहसी के पीछे देश व समाज चलता है। साहसी के कार्य देश व समाज को प्रकाशमान करते हैं जबकि कायर की तो स्वयं के स्वार्थ की लालसा भी पूर्ण नहीं होती। जिस देश या जाति में जितने साहसी होंगे, वह देश व जाति उतनी ही आगे बढ़ेगी व संसार तथा अन्य देश व समाज पर अपनी छाप छोड़ेगी।

भाषा-बोध

(क) 1. कायर (कायरता) 2. मदांध (मदांधता) 3. अनभिज्ञ (अनभिज्ञता) 4. दृढ़ (दृढ़ता) 5. पवित्र (पवित्रता) 6. साहसी (साहस) 7. गरीब (गरीबी) 8. शीतल (शीतलता) 9. सुखी (सुख)।

(ख) 1. पर्वतों से बहते **झरने** बड़ा मनोरम दृश्य उपस्थित करते थे। 2. चार **रोटियाँ** बचीं जो उसने भिखारी को दे दीं। 3. पुजारी ने सारी **मालाएँ** एकत्र करके अलमारी में रख दीं। 4. प्रातः कालीन सूर्य की **किरणों** ने जग को रोशन कर दिया।

(ग) क्रोधांध = क्रोध में अंधा, कर्तव्यपरायण = कर्तव्य में परायण, अग्निकुंड = अग्नि का कुंड, देशभक्ति = देश के लिए भक्ति।

(घ) 1. **कम** (संख्यावाचक विशेषण) 2. **थोड़ी** (परिमाणवाचक विशेषण) 3. **सरल**, **सहज** (गुणवाचक विशेषण) 4. **थोड़ा-सा** (परिमाणवाचक विशेषण) 5. **तुम्हारे** (सार्वनामिक विशेषण) **(ङ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

6. कृष्ण की चेतावनी

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (स)

(ग) अति लघु : 1. मित्रता की राह बताने, सुमार्ग पर लाने, भीषण विध्वंस बचाने तथा दुर्योधन को समझाने के लिए भगवान हस्तिनापुर आए थे। 2. भगवान को दुर्योधन से अपेक्षा थी कि यदि वह आधा राज्य नहीं दे सकता तो सिर्फ पाँच गाँव ही दे दे और भीषण-विध्वंस होने से रुक जाए। 3. धृतराष्ट्र और विदुर

लघु उत्तरीय : 1. भगवान ने कुपित होकर भीषण हुंकार के साथ अपने विराट रूप का प्रदर्शन किया। 2. पांडव पाँच गाँव पाकर भी समझौता करने को तैयार थे।

दीर्घ उत्तरीय : 1. दुर्योधन के सभी कार्य पांडवों को हानि पहुँचाने के लिए होते थे। उसका उनके प्रति भ्रातृ भाव न था। व्यक्ति जब किसी कि हानि और उस हानि के द्वारा अपने लाभ के लिए विचार करता है तो यह उसकी अत्यंत संकीर्ण, दानव मानसिकता का परिचायक होता है। वास्तविकता यह है कि जगत में कोई किसी की हानि नहीं कर सकता, यहाँ तो सभी अपने अंत की ओर बढ़ते हैं। दूसरों के प्रति हानि पहुँचाने का भाव विवेक के मर जाने पर ही उत्पन्न होता है। इसलिए जब विवेक मर जाता है तो व्यक्ति दुर्योधन की-सी विचारधारा को प्राप्त होता है। विवेक मर जाने पर उसने अपने नाश के बीज बोए जिसमें उसने कृष्ण की मैत्री-संधि वार्ता को मानने के बजाय उन्हें बाँधने का उपक्रम करके उन्हें कुपित कर दिया जिससे वे कह उठे कि अब याचना नहीं रण होगा, जीवन, जय या कि मरण होगा।

2. भगवान ने चेतावनी दी कि दुर्योधन मैंने तेरे हित की बात कहीं, पर इन मैत्रीपूर्ण हितवचनों को न मानकर मुझे शांतिदूत को ही बाँधने का उपक्रम किया, ले अब मैं अपना अंतिम संकल्प तुझे सुनाकर यहाँ से प्रस्थान करता हूँ। अब याचना नहीं अपितु रण होगा जिसमें या तो विजय मिलेगी या मृत्यु। ऐसा भयंकर युद्ध होगा जैसे तारों के समूह परस्पर टकरा रहें हों और उनके टकराने से तेज अग्नि भूमि पर बरस रही हो। इससे शेषनाग का फन डोलेगा। जिससे पृथ्वी कंदायमान होगी और काल विनाश हेतु अपना मुँह खोलेगा। बाणों से विष की बूँदें छूटेंगी, लोग धराशायी होंगे जिससे सियारों के समूह उनके शब्दों पर दावत उड़ाएँगे।

भाषा-बोध

(क) 1. भगवान - हरि, ईश्वर, परमात्मा।

2. तलवार – असि, करवाल, चंद्रहास।
3. कौआ – काग, काक, वायस।
(ख) 1. क्या उसे **लिखना** आता है? 2. वह **लिखना** नहीं जानता। 3. **टहलना** एक अच्छा व्यायाम है। 4. वह सुबह-शाम **टहलने** जाता है।
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

7. रोमांचकारी कुश्ती

(क) 1. निस्तब्धता 2. सजगता 3. अपार
(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗
(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (स)
(घ) अति लघु : 1. शूकराज चौकन्ना ..... अंतिम निर्णय कर लिया हो। 2. दोनों की कुश्ती बराबर की थी। उनकी कुश्ती का जोड़ बराबर रहा और अंत में वे दोनों शांत हो गए। 3. शेर पर बुरी .... आ फँसा, बिना सोचे समझे कभी जोश-में-होश नहीं खोने चाहिए। क्योंकि जोश में आकर मुसीबत में फँसने से सिर्फ पछताना पड़ता है।
लघु उत्तरीय : 1. जेम्स साहब को सूचना मिली थी कि कोठी से कुछ दूरी पर शेर ने गाय मारी है। 2. गाय का मृत शरीर पाने पर शेर के शिकार के लिए बैठने का स्थान बनाया जाने लगा। 3. जेम्स साहब और उनके साथी योजना की सिद्धि के लिए एक गड्ढे को चारों ओर से काँटों और लक्कड़ से सुरक्षित करके उसमें बैठ गए। 4. जेम्स साहब को धुँधले क्षितिज पर रात की लंबी और भूरी छाया में एक भीमकाय आकृति दिखाई दी जो एक सूअर था।
दीर्घ उत्तरीय : 1. शेर घात लगाकर कभी लपकता और कभी सूअर के चारों ओर रेंगता-सा चलता जिससे किसी प्रकार हमला कर सकें। वह एक बार लंबा होकर जमीन से मिल गया। पुट्ठे स्नायुओं को खींचकर उसने अपने फुर्तीले शरीर को एकत्र-सा किया और सूअर पर आक्रमण कर दिया। उसके प्रहार से सूअर के सिर और गालों की खाल और माँस के चिथड़े लटक रहे थे। उसके पंजों ने सूअर को फाड़ डाला। सूअर लड़खड़ाकर आगे गिरा।
2. यौवन की उन्मत्तता शेर पर हावी थी, इसी से अभिप्राय है कि वह जवानी की धार में बह रहा था। जवानी की धार में बहता शेर शक्ति, हिंसा और फुर्ती से परिपूर्ण था। जवानी इन सभी गुणों का सम्मिश्रण मानी जाती है। भला फिर शत्रु को परास्त करने में क्या कठिनाई!
भाषा-बोध
(क) 1. अप + कार = अपकार 2. परा + भव = पराभव 3. निर् + अपराध = निरपराध 4. परा + जय = पराजय
(ख) 1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. अपादान कारक 4. करण कारक 5. संप्रदान कारक
(ग) 1. सिरदर्द-सिर का दर्द (संबंध तत्पुरुष)
2. आजन्म- जीवनभर (अव्ययीभाव समास)
3.नीलकंठ-नीला है कंठ जिसका(बहुव्रीहि समास)
(घ) 1. शेर ने अपने जीवन में न जाने कितने सूअरों का काम तमाम कर डाला था। 2. शेर सूअर पर हमला करने के लिए घात लगाए बैठा था। 3. शेर और सूअर की भयंकर लड़ाई हुई जिसमें सूअर कुछ ही देर में ठंडा हो गया। 4. कहते हैं सूअर एक बार शत्रु के साथ लड़ने की ठान ले तो फिर पीठ नहीं दिखाता। 5. क्षण भर में ही शेर और सूअर एक -दूसरे पर टूट पड़े।
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

8. सर चंद्रशेखर वेंकटरमन

(क) 1. विचार 2. सीपियाँ 3. फटे 4. धूमकेतु
(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ **(ग)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ)
(घ) अति लघु : 1. धनजी भाई ने कहा, "रमन इंस्टीट्यूट देखोगे?" 2. यह आम रास्ता नहीं है। बिना आज्ञा प्रवेश वर्जित है। 3. पंद्रह मिनट। 4. वे तीव्रगति से बोलते चले जाते थे। 5. क्या फटे हुए कोट में चित्र खींचकर दुनिया को दिखाना चाहते हो कि मैं फटा कोट पहनता हूँ?
लघु उत्तरीय : 1. कोट, पतलून, जूता, दक्षिण .... व्यक्तित्व है इनका। 2. क्योंकि देखने में वह बहुत ही सामान्य से व्यक्ति लग रहे थे। साधारण सी वेशभूषा में वे एकदम से आ जाते हैं। 3. भारतरत्न और कलकत्ता विश्वविद्यालय। 4. उनके गंभीर और सहज स्वभाव का।
दीर्घ उत्तरीय : 1. उनमें अनुसंधानकर्ता की लगन थी जिस कारण उन्होंने भारतीय अर्थ विज्ञान की असिस्टेंट एकाउंटेट जनरल की नौकरी छोड़ दी और विज्ञान के क्षेत्र में आ गए और लगन के बल पर विश्व के सर्वोच्च वैज्ञानिकों की श्रेणी में पहुँचकर

ही रुके व नोबल पुरस्कार के अधिकारी बने।

चंद्रशेखर वेंकटरमन में सौंदर्यप्रियता थी जिस कारण वे न केवल एक सुंदर शहर में रहते थे, उन्हें डायमंड प्रिय हैं, उनके संग्रहालय में अनेक प्रकार की वस्तुएँ व समुद्र के नाना रूप में जीव-जंतु हैं, वे प्रकाश, तथा रंग के जादूगर हैं। शिशु की-सी सरलता से वे आग्रहपूर्वक सभी वस्तुएँ दिखाने का चाव रखते थे और वृद्ध की सनक लिए बातें करना, व मौन रहना उनके व्यक्तित्व में सम्मिलित थे।

2. दुनिया में बड़े काम सौंदर्य की ही प्रेरणा से होते हैं। विज्ञान अनुसंधान की वस्तु है। जिज्ञासा के बल पर अनुसंधान किए जाते हैं। जिज्ञासा कल्पना से उत्पन्न होती है और कल्पना सौंदर्य बोध से जन्म लेती है। इस सौंदर्य बोध के बल पर वैज्ञानिक नित नई वस्तुओं का आविष्कार करके संसार को अधिक सौंदर्यमयी बनाने की ओर अग्रसर रहते हैं। 3. देश-दुनिया में जिन्हें भी ऊँचाई प्राप्त हुई, जिन्हें यश प्राप्त हुआ, वह उनकी सहजता और सरलता के ही कारण। अभिमानी का यशगान कोई नहीं करता परंतु सहज भाव से यश को प्राप्त हुए व्यक्ति का सभी गुणगान करते हैं। या यूँ कहा जाए कि जो श्रेष्ठता को प्राप्त होते हैं, वे उतने ही सरल और सहज बन जाते हैं क्योंकि सरलता और सहजता के आधार पर ही तो श्रेष्ठता प्राप्त होती है। इस प्रकार आगे बढ़ने पर ये गुण और भी वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. उनके संग्रहालय में नाना प्रकार के शंख, सीपियाँ, तितलियों का भंडार, समुद्र के नाना रूप जीव-जंतु हैं। 2. घूमते-घूमते सहसा हमारे आतिथेय धनजी भाई बोल उठते हैं, "रमन इंस्टीट्यूट देखोगे?" 3. एक व्यक्ति तेजी से अंग्रेज़ी में कह रहा है, "मैं जानता हूँ तुम बिना आज्ञा अंदर आए हो, पर कोई बात नहीं।"

(ख) 1. सहज (विशेषण) 2. सुंदर (विशेषण) 3. सरल (विशेषण) 4. विज्ञान (संज्ञा) 5. वैज्ञानिक (संज्ञा) 6. असुंदर (विशेषण) **(ग)** स्वयं कीजिए।

(घ) 1. भूगोल (भौगोलिक) 2. नगर (नागरिक) 3. दिन (दैनिक) 4. सप्ताह (साप्ताहिक) 5. नीति (नैतिक) 6. इतिहास (ऐतिहासिक)।

(ङ) 1. मेघ - बादल, वारिद, नीरद।

2. आकाश - नभ, गगन, व्योम।

3. समुद्र - नीरनिधि, सागर, रत्नाकर।

(च) 1. **सौंदर्य** = सुंदरता 2. **हठात्** = हठपूर्वक, बलपूर्वक; 3. **मौन** = चुप्पी 4. **भव्य** = अत्यंत सुंदर 5. **अद्‌भुत** = आश्चर्यजनक 6. **तीव्र** = तेज 7. **सहसा** = अचानक 8. **अलौकिक** = दिव्य, 9. **आत्मीयता** = अपनापन

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

9. नेताजी का पत्र

(क) 1. सुरक्षित 2. किताबें 3. समाचार-पत्र 4. एकाकी 5. श्रद्धा

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (स) 4. (ब)

(घ) अति लघु : 1. नेताजी के पत्र का प्रमुख विषय लोकमान्य तिलक के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करना है। 2. सुभाषचंद्र बोस का बरहमपुर जेल से मांडले जेल के लिए स्थानांतरण हुआ था।

3. सुभाषचंद्र बोस ने मांडले जेल में लंबे समय तक लोकमान्य की दिव्य उपस्थिति के कारण उसे तीर्थ कहा है।

लघु उत्तरीय : 1. शरीरिक और मानसिक यंत्रणाएँ दी जाती थी। 2. देशवासी लोकमान्य की महत्ता ....स्थान मिलना चाहिए। 3. इसके लिए हमें .... अड़िग बनाए रखना होता है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. विश्व भगवान की कृति है। विश्व के सभी प्राणी, जीव-जंतु प्रकृति से स्वतंत्र रूप से विचरण करने को अवतरित होते हैं। यही प्रकृति का नियम है। जब कोई प्राणी किसी अन्य प्राणी का हनन करता है, तो वह प्रकृति विरुद्ध कार्य करता है। जेलें भी प्राणी की स्वतंत्रता का हनन करने का मानव-निर्मित साधन हैं। मनुष्य को जो करना चाहिए, वह उस सीमा तक नहीं कर पाता। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह अन्य व्यक्तियों अथवा प्राणियों को जेलों में डालकर उनकी स्वतंत्रता का हनन करता है। मनुष्य अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए अन्यों की स्वतंत्रता का हनन करता है और जेलें इस कृतित्व की निशानी हैं। 2. बंदी जीवन किसी को भी प्रिय नहीं हो सकता। स्वतंत्रता सभी को प्रिय है और उसी में व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो पाता है। परंतु स्वतंत्र रहने वाले प्राणी को यदि बंदी बना लिया जाए तो वह पराधीन हो जाता है। विश्वता में वह अपनी इच्छा से कुछ भी कर पाने

में समर्थ नहीं होता। ऐसे में वह अपने सभी कौशलों की इतिश्री समझ लेता है। यही उसकी आत्मा का ह्रास है। ऐसे में वह कुछ भी अनुकूल नहीं अपितु प्रतिकूल ही पाता है। वास्तव में विवशता ही आत्मा का ह्रास है। 3. लोकमान्य तिलक एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिन्हें पल-पल देश की खबर और देशवासियों के हितचिंतन का समाचार पाने की आवश्यकता होती थी। परंतु उन्हें इन सब कार्यों से रोककर कारावास दे देना देश के प्रति उनकी सेवा को छीन लेना था जहाँ वे देश व देशवासियों के विषय में कोई जानकारी न रख पा सकने की स्थिति में थे। यह उनके लिए यंत्रणा ही थी।

भाषा-बोध

(क) 1. अक्षुण्ण = ज्यों-का-त्यों 2. यंत्रणा = पीड़ा 3. परिवेश = वातावरण 4. शिथिल = निष्क्रिय 5. अडिग = विचलित न होने वाला 6. दंड संहिता = दंड देने वाले नियमों का क्रमबद्ध संकलन 7. हननकारी = निष्ठुर 8. साँत्वना = तसल्ली 9. प्रणयन = रचना ग्रंथ लिखना, 10. एकाकी = अकेलेपन का भाव 11. मंदाग्नि = पेट की एक बीमारी 12. बलात् = जबरदस्ती। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) 1. इच्छा 2. समर्थन **(घ)** 1. भक्षक 2. मलिन

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

10. पृथ्वी का स्वर्ग

(क) 1. ढीले, मजबूत 2. दया 3. नोट 4. लोटे।

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब)

(घ) अति लघु : 1. रुपयों से भरा दुशाला 2. पृथ्वी ..... ई का स्वर्ग! ..... बिल्कुल अलग। 3. क्योंकि इस प्रकार रुपये लेना उसे पाप लगा, ऐसा पाप करने के कारण ही उसके पति की भी मृत्यु हुई थी, वह अब अपने बच्चे को खोना नहीं चाहती थी। 4. भिखारिन के रूप में (पाप से घृणा करने के कारण)

लघु उत्तरीय : 1. संदूक के बोझ से बोझावाला की गर्दन झुकी जा रही थी। 2. सेठ दुलीचंद ने संदूक में कपड़े भरे थे जिनमें एक दुशाले में पाँच हजार रुपये थे। 3. सेठ दुलीचंद संदूक में रखे पाँच हजार रुपये छिपाना चाहता था।

दीर्घ उत्तरीय : 1. जहाँ पाप होता है, वहाँ सभी दुर्गुण पाए जाते हैं। ऐसा स्थान नरकतुल्य होता है परंतु जहाँ लोग पाप से घृणा करते हों, वहाँ पाप हो ही नहीं सकता। ऐसा स्थान जहाँ लोग पाप से घृणा करें, स्वर्गतुल्य माना जाता है। प्रस्तुत पाठ में दो परस्पर विरोधी चरित्र वाले पात्र हैं। अचल और भिखारिन पाप से घृणा करने वाले पात्र हैं। 2. भिखारिन को अपने बच्चे के इलाज के लिए पैसों की सख्त जरूरत थी। उसे दुशाले में लिपटे पाँच हजार रुपये मिल गए थे जिनका पता अचल को पता न था। भिखारिन अत्यंत निर्धन होने पर भी लालच से परे रही। लोभ पाप का मूल बताया जाता है। उसे पाप से घृणा थी। वह निर्धन तो थी, परंतु पाप से घृणा करने पर उत्पन्न ईमानदारी के सद्‌गुण ने उसकी स्थिति को स्वर्गतुल्य बना दिया था। वह स्वयं जाकर रुपये वापस कर आई थी और सिद्ध कर दिया था कि ईमानदारी लोभरूपी पाप पर विजय पा सकती है। सद्‌गुणों से युक्त ऐसी दशा और स्थिति, यही तो स्वर्ग है।

भाषा-बोध

(क) 1. **दिमाग फिर जाना**= बुद्धि काम न करना। एक हजार रुपये की चीज सौ रुपये में बेच दी, कहीं तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया है।

2. **ताक लगाकर बैठ जाना** = अवसर की प्रतीक्षा करना।

चोर ताक लगाए बैठा रहा कि कब घर का मालिक सोए और वह सामान चुराकर घर से निकल सकें।

3. **अंधा होना** = तथ्यों की अनदेखी करना।

देखकर नहीं चलते , सारा सामान गिरा दिया, अंधे हो क्या?

(ख) 1. पढ़ाकू (आकू) 2. पाठक (अक) 3. झगड़ालू (लू) 4. लड़ाई (आई) 5. खिलाड़ी (आड़ी) 6. छलावा (आवा)

(ग) 1. हम (हमसफर) 2. प्र (प्रसिद्ध) 3. उत् (उत्थान) 4. अभि (अभिव्यक्त) 5. अव (अवशेष)

(घ) 1. क्षम्य 2. अक्षम्य 3. स्थायी 4. सुलभ 5. अजातशत्रु 6. प्रियदर्शी

(ङ) 1. भिखारी (पुल्लिंग)2. भिखारिन (स्त्रीलिंग) 3. संदूक (पुल्लिंग) 4. दुलीचंद (पुल्लिंग) 5. पृथ्वी (स्त्रीलिंग) 6. बंडल (पुल्लिंग)

(च) 1. क्या, कुछ 2. जो, उसे

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

11. प्राणी वही प्राणी है

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ख) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

(ग) अति लघु : 1. सूखे अधरों-को तृप्त करने का। 2. सच्चा प्राणी वही है जो किसी भी लालच के वशीभूत न हो, तथा संकट आने पर विचलित न हो। 3. सच्चा प्राणी असहाय का सहारा बनता है वह लँगड़े के लिए पाँव और लूले के लिए हाथ बन जाता है। 4. जो सत्य की रक्षार्थ हो।

लघु उत्तरीय : 1. तापित से अभिप्राय 'गर्मी' से अतृप्त कंठ लिए बेचैन प्राणी। 2. सूखे हुए अधरों को शीतल जल से कंठ तृप्त करके ही वाणी मिल पाती है। 3. लहरों से अभिप्राय है 'विपरीत परिस्थितियाँ'।

दीर्घ उत्तरीय : 1. सच्चा प्राणी सभी परिस्थितियों में समभाव से रहता है। न तो वह अनुकूल परिस्थितियों में सुख मानता, न ही विपरीत परिस्थितियों में विचलित होता है। वह किसी भी प्रकार के लालच के वशीभूत होकर सत्य को त्यागता नहीं है। 2. जिस प्रकार पानी का धर्म है कि वह गर्मी से बेचैन, सूखे अधरों को तृप्त कर कंठ को शीतलता प्रदान करता है, उसी प्रकार प्राणी का धर्म है कि वह सत्य की रक्षार्थ, उसे पोषित करने में ही अपना जीवन लगा दे। लहरों का आना अर्थात् कठिन परिस्थितियाँ होने पर काई की तरह फट नहीं पाता अर्थात् सत्याचरण नहीं त्यागता। वह पशुवत् रोटी के लालच में आचरण नहीं करता जैसे तोता रटता रहता है अपितु विवेकपूर्ण रीति से कार्य करता है।

भाषा-बोध

(क) 1. विकास (विकसित) 2. प्रदूषण (प्रदूषित) 3. संतुलन (संतुलित) 4. स्थापना (स्थापित) 5. शासन (शासित) 6. रचना (रचित)

(ख) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

12. मेरे जीव-जंतु मित्र

(क) 1. चमगादड़ों 2. कबूतरों 3. मैना 4. छिपकलियाँ **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4 (अ)

(घ) अति लघु : 1. मैना, चिड़ियाँ, कोयल, चमगादड़, बिच्छु, बर्र, कीड़े-मकौडे, गिलहरी आदि बहुत से जीव-जंतुओं से सामना हुआ। 2. खटमल, मच्छर और मक्खियाँ, चमगादड़, बर्र आदि। 3. छिपकलियाँ को भिड़ता देखकर तथा पूँछ हिलाते देख नेहरू जी को बड़ा आनंद आता था।

लघु उत्तरीय : 1. नेहरू जी के आँगन में अनेक प्रकार के जीव रहते थे जिस कारण उन्होंने आँगन सूना न माना। 2. गिलहरियाँ नेहरूजी के आस-पास घूमती व उन्हें विचित्र नजरों से देखतीं जिससे वे आनंदित होते थे। 3. उन्हें पेन में स्याही भरने वाले फिलर से दूध पिलाकर पाला। 4. चमगादड़ों से नेहरू जी को भय लगता था कि कहीं वे काट न लें।

दीर्घ उत्तरीय : 1. उनकी कोठरी में अक्सर बिच्छू घूमा करते थे। वे बिच्छुओं को पसंद नहीं करते थे। बिच्छुओं ने उन्हें कभी डंक भी नहीं मारा था हालांकि वे उनके बिस्तरों पर और किताबों में भी मिल जाया करते थे। ऐसे में नेहरू जी उन्हें अचानक उठा भी लिया करते थे। एक बार एक बिच्छू को उन्होनें थोड़े समय के लिए बोतल में बंद करके रख लिया था और उसे मक्खियाँ खिलाई थीं। बाद में उसे डोरे में बाँधकर दीवार से लटका दिया था। थोड़ी ही देर में वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ और खोजने पर भी न मिला था। 2. बरेली जेल में बंदरों का एक प्रदेश बसा हुआ था। एक बच्चा नेहरू जी की बैरक में आ गया और लौटकर दीवार पर न चढ़ सका जिसे वार्डनों और कैदियों ने पकड़कर रस्सी से बाँध दिया। बंदर के माता-पिता यह सब देखकर क्रोधित हो रहे थे। एकाएक उनमें से एक बहुत बड़ा और मोटा बंदर नीचे कूदा और उसने उस भीड़ पर हमला कर दिया, जो उस बच्चे को घेरे हुए थी। यह बहुत बहादुरी का काम था, क्योंकि वार्डन और कैदी हाथों में बड़े-बड़े डंडे घुमा रहे थे। अंत में इस अद्‌भुत साहस की विजय हुई। मनुष्यों की भीड़ डरी और अपने डंडे छोड़ भागी और बड़ा बंदर बच्चे को छुड़ाकर शान के साथ ले गया।

भाषा-बोध

(क) 1. **उन्होंने**-कर्ता कारक 2. **बिस्तरों**-अधिकरण कारक 3. **जेल**-अधिकरण कारक

(ख) 1. सफेद चींटियों-सफेद (विशेषण), चींटियों (संज्ञा) 2. वे-सर्वनाम, साहसी-विशेषण,

पास-संबंधबोधक 3. बंदर का बच्चा-संज्ञा, हमारी-विशेषण, बैठक-संज्ञा 4. **अपनी कोठरी**-अपनी -विशेषण, कोठरी - संज्ञा

अच्छी तरह-क्रिया विशेषण **साफ किया**-क्रिया

(ग) 1. **हम** उसके काटे जाने से डरते हैं। 2. **छिपकली कीड़े** की तलाश में बाहर आ जाती है।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

13. आत्माराम

(क) 1. सुखमय 2. संयोगवश 3. शांति 4. धुँधला 5. तंबाकू **(ख)** 1. ✓2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब)

(घ) अति लघु : 1. सोनार 2. पोपला मुँह, झुकी हुई काया, जर्जर शरीर 3. तीन पुत्र, तीन बहुएँ, दर्जनों नाती-पोते थे। 4. सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।

लघु उत्तरीय : 1. महादेव द्वारा सोने को पीटने से होने वाली खट-खट के प्रति लोग अभ्यस्त हो गए थे। 2. परिजन उससे लाभ उठाते परंतु उसकी चिंता न करते थे, इससे उसका जीवन सुखमय न था। 3. तोते को पिंजरे में ना पाकर महादेव का कलेजा सन्न हो गया था। 4. तोता स्वयं ही पिंजरे में आ बैठा था।

दीर्घ उत्तरीय : 1. मोहरें पाकर महादेव आर्थिक रूप से संपन्न हो गया था। संयोगवश ऐसा होने को वह परमात्मा की इच्छा ..... सबके प्रति विनीत भाव रखता। 2. आत्माराम नायक तोते ने पिंजरे ..... ने उसका जीवन भी सफल कर दिया। 3. संपन्न हो जाने पर महादेव ..... और अच्छों के लिए अच्छा है। 4. आधी रात गुजरने पर सहसा कोई आहट पाकर महादेव ..... कृपा को प्रसाद के रूप में ग्रहण कर लिया।

भाषा-बोध

(क) 1. जिसका यश फैला हो - यशस्वी 2. जो भोग करे - भोगी 3. जो भयभीत न हो - निर्भय

(ख) 1. तोता (मादा तोता) 2. मच्छर (मादा मच्छर) 3. खटमल (मादा खटमल) 4. कौआ (मादा कौआ) 5. चीता (मादा चीता) 6. तेंदुआ (मादा तेंदुआ) 7. मगरमच्छ (मादा मगरमच्छ) 8. जिराफ (मादा जिराफ)

(ग) 1. विधानवाचक 2. नकारात्मक 3. नकारात्मक 4. विस्मयादिबोधक 5. प्रश्नवाचक

(घ)1. अपादान 2. कर्म 3. संबंध 4. अधिकरण

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

14. राम और सुग्रीव मित्रता

(क) 1. बाण 2. राज्य 3. बल 4. राम

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(घ) अति लघु : 1. बालि का भाई 2. किष्किंधा का महाबलवान राजा 3. बालि का पुत्र 4. ऋष्यमूक पर्वत पर 5. वेश-बदलकर

लघु उत्तरीय : 1. अपनी पहचान छिपाने के लिए आराम से हनुमान जी वेश बदलकर राम-लक्ष्मण के पास गए। 2. उनके विचारानुसार राम और सुग्रीव की दशा समान थी, सो उनमें मित्रता हो सकती थी। 3. मतंग ऋषि के शाप के कारण बालि ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं जाता था। 4. श्री राम द्वारा एक ही बाण द्वारा ताड़ के सातों वृक्षों का काटा जाना देखकर सुग्रीव को भरोसा हो गया था कि ये बालि का वध कर सकते हैं। 5. सुग्रीव व बालि हमशक्ल थे और उनमें प्रथम मल्लयुद्ध होने पर श्रीराम बालि को निश्चयपूर्वक न पहचान सके थे, सो उन्होंने बाण भी न चलाया था। 6. सुग्रीव ने सीता की खोज कराई, समुद्र पर पुल बनवाया और सीता को मुक्त कराने के लिए अपनी सेना लेकर रावण से युद्ध किया।

दीर्घ उत्तरीय : 1. जब सुग्रीव ने दोबारा बालि को ललकारा, तभी तारा ने समझ लिया था कि सुग्रीव को अवश्य किसी महाबली की सहायता प्राप्त हो गई है अन्यथा जो अभी प्राण बचाकर भागा था, वह दोबारा ललकारने न आता। यही सोचकर तारा ने बालि को युद्ध में जाने से रोका। इससे पता चलता है कि तारा बड़ी बुद्धिमती स्त्री थी। 2. बालि ने अपने छोटे भाई की पत्नी को उसके जीते जी अपने घर में रख लिया था। छोटे भाई की पत्नी बेटी के समान होती है। उसे इस प्रकार रखना धर्म विरुद्ध है। बालि के कार्य पशुओं से भी निम्न कोटि के थे। वह श्रीराम के मित्र सुग्रीव का भी शत्रु बन बैठा था। इस प्रकार वह धर्म विरुद्ध कार्यों में संलग्न था। अधर्म से धर्म की रक्षा के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि अधर्म को समूल नष्ट किया जाए। सो उन्होंने बालि को मारकर धर्म की रक्षा की।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. सच्चा (विशेषण) 2. सुख (संज्ञा) 3.

अपराधी (विशेषण) 4. सच्चाई (संज्ञा) 5. दुख (संज्ञा) 6. अपमान (संज्ञा) 7. उपकृत (विशेषण) 8. उपकार (संज्ञा) 9. अपमानित (विशेषण)

(ग) 1. शाप (शापित) 2. बल (बली) 3. उपकार (उपकृत) 4. अपमान (अपमानित) 5. अपराध (अपराधी) 6. शिष्टता (शिष्ट)

(घ) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

15. नीतिनयन

(क) 1. जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।
2. महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो पड़ोस।।

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (ब)

(ग) अति लघु : 1. परोपकार करने की। 2. स्वयं अपनी बढ़ाई नहीं करनी चाहिए और न ही बड़े बोल बोलने चाहिए।

लघु उत्तरीय : 1. रावण के पड़ोस में बसने पर समुद्र की महिमा घटी। 2. सज्जनों पर कुसंगति का प्रभाव नहीं पड़ता।

दीर्घ उत्तरीय : 1. रहीम ने अपने दोहे में यह भी कहा है 'जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।' इसका यही अभिप्राय है कि प्रत्येक वस्तु का अपना महत्त्व होता है। यद्यपि सुई छोटी वस्तु है और तलवार बड़ी परंतु दोनों एक-दूसरे के कार्य में योगदान नहीं दे सकतीं। जहाँ सुई का कार्य है, वहाँ सुई ही कार्य कर सकती है। यही स्थिति तलवार की है। अत: प्रत्येक वस्तु का अपना महत्त्व है।

2. कुसंगति दुखदायी होती है। जो व्यक्ति जैसे लोगों के साथ रहता है, उसे भी वैसा ही समझ लिया जाता है। रहीम ने अपने दोहे में कहा भी है–

बसि कुसंग चाहत कुसल, ये रहीम जिस सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो पड़ोस।।

(घ) 1. कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहि सुजान। 2. बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोलै बोल। 3. जब नीके दिन आइ है, बनत न लगिहे देर। 4. उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय।

भाषा-बोध

(क) 1. लघु = छोटा 2. निज = अपना 3. जगत = संसार 4. तरुवर = वृक्ष 5. बहु = विविध 6. उत्तम = श्रेष्ठ। **(ख)** 1. कुसल (कुशल) 2. बिथा (व्यथा) 3. दिनन (दिनों) 4. सरवर (सरोवर) 5. सुजान (ज्ञानीजन) 6. भुजंग (साँप)।

(ग) 1. उत्तम–निम्न 2. बैर–प्रीति 3. लघु–दीर्घ 4. बड़ाई– निंदा 5. विषम–सम 6. कुसंग–सुसंग।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

16. उत्तम स्वास्थ्य

(क) 1. खुली हवा 2. स्वास्थ्य 3. हानिकारक 4. रोगों

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब)

(ग) अति लघु : 1. इनसे बालकों के अंदर ..... का विकास होता है। 2. उत्तम स्वास्थ्य 3. प्राणयाम करने से न केवल फेफड़ों को बल मिलता है, बल्कि इससे उदरस्थ सभी नसों का रक्त-प्रवाह सुधरता है। 4. हमें गरिष्ठ भोजन नहीं करना चाहिए। अधिक खाना तो रोगों को खुला आमंत्रण देना है।

लघु उत्तरीय : 1. उत्तम स्वास्थ्य के अंतर्गत शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, चरित्र और संयम सम्मिलित होते हैं। 2. चलना, दौड़ना, झुकना, उठना, बैठना, मुड़ना, खाना-पीना, बोलना आदि क्रियाएँ मांसपेशियों के द्वारा ही की जाती हैं, जो हमारी इच्छा द्वारा नियंत्रित होती हैं। 3. हृदय एक प्रकार का स्वचालित पंप है, जो बिना हमारी जानकारी के हमारे खून को दिन-रात सारे शरीर में प्रवाहित करता है। 4. आसनों के द्वारा न केवल शरीर के अंगों को सक्रिय किया जाता है, अपितु तन-मन पर नियंत्रण भी किया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए पौष्टिक भोजन के साथ-साथ खेलकूद, व्यायाम, आसन, प्राणायाम आदि बहुत आवश्यक होते हैं। उत्तम स्वास्थ्य के लिए स्वस्थ मनोरंजन भी आवश्यक है। शरीर और मन को स्वस्थ रखने के इन साधनों में से किसी एक अथवा एकाधिक को अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। 2. किशोरावस्था के बच्चों के लिए खेलकूद, जिम्नास्टिक, आसन, दौड़ना और तैरना आदि अच्छे और लाभकारी व्यायाम हैं। प्रत्येक बालक-बालिका को किसी-न-किसी सामूहिक खेल में अवश्य भाग लेना चाहिए। इससे शरीर फुर्तीला और सशक्त होता है।

3. खेलों व आसनों के करने से संपूर्ण शरीर सक्रियता को प्राप्त होता है। वॉलीबाल, फुटबॉल, कबड्डी, दौड़, कूद, खो-खो आदि ऐसे ही खेल हैं। तैरना भी एक प्रकार का खेल है। खेलों से शरीर का

व्यायाम होकर माँसपेशियाँ मजबूत बनती हैं जो शरीर को बल प्रदान करती हैं। आसन हर अवस्था के लोगों के लिए उपयोगी होता है। इसने न केवल शरीर के सभी अंगों को सक्रिय किया जाता है, अपितु तन-मन पर भी नियंत्रण किया जाता है। इस प्रकार शरीर को संपूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। प्राणायाम करने से फेफड़ों को बल मिलता है व उदरस्थ सभी नसों का रक्त-प्रवाह सुधरता है, आँतें सक्रिय व मजबूत रहती हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. चोर (चोरी) 2. बच्चा (बचपन) 3. लड़का (लड़कपन) 4. सजाना (सजावट) 5. लूटना (लूट) 6. गरीब (गरीबी) 7. दूर (दूरी) 8. निकट (निकटता) 9. पढ़ना (पढ़ाई)।

(ख) कहाँ (क्रियाविशेषण), आज (क्रियाविशेषण), कब (क्रियाविशेषण)

(ग) 1. राजपुत्र (राजा का पुत्र) 2. सेनापति (सेना का पति) 3. गंगातट (गंगा का तट) 4. रसोईघर (रसोई के लिए घर)।

(घ) 1. हाथ (हथियाना) 2. झूठ (झुठलाना) 3. शर्म (शरमाना) 4. बात (बतियाना)

(ङ) 1. संभाव्य भूत 2. हेतुहेतुमद् भूत

(च) 1. संबंधकारक 2. कर्मकारक 3. आपदानकारक

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

17. बाल-लीला

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ)

(ग) अति लघु : 1. बार-बार कच्चा दूध पीतें है, परन्तु फिर भी उनकी चोटी छोटी ही है। 2. बलराम की चोटी लंबी और मोटी है। 3. चिरंजीवी होने का 4. स्वयं कीजिए।

लघु उत्तरीय : 1. गोपाल, कन्हैया 2. दाउ, हलधर 3. चोटी 4. लंबी व मोटी 5. उन्हें नई दुल्हनिया लाकर देने के लिए कहती हैं।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कृष्ण कहते हैं कि यदि मुझे चंद्र खिलौना न मिला तो मैं धरती पर लोट-पोट ही रहूँगा, तेरी गोद में न बैठूँगा। न तो मैं गाय का दूध पिऊँगा, न ही चोटी गुहाऊँगा। मैं नंद बाबा का सुपुत्र कहलाऊँगा, तेरा नहीं। 2. मैया, दाउ मुझे चिढ़ाकर कहते हैं कि मुझे तुमने जन्म नहीं दिया, बल्कि गोद लिया गया है। मुझसे बार-बार पूछते हैं कि मेरे माता-पिता कौन हैं। नंद व यशोदा गोरे हैं, तो तू श्याम वर्ण क्यों है। भैया की सीख पर सभी ग्वाल-बाल चुटकी बजा-बजाकर मुझपर हँसते हैं। 3. कृष्ण बलराम की शिकायत करते हुए मैया से कहते हैं कि तू मुझे ही मारना जानती है, दाऊ पर कभी नाराजगी प्रकट नहीं करती। इस प्रकार वे अपना भाव प्रकट करते हैं कि माता उनकी शिकायत पर बलराम को कड़ी डाँट लगाएँ।

भाषा-बोध

(क) 1. चंद्र - चाँद, राकेश, रजनीश
2. भैया - भाई, भ्राता, तात
3. हरि - भगवान, श्रीपति, केशव

(ख) 1. जसोदा (यशोदा) 2. पूत (पुत्र) 3. चंद (चंद्र) 4. बेनी (चोटी) 5. अजहुँ (आजतक) 6. जायो (जन्म दिया) 7. माखन (मक्खन) 8. दुलहिया (दुल्हनिया) 9. काचो (कच्चा)

(ग) 1. लघुता 2. ईमानदार 3. किरायेदार 4. महानता 5. सभ्यता 6. कर्जदार 7. दुकानदार 8. सुंदरता 9. पहरेदार

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

18. भाग्य का फेर

(क) 1. स्थिर 2. नींद 3. चाट 4. गति

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. ब 2. ब 3. स 4. ब

(घ) अति लघु : 1. सरीकारी खटारा बसें ..... स्थिर कर लेती हैं। 2. संयमी प्राय: ..... भागीदार बना देते हैं। 3. इलाहाबाद वापस चलने के आग्रह को। 4. ताकि फिर से कोई दुर्घटना घटित न हो सके।

लघु उत्तरीय : 1. लेखक चाट वाले के पास से वापिस बस में लौटने को चला। 2. अलीगढ़ का टिकट लिया 3. कानपुर तक का टिकट लिया। 4. यह जान सका कि जरा सी भूल और जरा सी सजकता भाग्य को उलट-पुलट कर देने के लिए पर्याप्त है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. लेखक एक संस्थान में .... जैसे एक दूसरे की गति रोक देते हैं। 2. हम लोग दस मिनट में वापस लौट आए ..... उन्हें सवारी उठाने-बैठाने की कोई चिंता न होगी। 3.

उन्होंने आस-पास उस गाड़ी के विषय में पता किया। सड़क के किनारे अड्डा जमाये परिवहन कर्मचारियों से पूछा, परन्तु कोई संतोषजनक उत्तर न दे सका। इस प्रकार वे पूछते हुए दिल्ली जाने वाले मार्ग पर ही स्कूटर से बठने लगे। मार्ग में जहाँ कहीं कोई चेक पोस्ट मिलती, वे गाड़ी का हुलिया बयान करके उसके विषय में मालूमात करते, परंतु दुर्भाग्य से कुछ भी पता न चला। मार्ग में उन्हे एक व्यक्ति ने बताया था कि आगे जाकर चेक पोस्ट पर वायरलैस सैट सहित बैठा सिपाही उनकी मदद कर सकता है। हमें उसे चाय-पानी का खर्च देना होगा और काम हो जाएगा। उन्होंने ऐसा ही किया। सिपाही के सामने अपना दुखड़ा रोया, भेंट चढ़ाई, जो उसने स्वीकार कर ली और तुरंत वायरलैस पर संदेश प्रसारित कर दिया। 4. देखा कि कन्नौज से चार-पाँच पुरूष .... सभी सवारियाँ दु:खी और उदास थीं।

भाषा-बोध :

(क) 1. संस्थान 2. बाजार, चाट 3. लीडर, रोड़, दिल्ली। 4. कडंक्टर, सीट **(ख)** 1. संयमी 2. जल्दबाजी 3. धैर्यहीन 4. पागल 5. परिश्रमी 6. चिंतित **(ग)** 1. कूच कर गई। 2. नाक कट गई। 3. अलर्ट कर दिया गया। 4. खोज लेते है। 5. जवाब देना

(घ) 1. दुकानदार बोला,"पांडेय जी हमारी तो नाक कट गई।" 2. जैसे-जैसे समय बीतेगा, अटैची, के लालच में कंडक्टर, ड्राइवर बस को दौड़ाए लिए जाएँगे। 3."पंद्रह बीस मिनट लगेंगी,"कंडक्टर ने उत्तर दिया।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

19. हिन्द महासागर में छोटा-सा हिन्दुस्तान

(क) 1. अंग्रेजी 2. भोजपुरी 3. उत्तर प्रदेश 4. शिवालयों 5. हिन्दी

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)

(ङ) अति लघु : 1. हिन्द महासागर में छोटा-सा हिन्दुस्तान 2. कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद और मुंबई। 3. परी तालाब केवल ..... से करते हैं। 4. मॉरीशस वह देश है जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है, और ब्रहमस्थान भी। 5. मॉरीशस का कोई भी हिस्सा समुद्र से 15 मील से ज्यादा दूर नहीं है।

लघु उत्तरीय : 1. भारत के उत्तरप्रदेश व बिहार से जाकर लोग मॉरीशस में बसे हैं। 2. मॉरीशस में ईख की खेती और उसका व्यवसाय है तथा चीनी वहाँ का एकमात्र उद्योग है। 3. तुलसीकृत रामायण ने मॉरीशस में हिन्दू संस्कृति की रक्षा का कार्य किया है। 4. मॉरीशस में भोजपुरी का प्रसार अधिक है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. भारतीयों ने अपने धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए अत्याचार सहे, प्रलोभन ठुकराए परंतु उसे न डिगने दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप पर परिस्थितियों में उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिन्दुस्तान बना डाला। इस प्रकार उन्होंने मॉरीशस में अपनी नींव मजबूत की। 2. मॉरीशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में शिवालय होता है। वहाँ के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में हिन्दु तुलसीकृत रामायण का पाठ करते हैं अथवा ढोलक और झाँझ पर उसका गायन करते हैं। शिवरात्रि पर सारे मॉरीशस के हिन्दू लोग श्वेत वस्त्र धारण करके कंधों पर काँवर लिए जुलूस बाँधक परी तालाब पर आते हैं और वहाँ का जल लेकर अपने-अपने गाँव के शिवालयों में शिवजी को चढ़ाकर अपने घरों में प्रवेश करते हैं। 3. लेखक ने नैरोबी के नेशलन पार्क में देखा , कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोए हुए थे और उन्हें घेरकर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं। सिंह इन सबसे बेखबर थे जैसे आसपास मौजूद लोगों का कोई अस्तित्व ही न हो। मील भर की दूरी पर हिरनों का झुंड खड़ा था। उन्हें देखकर दो जवान सिंह उठे और दो ओर चल दिए। एक तो थोड़ा-सा आगे बढ़कर एक जगह बैठ गया, परंतु दूसरा घास के बीच छिपता हुआ मोर्चे पर आगे बढ़ने लगा। हिरनों के झुंड ने ताड़ लिया कि उन पर सिहों की नजर पड़ रही है। अतएव वे चरना भूलकर चौकन्ने हो उठे। फिर ऐसा हुआ कि झुंड से छूटकर हिरन एक तरफ भाग निकले, मगर बाकी जहाँ के तहाँ खड़े रहे।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. श्वेत = सफेद 2. वयस्क = बालिग 3. सर्वत्र = सभी जगह 4. सुरम्य = अत्यंत मनोरम 5. निरंतर = लगातार 6. क्रिस्तान = ईसाई

(ग) 1. लंबा (विशेषण) 2. लंबाई (संज्ञा) 3. चौड़ा (विशेषण) 4. ऊँचा (विशेषण) 5. ऊँचाई

(संज्ञा) 6. चौड़ाई (संज्ञा) 7. सुंदर (विशेषण) 8. सुंदरता (संज्ञा) 9. मानवता (संज्ञा)

(घ) उद्देश्य – 1. मोटा बंदर 2. छोटा बच्चा 3. एक सुंदर लड़की 4. सभी लड़कियाँ 5. मोर 6. नितीश

विधेय – 1. पेड़ से कूद पड़ा 2. रो रहा है 3. परी से मिली 4. घर चली गईं 5. पंख फैलाकर नाचा 6. कमरे में टीवी देख रहा है।

(ङ) 1. जन्मभर (क्रियाविशेषण) 2. आठ-दस (विशेषण) 3. चौकन्ने (क्रियाविशेषण) 4. गाँधी (संज्ञा) 5. भारत (संज्ञा) **(च)** स्वयं कीजिए।

(छ) 1. शैशव + अवस्था = शैशवावस्था

2. परि + आवरण = पर्यावरण 3. आनंद + उत्सव = आनंदोत्सव 4. वार्षिक + उत्सव = वार्षिकोत्सव

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

20. बाल अदालत

(क) 1. लोकप्रिय 2. निर्माणदेव 3. वकील 4. पृथ्वी 5. आपके

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. ब 2. स 3. स 4. अ 5. ब

(घ) अति लघु : 1. इंजीनियर था। 2. डॉक्टर था। 3. पुलिस अधिकारी था। 4. प्रशासनिक अधिकारी। 5. न्यायधीश था।

लघूत्तरीय : 1. प्रशासनिक अधिकारी ..... करना चाहेंगे। 2. नेताजी: प्रभु ..... किया जाए। 3. आपने ..... जरा हम भी सुनें। 4. धर्मराज: गंभीर स्वर में ..... सुनना चाहते हैं। 5. धर्मराज: (गंभीर स्वर में) निष्कलंक नाथ जी .... सुनना चाहते हैं।

दीर्घउत्तरीय : 1. गर्मी की ऋतु थी ..... नाटक का मंचन करते है। 2. अब तक दो नाटकों का ..... नाटक प्रस्तुत कर रहे है। 3. निर्माणदेव ने कहा कि "शासकीय सेवा में आकर मैंने अनेक ... . बस, महाराज की कृपा चाहिए। 4. धर्मराज ने कहा कि "निष्कलंक नाथ जी, आप पृथ्वी पर ..... आपके कर्मो का बखान हम आपके ही मुख से सुनना चाहते है।" यह टिप्पणी उचित ही है। 5. हितकारीलाल ने कहा कि मैने बाढ़ और सूखे से अकाल ..... उसी प्रकार लाभान्वित होगा।

भाषा-बोध:

(क) 1. निंदा 2. नरक 3. मृत्यु 4. निम्न 5. निर्दोष 6. अव्यवस्था 7. अधर्म 8. ध्वंस 9. अशांति

(ख) 1. ब 2. स 3. अ

(ग) 1. स्वर्गीय 2. नारकीय 3. चोर 4. मिलनसार 5. खाद्य 6. रक्षक 7. नाटकीय 8. यही 9. वही 10. न्यायी 11. पीड़ित 12. लुटेरा

(घ) 1. ब 2. ब 3. अ 4. ब

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

आराध्या हिंदी-8

1. समर्पण

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ (ग) 1. ब 2. स 3. स 4. अ

(घ) अति लघु : 1. क्योंकि कवि को लगता है कि वह अभी भी मातृभूमि का ऋण नहीं उतार पाया। उसने जो समर्पित किया वह कम है इसलिए वह कुछ और भी समर्पित करना चाहता है। 2. कवि स्वयं को गरीब बताते हुए कहता है कि हे मातृभूमि तुम्हारा ऋण इतना ज्यादा है कि मैं सब कुछ समर्पित कर दूँ तब भी चुकाना असम्भव है। 3. क्योंकि वह माता के समान हमारा भरण-पोषण करती है। 4. अपना मस्तक काटकर थाल में रखकर समर्पित कर देना।

लघु उत्तरीय : 1. अपना सब कुछ न्योछावर करके उऋण होना चाहता है। 2. इसलिए मानता है कि ऐसा करके भी वह मातृभूमि का पूरा ऋण उतार पाने में स्वयं को असमर्थ मानता है। 3. कवि का आशय अपने जीवन के सभी प्रकार के भाव अर्पित करना है। 4. नहीं

दीर्घ उत्तरीय : 1. कवि देश के लिए अपने घर, गाँव, आँगन से मोह के बंधन तोड़ना चाहता है। 2. **(अ)** कवि देश की भूमि को माँ के रूप में संबोधित करते हुए कहता है कि मुझ पर आपका बहुत भारी कर्ज है जिसे मैं मरके भी चुका नहीं सकता, किन्तु मेरी प्रार्थना है कि जब देश की रक्षा हेतु मैं अपना सिर कटाऊँ तो वह सिर आप स्वीकार करें। **(ब)** कवि कहता है कि वह मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने अस्त्र-शस्त्र चमकाकर युद्धभूमि में जाना चाहता है और चाहता है कि मातृभूमि की माटी का तिलक करके जब वह युद्ध क्षेत्र में जाए तो मातृभूमि रूपी माँ उसे अपना आशीर्वाद प्रदान करे।

भाषा-बोध

(क) 1. असुरता 2. निरक्षर 3. गौंण 4. अस्थिर 5. अवगुण 6. विष

(ख) पुल्लिंग (1, 2, 3, 4, 5, 6)

(ग) 1. जननी, धात्री, माता 2. खड्ग, असि, करवाल 3. पुष्प, फूल, प्रसून

(घ) 1. अ 2. ब 3. ब 4. स

(ड़) 1. इस देश में सभी धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। वैसे यहाँ हिंदुओं की संख्या सबसे अधिक है परंतु मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिक्ख आदि सभी धर्मों के लोग एक साथ रहते है। 2. दीपावली पर बच्चे बम, पटाखे, फुलझड़ियाँ, अनार बम, आतिशबाजी छुड़ाकर खुशी प्रकट करते हैं।

(च) 1. हाथ से लिखा 2. धर्म से विमुख 3. महान है जो राजा 4. तीन रंगों वाला 5. अपने पर बीती 6. शक्ति के अनुसार

(छ) 1. पराधीन, परामुख, पराभव 2. सुदीर्घ, सुयश, सुगंध 3. अधिकार, अधिसूचना, अधिकरण

(ज) 1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. संयुक्त वाक्य 6. मिश्र वाक्य 7. मिश्र वाक्य 8. मिश्र वाक्य

2. पाप का गणित

(क) 1. बुद्धि 2. इतराता 3. आत्मसम्मान 4. प्रकृति **(ख)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. अ 2. ब 3. अ 4. ब

(घ) अति लघु : 1. लोभवश और आतुर होने के कारण 2. बिना परिश्रम किए अधिक जाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए और न ही लोभी होना चाहिए। आतुरता हमेशा घातक सिद्ध होती है। 3. काल्पनिक सुखोपभोग की आतुरता में आकर धैर्य और क्रम नहीं खोना चाहिए। बिना सोचे-समझे कुछ करने की आतुरता विपत्ति में डाल सकती है। 4. कुकर्मी को अपना शील, सदाचार, गवाना पड़ता है।

लघु उत्तरीय : 1. दुष्कर्मों और दुर्व्यसनो के आकर्षण का प्रभाव कुछ ऐसा ही है, जिसे देखकर अदूरदर्शी उन पर बेतरह टूट पड़ते हैं। 2. अधिक जल्दी अधिक मात्रा में अधिक सुख पाने की लिप्सा उस सूक्ष्म चिंतन का अपहरण कर लेती है।

3. कुकर्मी को आरम्भ में अपनी बुद्धिमता पर गर्व होता है। 4. राजदंड, सामाजिक असहयोग और तिरस्कार के अतिरिक्त आत्मदंड तिलमिलाने वाली पीड़ा के बिना सहन नहीं किया जा सकता।

दीर्घ उत्तरीय : 1. पाप-कर्मों में अधिक ..... प्रेरित करता है। 2. जनसाधारण का हृदय ..... पूरा नहीं होता। 3. अनीति का उपार्जन ..... सुखपूर्वक रह सकेंगे। 4. अनेक उद्दंड, उच्छृंखल ..... सहायक नहीं हो सकता।

भाषा-बोध

(क) 1. बहुवचन 2. एकवचन 3. बहुवचन 4. बहुवचन **(ख)** 1. विशेषण 2. विशेषण 3. विशेषण 4. भाववाचक संज्ञा 5. विशेषण 6. संज्ञा

(ग) 1. विषैला 2. व्यसनी 3. कठिन 4. सामाजिक 5. उद्दंड़ 6. अनुगामी

(घ) 1. घुटनों 2. डाकुओं 3. भेड-बकरियाँ 4. मजदूरों, नारे

(ड़) 1. भव्य 2. विश्वास, धोखा 3. बहादुरी **(च)** 1. अकर्मक 2. सकर्मक 3. अकर्मक

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

3. संस्कृति क्या है?

(क) 1. बढ़ती 2. उदार 3. संस्कृति 4. अच्छी

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब)

(घ) अति लघु : 1. सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। 2. संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी तरक्की करता है। 3. काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और मत्सर-मनुष्य में छह विकार हैं।

लघु उत्तरीय : 1. पहला अध्याय ..... बुद्धिवाद से हुआ। 2. आदमी के भीतर ..... अच्छी होती जाती है। 3. एक समय था जब ..... सभ्यता में आने लगा।

दीर्घ उत्तरीय : 1. आदम युग असभ्यता का युग था। उससे निकलकर विकास क्रम में हम सभ्यता को अपनाते गए और सुसंस्कृत होते गए। परंतु व्यक्ति कितना भी सभ्य और सुसंस्कृत हो जाए, उसके भीतर बैठे विकार उसे क्षण भर में निम्न बना डालते हैं। जो इन विकारों को नियंत्रण में रखता है, वही सभ्य और सुसंस्कृत है। 2. धन भौतिक वस्तुओं से संबंध रखता है जबकि संस्कृति एक भाव है वह गुण है जो बाहर से दिखाई नहीं देता। संस्कृति की दृष्टि से वह देश

बहुत ही धनी समझा जाता है, जिसने ज्यादा-से-ज्यादा देशों या जातियों की संस्कृति का विकास किया हो जबकि धन व्यापारिक व भौतिक (सुख-साधनों की) दृष्टि से महत्त्व रखता है। 3. मनुष्य के भीतर बसे विकार प्रकृतिदत्त हैं। यदि वह उन पर नियंत्रण नहीं रखता तो पशुतुल्य हो जाता है। हमारी संस्कृति हमें इन विकारों से परे रहने को प्रेरित करती है। इस प्रकार संस्कृति के प्रभाव से मनुष्य पशुत्व से मनुष्यत्व की ओर प्रवृत होता है। संस्कृति का कार्य व्यक्ति के दोषों को कम करना व उसके गुणों को बढ़ाना है। 4. भारत प्राचीनकाल से ही विदेशी आक्रमणकारियों का केन्द्र रहा। वे यहाँ आते रहे, इसे लूटते रहे व यहाँ बसते भी रहे। भारतीय संस्कृति उन सबको समाहित करती रही। यद्यपि उसमें विविधता भी आती रही, परंतु फिर भी वह भारतीय संस्कृति का ही रूप धारण किए रही। पहले आर्य इस देश में आए और द्रविड़ जाति से मिलकर उस संस्कृति की नींव डाली, जिसे हम हिंदू या भारतीय संस्कृति के नाम से जानते हैं। इसके पश्चात् बुद्ध व महावीर के प्रभाव से बहुत सी रूढ़ियाँ दूर होकर एक बार फिर नवीन संस्कृति की रचना हुई। इसके पश्चात् मुस्लिमों और ईसाइयों के प्रभाव से संस्कृति में पुनः परिवर्तन देखने को मिला परंतु भारतीय संस्कृति ने सबको अपनी उदारता में स्थान दिया और विविधता में एकता के मूल्य को बनाए रखा।

भाषा-बोध

(क) 1. दुर्बुद्धि = दुः + बुद्धि 2. तद्नुसार = तत् + अनुसार 3. पुनर्जन्म = पुनः + जन्म 4. सद्गति = सत् + गति

(ख) मोटर, गोश्त, हथियार, हासिल।

(ग) 1. शिष्ट (शिष्टता) 2. शीघ्र (शीघ्रता) 3. सभ्य (सभ्यता) 4. समीप (समीपता) 5. राष्ट्र (राष्ट्रीयता) 6. सेवक (सेवा)

(घ) 1. अपादान, 2. अधिकरण

(ङ) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

4. सफलता की कुंजी

(क) 1. सदुपयोग 2. दुरूपयोग 3. बेगार 4. कहीं अधिक **(ख)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स)

(ग) अति लघु : 1. क्रिया और विचारण। 2. जब उसके साथ उत्साह भरा विचार-प्रवाह भी जुड़ा हो। 3. निठल्ले बैठे रहने पर समय का दुरुपयोग होता है।

लघु उत्तरीय : 1. काम छोटा हो या बड़ा ..... परिचय देगी। 2. व्यक्तित्व के धनी ..... काम में लगाया। 3. अच्छी वस्तुएँ ..... कोशिश की जाती है। 4. जिस वस्तु को प्रामाणिक ..... आधार पर मिलते हैं।

दीर्घ उत्तरीय 1. किसी भी क्षेत्र में मूर्धन्य लोगों को देखा जाए, वे सामान्य से असामान्य स्तर तक इसी आधार पर पहुँचे हैं कि उन्होंने निर्धारित प्रभोजनों में अधिकाधिक समय समूचे मनोयोग और पूरे उत्साह के साथ लगाया। यदि उन्होंने बेगार भुगतने की तरह किसी प्रकार अपने कामों को निपटाया होता, कुछ खुद करके कुछ दूसरों पर छोड़ा होता, तो निश्चय ही प्रतिस्पर्धा में आगे निकल सकने का सुभोग कभी सामने न आता। 2. अरूचि और प्रमादवश जो कार्य किए जाते हैं, उनमें न पूर्णता होती है और न सुंदरता। ऐसे ही कार्यों को आधे-अधूरे और काने-कुबडे बताया गया है। ऐसे कार्यों से न स्वयं को संतोष होता है और न उस निर्माण का उपयोग करने वाले को।

3. काम छोटा हो या बड़ा, उसका स्वरूप कैसा बन पड़ा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसके साथ कितनी दिलचस्पी जुड़ी रही, उसमें त्रुटियाँ न रहने देने के लिए कितनी चेष्टा की गई। सर्वांगपूर्ण बनाने के लिए उस हेतु कितनी तत्परता बरती गई। यदि काम मनोयोगपूर्वक किया गया होगा, उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर अधिकाधिक अच्छी तरह किया गया होगा, तो निश्चय ही वह कृति अलग से अपनी गौरव-गरिमा का परिचय देगी। उसका सौंदर्य अलग से चमकेगा। साधारण होते हुए भी उसे विशेषता भरा देखा जाएगा। 4. समय को सुनियोजित रूप से कार्य में लगाना ही समय का सदुपयोग है। इससे समय नष्ट नहीं होता और निश्चित समय के भीतर कार्य संपन्न करने का विचार प्रबल रहता है। इसमें क्रिया और विचारण साथ-साथ चलते रहते हैं और कार्यक्षमता का सही दिशा में उपयोग हो पाता है। 5. जिस कार्य में महत्त्वपूर्ण उद्देश्य जुड़ा न हो, वह रूचिकर नहीं हो सकता। उसे बेगार की तरह किया जाता है। महत्त्वपूर्ण उद्देश्य न होने पर उसके प्रति जवाबदेही भी प्रायः नहीं के बराबर होती है और

उसकी कोई निश्चित समय सीमा भी नहीं होती, यदि होती भी है तो उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता। वास्तव में महत्त्वपूर्ण उद्देश्य ही मन: स्थिति को निर्माणकार्य की ओर आकृष्ट करता है और उद्देश्य महत्त्वपूर्ण होगा, तो उसमें रूचि स्वयं ही जाग्रत हो सकेगी।

भाषा-बोध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) प्रमादी (ई), सामाजिक (इक), आर्थिक (इक), पारिवारिक (इक)

(ग) 1. पूर्णता-अल्पता 2. सक्षम-अक्षम
3. असमान - समान 4. सतर्क-लापरवाह
5. सफल-असफल 6. सम्मान-अपमान
7. संभव-असंभव 8. सदुपयोग- दुरुपयोग
9. प्रमादी-कर्मठ 10. प्रमाणिक-अप्रमाणिक
11. टिकाऊ-क्षणिक 12. स्वतंत्र-परतंत्र

(घ) 1. योग-वियोग 2. बालिग-नाबालिग
3. देश-विदेश 4. मुमकिन-नामुमकिन
5. राग-विराग 6. कामयाबी-नाकामयाबी
7. जय-विजय 8. समझ-नासमझ
9. ज्ञान-विज्ञान 10. काबिल-नाकाबिल

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) 1. सामाजिक = समाज + इक 2. वैज्ञानिक = विज्ञान + इक 3. वैमानिक = विमान + इक 4. यांत्रिक = यंत्र + इक 5. वैदिक = वेद + इक 6. पारिश्रमिक = परिश्रम + इक 7. आर्थिक = अर्थ + इक 8. पारिवारिक = परिवार + इक

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

5. दिये से मिटेगा न मन का अंधेरा

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(ग) अति लघु : 1. कवि अँधेरे को समाज में फैली विघटनकारी शक्तियों व वैचारिक संकीर्णताओं के रूप में देखता है। 2. कवि समाज में नव-सृजन व शांति रुपी प्रकाश चाहता है।

लघु उत्तरीय : 1. मनरूपी अंधकार से अर्थात् मनरूपी घृणा, द्वेष जो दूसरों के प्रति मन में बसा है। 2. कवि कहता है। कि बाहर दिये जलाने से मन का अंधकार नहीं मिट सकता जब तक मन में शांति, न हो, दूसरों के प्रति प्रेम की भावना न हो, मन से घृणा दूर न हो।

दीर्घ उत्तरीय : 1. जब समाज में विघटनकारी शक्तियाँ अपना जाल फैला रही हों और समाज वैचारिक संकीर्णताओं में जकड़ा हुआ हो तो जनजीवन अशांत हो उठता है। ऐसे में समाज के पुनरुथान हेतु शांति की आवश्यकता होती है और यह सृजन के माध्यम से ही स्थापित हो सकती है क्योंकि सृजन ही तो समाज-निर्माण के लिए आवश्यक और अनिवार्य प्रक्रिया है। 2. रोशनी से अभिप्राय स्वाभाविक खुशी से है जिसे हर किसी के मुख पर स्वाभाविक रूप से ही होना चाहिए। वास्तव में समाज में विघटनकारी शक्तियों और वैचारिक संकीर्णताओं ने ऐसा वातावरण उपस्थित कर दिया है कि मनुष्यता जैसे पीड़ित हो सिसक रही है। जब समाज में प्रेम और भाईचारा स्थापित होगा तो मनुष्यता की पीड़ा समाप्त हो सकेगी और उसे स्वाभाविक रूप से प्रसन्न होने का सुखद अवसर प्राप्त होगा। तब प्रतीत होगा कि प्रत्येक द्वार पर रोशनी गीत गा रही है।

भाषा-बोध

(क) 1. बली–निर्बल; 2. सृजन–विध्वंस, विनाश; 3. शांति–अशांति; 4. तम–प्रकाश; 5. उषा–संध्या; 6. पूर्ण–अपूर्ण

(ख) 1. बल (बली) 2. शक्ति (शक्तिवान) 3. हँसना (हँसोड़)

(ग) 1. बली–बलवान, शक्तिवान, ताकतवर
2. अग्नि–आग, अनल, पावक

आओ सीखें - स्वयं कीजिए।

6. आत्मश्लाघा : पराजय का कारण

(क) 1. प्रेमपूर्वक 2. मानसरोवर 3. कौए 4. तिरस्कार 5. सचेत

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (स)

(घ) अति लघु : 1. शल्य मद्र देश का राजा था और युद्ध में कौरवों के पक्ष में था। 2. कर्ण सूतपुत्र था जिसे दुर्योधन की कृपा प्राप्त थी। 3. शल्य को सेनापति कर्ण के सारथी बनने का कार्य भार सौंपा गया। 4. दुर्योधन के आग्रह पर शल्य ने कर्ण का सारथी बनना स्वीकार कर लिया था।

लघु उत्तरीय : 1. आत्मश्लाघा से अभिप्राय है -

अपनी प्रशंसा स्वयं करना। 2. क्योंकि कर्ण वार्ता के समय अपने पराक्रम, शौर्य, युद्धचातुर्य और अस्त-शस्त्र संचालन का बढ़-चढ़कर बखान करने लगा और श्रीकृष्ण और अर्जुन को पराजित करने की बात करने लगा। 3. क्योंकि कर्ण सूतपुत्र था इसलिए वह कर्ण को सारथी बनने में हिचक रहे थे। 4. आत्माश्लाघा के फलस्वरूप कौआ समुद्री जीवों का ग्रास बनते-बनते रह गया उसे अपनी मूर्खता का ज्ञान हो गया और उसे दण्ड मिल गया।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कौआ व्यर्थ ही अहंकारवश अपनी असामान्य सामर्थ्य का वर्णन करने लगा जिसका वास्तव में उसे कुछ भी ज्ञान न था। वह हंसों का अपमान करने की दृष्टि से उन्हें नीचा दिखाने व उन्हें पराजित करने की इच्छा से उनके पास उड़कर पहुँचा और कहने लगा, ''अरे हंसो! तुम लोग मुझे नहीं जानते। मैं तुम लोगों से श्रेष्ठ हूँ और दूर तक उड़ने की मुझमें तुम लोगों से अधिक सामर्थ है। तुममें से जो यह अधिक श्रेष्ठ हंस दिखाई दे रहा है मैं उसी के साथ दूर तक उड़कर अपनी श्रेष्ठता दिखा दूँगा।'' यह सब कौए की आत्मश्लाघा ही तो थी। 2. कौए प्राय: जूठन खाते हैं। वे जूठन खिलाने वाले की कृपा पर जीवन व्यतीत करते हैं। कर्ण के पास अपना कोई राज्य न था। पांडवों के प्रति उसकी घृणा देखकर दुर्योधन ने उसे अपने पक्ष में सम्मिलित कर अपने अधीन के एक राज्य का राजकार्य सौंप दिया था। राजा बनने पर कर्ण की स्थिति जूठन खाने वाली ही थी। इस प्रकार शल्य की दृष्टि में वैश्यपुत्रों द्वारा पोषित कौए और दुर्योधन द्वारा पोषित कर्ण में कोई अंतर न था। उसे नीचा दिखाने व आत्मश्लाघा के परिणाम से परिचित व सचेत करने के लिए ही शल्य ने जूठन खाने वाले कौए का उदाहरण दिया।

भाषा-बोध

(क) 1. **प्रलाप**–व्यर्थ की बकवास; 2. **उन्नत**–ऊँचा, प्रगतिशील; 3. **पश्चाताप**–पछतावा; 4. **ग्रास**–टुकड़ा; 5. **सामर्थ्य**–शक्ति; 6. **व्यर्थ**–बेकार; 7. **अभीष्ट**–इच्छित; 8. तिरस्कार अपमान; 9. **आत्मश्लाघा**–अपनी प्रशंसा स्वयं करना; 10. **अतुलनीय**–जिसकी तुलना न की जा सके।

(ख) 1. कर्मचारी–कर्मचारीगण; 2. प्रजा–प्रजाजन; 3. शिक्षक–शिक्षकगण; 4. पाठक–पाठकगण; 5. किसान–किसान लोग; 6. छात्र–छात्रगण; 7. गुरु–गुरुजन; 8. पक्षी–पक्षीवृंद

(ग) 1. श्रेष्ठ (मूलावस्था) 2. न्यूनतम (उत्तमावस्था) 3. योग्यतर (उत्तरावस्था)

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. सार्वनामिक विशेषण 2. सर्वनाम 3. सार्वनामिक विशेषण 4. सर्वनाम 5. सार्वनामिक विशेषण

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

7. केसर वाले देश में

(क) 1. जम्मू 2. तवी 3. मंदिरों 4. अकारथ

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब)

(घ) अति लघु : 1. रघुनाथ जी का मंदिर 2. पटनीटॉप जम्मू से श्रीनगर की आने जाने पर ऊँचे पहाड़ों पर स्थित एक बस्ती है। 3. बेरीनाग में एक खूब बगीचा और चारों ओर मेहराब से घिरा एक जलकुंड है जो झेलम नदी का उद्‌गम स्थल बताया जाता है। 4. श्रीनगर में केसर की खेती होती है, इस कारण उसे केसर वाला देश कहा गया है।

लघु उत्तरीय : 1. छोटा-सा बाजार ..... था। 2. अमरनाथ गुफा है ..... की सीमाएँ हैं। 3. आइए, आपकों ले चलें ..... खड़ा हो जाता है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. कश्मीर की अप्रतिम सुंदरता से सारा विश्व सदैव ही प्रभावित रहा है। इस सुंदरता के आधार पर ही कहा गया है कि पृथ्वी पर यदि कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है। ऊँची-ऊँची बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ, घाटी में फैली हरियाली, सुंदर बाग बगीचे, झीलें और उनमें तैरते शिकारे व हाउसबोट ये सब अपनी सुंदरता स्वयं ही बखान करते हैं। इसकी सुंदरता को निहारने वर्ष भर पर्यटक यहाँ डेरा डाले रहते हैं। कश्मीर देखकर यह महसूस किया जा सकता है कि कश्मीर नहीं देखा, तो हिंदुस्तान में कुछ नहीं देखा। सेब के बाग, बादाम की बाड़ियों, केसर के खेत, महजूर के गीत, बर्फ की चादर ताने हिमालय के विशाल पर्वतखंड और झीलों के आइनों में मुँह झाँकती चोटियाँ, चश्मे और झरने और सबसे बढ़कर कश्मीर के भोले-भाले मेहमानबाज

लोग–यह सब स्वर्ग नहीं तो और क्या हैं?
2. उपरोक्त उत्तर देखें। 3. श्रीनगर झीलों और झेलम का मिलाजुला शहर है। यदि आप चाहें तो किसी शिकारे में बैठकर श्रीनगर का काफी बड़ा हिस्सा पानी–पानी घूम सकते हैं। डल का मजा बिना शिकारे में चढ़े नहीं आता। लेखन ने साथियों सहित एक–एक शिकारा किया और चप्पुओं की छप–छप के साथ आगे बढ़ने लगे। झेलम की हाउसबोटों की दुनिया बड़ी निराली है। लेखक का एक हाउसबोट को अंदर से देखने का बड़ा मन था। अपने शिकारे को एक हाउसबोट के पास लगवाया। हाउसबोट के मालिक को आवाज दी परंतु किसी के न आने पर हाउसबोट में पहुँच गए। अंदर झाँका तो तबीयत दंग रह गई। बाहर से जो केवल एक नाव लग रहा था, वह अंदर पूरा राजसी महल था। फर्श पर कालीन बिछा हुआ, सोफे और तकिए लगे हुए, बिजली के पंखों से लेस पूरा तैरता महल। हम अजनबियों को इस तरह हाउसबोट में घुसा देख मालिक भागा हुआ आया और लेखक व उनके साथियों पर खूब बिगड़ा। इनके माफी माँगने पर उसने बताया कि इस तरह लोग आकर हाउसबोट गंदा कर जाते हैं।

भाषा–बोध

(क) 1. (क्रियाविशेषण) 2. (संबंधबोधक) 3. (क्रियाविशेषण)

(ख) 1. पहाड़ (पुल्लिंग) 2. नदी (स्त्रीलिंग) 3. झील (स्त्रीलिंग) 4. पेड़ (पुल्लिंग) 5. टहनी (स्त्रीलिंग) 6. बादाम (पुल्लिंग)

(ग) 1. कभी नहीं 2. आज, जल्दी 3. थोड़ा अधिक 4. अचानक

(घ) 1. **लंबी** सुरंग 2. **विशाल** बुलडोजर 3. **गहरी** झील 4. **ऊँचे** पर्वत 5. **खूबसूरत** वादी 6. **आरामदायक** हाउसबोट

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

8. चरित्र और संयम

(क) 1. कर्णधारहीन 2. विशेष 3. नम्र 4. नहीं जीता 5. फूल नहीं जाना

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. ब 2. अ 3. ब 4. अ 5. ब 6. स

(घ) अति लघु : 1. चरित्र का निर्माण दूसरों के हाथों नहीं, अपने ही हाथों द्वारा होता है। बिना चरित्र के सारा ज्ञान केवल बुराइयों की जड़ है। 2. स्वच्छता, अंतर की पवित्रता का लक्षण रूप ही संयम है। हमारा शरीर महामंदिर है। हम उसमें बाहरी मैल न भरे, इस सोच को साधने वाला ही संयमी होता है। 3. गाँधी जी के अनुसार चरित्र और संयम के बिना मनुष्य का तमाम पठन–पाठन और अभ्यास निरर्थक है। बिना चरित्र और संयम के सारा ज्ञान केवल बुराई स्वरूप हो जाएगा। 4. विचार करने की कला ही सच्ची शिक्षा है। 5. सच्ची शिक्षा हाथ आ जाए तो दूसरी कलाएँ उसके पीछे सुंदर रीति से सज जाती हैं।

लघु उत्तरीय : 1. चरित्र निर्माण हेतु किया गया समस्त परिश्रम, पठन–पाठन और अभ्यास निरर्थक ही रहेगा। 2. मनुष्य एक दरवाजे से देखता है कि वह स्वयं कैसा है व दूसरे से उसे कैसा होना चाहिए, इसकी कल्पना कर सकता है। 3. इंद्रियों को निरंकुश छोड़ देने वाले का जीवन कर्णधारविहीन नख के समान होता है जो निश्चय ही पहली चट्टान से टकराकर चूर–चूर हो जाएगा।

दीर्घ उत्तरीय : 1. नम्रता व्यक्ति के चरित्र का एक विशेष गुण है। यह अभ्यास से प्राप्त नहीं होती, इसे स्वभाव में समाहित होना चाहिए। नम्रता का तात्पर्य मात्र इस बात से नहीं है जो किसी के सम्मानार्थ लिखाया–पढ़ाया गया पाठ मात्र है चाहे मन के भीतर तिरस्कार भरा हो। वास्तव में नम्र व्यक्ति तो यह जानता ही नहीं कि वह कब नम्र होता है। नम्रता दिखावे की नहीं अपितु चरित्र में घोले जाने वाला गुण है। 2. उत्तम चरित्र मनुष्य की ढाल है। चरित्र केवल नाम का ही भाव नहीं अपितु यह एक प्रकाशपुंज है जो उचित समय पर प्रकट होने में विलंब नहीं करता। चरित्र व्यक्ति को निर्भय व आत्मविश्वासी बनाता है, पलायनवादी नहीं जबकि बुद्धि तो मात्र लाभ–हानि का निर्णय विचार करती है। इतिहास साक्षी है कि चरित्रवानों के समक्ष राजा भी झुका करते थे जबकि बुद्धिमानों का वे मात्र सम्मान करते थे। चरित्र के बल पर लोग कठिन अवसरों का निर्भयतापूर्वक सामना करते हैं जबकि बुद्धि तो मात्र बचने व उठने का संदेश देती है। 3. यहाँ हृदय से शरीर के किसी अंग से नहीं अपितु उस भावपूर्ण विचार प्रक्रिया से है जो सदैव सकारात्मक सोच रखती है और सबके हित में अपना हित

सोचती है। वास्तव में सबके हित में हमारा स्वयं का भी भला निहित होता है तभी तो हृदयपूर्वक विचारने वाला व्यक्ति सर्वहित सोचते हुए समाज में सम्मान का पात्र बनता है।

भाषा-बोध :

(क) 1. बलवान 2. गुणवान 3. विद्यावान, विद्वान 4. धनवान

(ख) 1. दिन-रात 2. माता-पिता 3. पाप-पुण्य, 4. चाँद-सितारे 5. धरती-आकाश।

(ग) 1. धनहीन 2. बलहीन 3. विद्याहीन 4. कर्महीन 4. स्वादहीन 6. गंधहीन।

आओं सीखें : स्वयं कीजिए।

9. प्रयाण गीत

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (स) 2. (स) 3. (अ)

(ग) अति लघु : 1. कठिन शूल बिछे ..... तो कल। 2. खून-पसीना बहाना होगा, काँटों से भरे मार्ग में भी राह बनानी होगी।

लघु उत्तरीय : 1. चिह्नित लक्ष्य की ओर दृढ़ निश्चय से निरंतर प्रयासरत रहना जब तक कि कार्य पूर्ण न हो जाए। 2. दृढ़ निश्चिय से प्रयासरत रहने पर लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य होगी चाहे उसमें थोड़ी देर ही क्यों न हो। 3. आवश्यक है की दृढ़ता बनी रहनी चाहिए अर्थात् कार्य के प्रति लगन व उत्साह में कमी नहीं आनी चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय : 1. देश अपने नागरिकों से अपेक्षा करता है कि वे परस्पर प्रेम से रहें। देश की उन्नति के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। सभी रोग-द्वेष व वैमनस्य से परे रहकर नियमों का पालन करते हुए सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें। सबको याद रखना चाहिए कि सबकी धरती और आकाश एक ही है। सभी एक परमात्मा की संतान हैं। अत: देश के सभी साधनों पर सबका समान अधिकार है। इसलिए ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा ऐसा कोई भेद न रखें। सभी स्वयं में त्याग की भावना रखें। देशहित सर्वोपरि हो। 2. मनुष्य घोर संकट के युग से गुजर रहा है। सदियों तक देश विदेशी शक्तियों के अधीन रहा जिन्होंने न केवल देशवासियों के मानस को कुंठित किया अपितु देश का वैभव भी लूट ले गए। अब देशवासियों को पुन:-पुन: खून-पसीना बहाकर, निरंतर कठोर परिश्रम करके खोए हुए वैभव को प्राप्त करना होगा। प्राचीन वैभव के साथ नए युग का प्रतीक ही वह नया सवेरा होगा। इसकी महती आवश्यकता है क्योंकि खोए वैभव को प्राप्त करके सम्मान प्राप्त करने पर ही देश विश्व में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकेगा।

3. इसमें निहित संकल्प है कि लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति सभी में उत्सर्ग होने का भाव अपेक्षित है। सभी को सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना रखकर देशहित पर न्योछावर होने के लिए तत्पर रहना होगा। इन सब साधनों से भला क्या मंजिल दूर रह सकती है। नहीं, यही तो लक्ष्य-प्राप्ति के स्पष्ट साधन हैं। साधन श्रेष्ठ हैं तो लक्ष्य प्राप्ति सुनिश्चित है। भले ही थोड़ा विलंब हो जाए।

भाषा-बोध :

(क) 1. दुष्ट (दुष्टता) 2. सेवक (सेवा) 3. मित्र (मित्रता) 4. शिष्ट (शिष्टता) 5. कवि (कवित्व) 6. जागना (जागरण) 7. चलना (चाल) 8. युवक (यौवन) 9. राष्ट्र (राष्ट्रीयता) 10. रुकना (रुकावट) 11. देव (देवत्व) 12. बंधु (बंधुत्व)

(ख) 1. पग चूमना = लक्ष्य की प्राप्ति होना 2. कदम बढ़ाना = लक्ष्य की ओर बढ़ना 3. नया सवेरा = नई आशा, विषम परिस्थितियों से नवीन सुखद परिस्थितियों में पदार्पण; 4. शंख ध्येय का = लक्ष्य की पहचान 5. नूतन = नवीन, नया; 6. शूल= काँटा।

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ)

1.	महान	महानतर	महानतम
2.	श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
3.	लघु	लघुतर	लघुतम
4.	बद	बदतर	बदतरीन

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

10. कर्तव्य की पहचान

(क) 1. महान 2. मिथ्या 3. उपकार 4. शक्ति

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स)

(घ) अति लघु : 1. जिस संयम के द्वारा ..... कहलाती है। 2. दूसरों की सहायता करने का अर्थ है, अपनी ही सहायता करना। इससे हमारे नैतिक बल में वृद्धि होती है। 3. कर्तव्यपालन की मधुरता प्रेम में ही है, और प्रेम का विश्वास केवल स्वतंत्रता

में होता है। 4. कुछ ऐसे नवरत्न होते हैं, जो केवल कार्य के लिए ही कार्य करते हैं। वे नाम, यश अथवा स्वर्ग की भी परवाह नहीं करते हैं, वे दूसरों की भलाई के लिए अग्रसर होते हैं।

लघु उत्तरीय : 1. दूसरों के प्रति कर्तव्य का अर्थ है उनके प्रति उदार बने रहना व अच्छे विचार रखना। 2. सदैव संसार का उपकार करने की चेष्टा से कर्म करना चाहिए। 3. सबके प्रति उपकार करना सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए। 4. जो पूर्ण नैतिक है, वह संभवत: किसी प्राणी या व्यक्ति की हिंसा नहीं करेगा।

दीर्घ उत्तरीय : 1. यदि पाने वाला देने वाले से कह दे कि वह उसकी वस्तु ग्रहण नहीं करेगा, तब देने वाला अपने कार्य को संपन्न न कर सकेगा। जब देने वाला कुछ देना चाहता है तब यह भी आवश्यक है कि पाने वाला सहमति दे। इस प्रकार यदि पाने वाला अपनी सहमति देगा, तब वही धन्य होगा अन्यथा देने वाला वस्तु को देने के लिए फिरता रहे, जब कोई लेने वाला ही नहीं होगा, तब वह किसे देगा। इस प्रकार पाने वाला ही धन्य होता है। 2. मन को पूर्णतया वश में करने के लिए पूर्ण नैतिकता ही सब कुछ है। जिसका मन पूर्णरूपेण उसके नियंत्रण में है, वही पूर्ण नैतिक है और यही पूर्ण नैतिकता है। जो पूर्ण नैतिक है, उसे कुछ करना विशेष नहीं है, उसमें अन्य सद्‌गुण स्वमेव आ जाएँगे। जो पूर्ण नैतिक है, वह संभवत: किसी प्राणी या व्यक्ति की हिंसा नहीं करेगा। जिसमें पूर्ण अहिंसा का भाव है, उससे बढ़कर शक्तिशाली कोई नहीं है। उसकी उपस्थिति में न तो कोई लड़ सकता है और न झगड़ सकता है। उसकी उपस्थिति मात्र से शांति और प्रेम उद्‌भुत होता है। 3. छोटी-छोटी बातें व्यक्ति के पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ डाले रहती हैं। उन्हीं की पूर्ति में तो वह अपने क्रियाकलापों को संपन्न करता है। फिर कैसी स्वतंत्रता? जिसकी आवश्यकताएँ कम हैं वह उतना ही स्वतंत्र है। अत: छोटी हों या बड़ी, आवश्यकताएँ ही मनुष्य को गुलाम बनाती हैं। 4. दूसरों के प्रति हमारे कर्तव्य का अर्थ दूसरों की सहायता करना है। अब प्रश्न उठता है कि हम संसार का भला क्यों करें? वास्तव में बात यह है कि देखने में तो हम संसार में ही रहते हैं। इसलिए हमें सदैव संसार का उपकार करने की चेष्टा करनी चाहिए और कार्य करने में यही हमारा सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए।

भाषा-बोध :

(क) 1. प्रेम (संज्ञा) 2. स्वंतत्र (विशेषण) 3. मधुर (विशेषण) 4. कर्तव्य (संज्ञा) 5. स्वतंत्रता (संज्ञा) 6. मधुरता (विशेषण)

(ख) 1. मनुष्य (मनुष्यता) 2. संपन्न (संपन्नता) 3. मधुर (मधुरता) 4. सहिष्णु (सहिष्णुता) 5. स्वतंत्र (स्वतंत्रता) 6. महान (महानता)

(ग) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

11. चंद्रशेखर आजाद

(क) 1. काशी 2. भीलों 3. पंजाब 4. 1925

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ)

(घ) अति लघु : 1. चंद्रशेखर आजाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सुविख्यात क्रांतिकारी थे। 2. चंद्रशेखर को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजा गया। 3. जनरल डायर ने। 4. ब्रिटिश युवराज एडवर्ड

लघु उत्तरीय : 1. संगठन बनाने के लिए उन्हें धन की आवश्यकता थी इसलिए दल की ओर से .... लूट लिया गया। 2. आजाद एक सच्चे, निडर, साहसी क्रान्तिकारी थे उनके आतंक से ब्रिटिश भी डरते थे इसलिए उन्होंने पहले एक गोली मृत शरीर पर मारी कि वे सचमुच मर गए हैं। 3. जब आजाद के पास ..... नहीं पकड़े जाएँगे। 4. सच्चे देशभक्त बनने की प्रेरणा मिलती है और साथ ही दृढ़प्रतिज्ञा बनने की भी प्रेरणा मिलती है। देश-सेवा हेतु जीने-मरने की भी प्रेरणा मिलती है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. प्रथम घटना उस समय की है जब उनकी अवस्था दस-ग्यारह वर्ष थी और मजिस्ट्रेट ने उन्हें पंद्रह बेंत लगाने का आदेश दिया था। पंडित नेहरू ने इस संबंध में अपनी आत्मकथा में लिखा है - बेंत एक-एक कर उसकी पीठ पर पड़ते और उसकी चमड़ी उधेड़ डालते, पर वह हर बैंत के साथ चिल्लाता, ''महात्मा गाँधी की जय'' वह लड़का तब तक नारा लगाता रहा, जब तक बेहोश न हो गया। दूसरी घटना उस समय की है जब इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेज सिपाहियों से उनका सामना हुआ। जब उनके पास गोलियाँ खत्म हो गईं और मात्र एक गोली शेष रह गई, तो उससे उन्होंने स्वयं का प्राणांत कर लिया परंतु जीते जी अंग्रेजों की

पकड़ में न आ सके। 2. आजादी प्रत्येक प्राणी का जन्मसिद्ध अधिकार है। बलात् किसी की इच्छा के विरुद्ध उससे कार्य लेना उसकी स्वतंत्रता का हनन करना है जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। एक स्वतंत्र परिंदे को भी जब उसकी इच्छा के विरुद्ध पकड़ा जाता है, तो वह छटपटाता है। किसी वन्य पशु को इस प्रकार पकड़कर कैद रखा जाता है तो उसकी छटपटाहट देखी जा सकती है। अनेक प्राणी तो परतंत्र होने पर प्राण ही त्याग देते हैं। परतंत्र होने पर मनुष्य की सारी विकास-प्रक्रियाएँ अवरूद्ध हो जाती हैं। इसलिए स्वतंत्रता तो सभी को प्रिय है। 3. बाहरी बलिष्ठता तो प्रत्यक्ष हार-जीत का कारण बन जाती है, परंतु भीतरी बलिष्ठता की प्रबलता जीवन भर हारने नहीं देती। यह दृढ़ निश्चय और प्रबल इच्छा शक्ति के रूप में पाई जाती है। इसी के बल पर मनुष्य असंभव कार्य को भी संभव बना देता है। अंग्रेज़ों द्वारा भारतीयों पर निर्मम अत्याचार होते रहे, परंतु भारतीयों की भीतरी बलिष्ठता ने कभी हार न मानी। क्रांतिकारी हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गए और अंतिम अवस्था में भी उनके मुख से मातृभूमि की जयकार के नारे ही सुनाई दिए।

भाषा-बोध

(क) 1. आजाद (आजादी) 2. परतंत्र (परतंत्रता) 3. मनुष्य (मनुष्यता) 4. गुलाम (गुलामी) 5. वीर (वीरता) 6. घनिष्ठ (घनिष्ठता)

(ख) 1. वीर (विशेषण) 2. गुलाल (संज्ञा) 3. आजाद (विशेषण) 4. मनुष्य (संज्ञा) 5. जलियाँवाला बाग (संज्ञा) 6. संस्कृत (संज्ञा)

(ग) स्वयं कीजिए। **(घ)** स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

12. एकलव्य (एकांकी)

(क) 1. आशीर्वाद 2. उदास 3. अर्थसंकट में 4. एकलव्य **(ख)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स)

(घ) अति लघु : 1. नारदमुनि ने एकलव्य से कहा अभ्यास ही गुरु है ..... ही देंगे। 2.श्रद्धा और भक्ति से शुरू द्रोण की मूर्ति को गुरू मानकर अभ्यास करने से वह धनुर्विद्या में निपुण हो गया। 3. क्योंकि कुत्ता एकलव्य पर भौंक रहा था। उसके अभ्यास मे विघ्न पड़ रहा था।

लघु उत्तरीय : 1. हिरण्य धनु अपने पुत्र हेतु धनुर्विद्या की शिक्षा के लिए चिंतित थे। 2. एकलव्य गुरु द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखना चाहता था। 3. गुरु द्रोण ब्राह्मण थे और वे लोग भील थे जिस कारण वे उनका स्पर्श भी न करेंगे। 4. शूद्र का बालक राजपुत्रों के साथ रहकर अस्त्र-शस्त्र चलाना नहीं सीख सकता।

दीर्घ उत्तरीय : 1. हे भगवान! तुमने मुझे शूद्र के घर क्यों पैदा किया? मेरे और उन राजपुत्रों के शरीर में क्या अंतर है? और फिर गुरूद्रोण जैसा ज्ञानवान भी भेदभाव रखे, तो मेरे जैसों की विद्या की प्यास किसके पास बुझेगी? हाय! अब क्या करूँ? पिताजी को मैं बहुत विश्वास दिलाकर आया था। मेरा निष्फल लौटना सुनकर वे बहुत निराश होंगे। 2. आप ही तो मेरे गुरु हैं। देखिए, आपकी मूर्ति बनाकर श्रद्धा और भक्ति से उसे ही प्रणाम कर मैं धनुर्विद्या का अभ्यास करता हूँ। जब मैं निराश होकर आपके पास से आ रहा था, तो देवर्षि नारद ने ही मुझे धनुर्विद्या का अभ्यास करने की यह विधि बताई थी, तबसे आपको ही गुरु मानकर मैं अभ्यास कर रहा हूँ।

भाषा-बोध

(क) 1. अस्त्र - वह हथियार जो फेंककर चलाया जाता है। 2. ऋषि - वेदमंत्रों का प्रकाश करने वाला। 3. शस्त्र - वह हथियार जो हाथ में थामकर चलाया जाता है। 4. देवर्षि - नारद।

(ख) 1. आशीर्वाद (आशीः + वाद) 2. देवर्षि (देव + ऋषि) 3. निष्फल (निः + फल) 4. धनुर्विद्या (धनुः + विद्या) **(ग)** स्वयं कीजिए।

(घ) 1. (ग) 2. (घ) 3. (ख)

(ङ) 1. वाला - रखवाला, घरवाला, दूधवाला

2. एरा - कमेरा, बसेरा, लुटेरा

3. आई - पढ़ाई, लिखाई, मिठाई

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

13. दोहा-दशक

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स)

(ग) अति लघु : स्वयं कीजिए।

लघु उत्तरीय : 1. इनमें कठोर प्रवृत्ति नहीं पाई जाती और इन्हें बार-बार मनाया जा सकता है। 2. सभी कुछ सोच-समझकर बोलना चाहिए जिससे किसी का

अहित न हो। 3. कबीर ने गुरू की तुलना कुम्हार से की है। 4. कबीर ने मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. मन मूँडने से तात्पर्य है मन में छिपे विकारों को दूर करना। इन विकारों को दूर किए बिना मनुष्य जीवन की वास्तविकता को नहीं जान सकता। वह व्यर्थ की वासनाओं में घिरा प्राणियों को क्लेश पहुँचाता है। अत: मन का मूँडना केश मुंडाने से अधिक आवश्यक है। मन में उपजे विकारों को गुरू दूर करता है, सत्संगति दूर करती है और मन-मस्तिष्क में उच्च सात्विक विचारों की उपस्थिति उन्हें दूर कर सकती है।

2. कबीर ने चक्की की उपयोगिता बताते हुए कहा है कि पत्थर की चक्की का पीसा हुआ अन्न सभी लोग खाते हैं, अत: श्रद्धा तो उसमें होनी चाहिए, परंतु लोग पत्थर की मूर्ति अथवा पत्थर को भगवान समझकर व्यर्थ पूजते हैं। वे मानते हैं कि पत्थर पूजने से भगवान मिल जाएगा। यदि वास्तव में ऐसा है तो मैं छोटे पत्थर के स्थान पर बड़ा पहाड़ पूज लूँ। कबीर का मानना था कि यह संपूर्ण जगत ईश्वर का ही रूप है और मूर्ति-पूजा आडंबर है। लोग परस्पर द्वेष रखते हैं और पत्थर पूजते हैं। इससे परमात्मा को प्रसन्न नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से तो चक्की पत्थर की मूर्ति से अधिक उपयोगी है।

भाषा-बोध

(क) 1. **वृक्ष**-पेड़, तरू, विटप;

2. **अमृत**-सुधा, आतिय, सोम

(ख) 1. डार = डाल; 2. केसन = केश; 3. बाबरा = पागल, बावला; 4. मूरख = मूर्ख; 5. सरप = सर्प; 6. सबन = सब; 7. सिष = शिष्य; 8. पाथर = पत्थर; 9. पहार = पहाड़

(ग) 1. (द) 2. (ब) 3. (स)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

14. हमारी सभ्यता

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(ग) अति लघु :1. संपूर्ण विषयों में परिपक्व ज्ञान रखते थे। 2. सभ्यता की प्रारंभिक दशा। 3. भारतवर्ष ने।

लघु उत्तरीय : 1. ज्ञान-शिक्षा, आचार की, व्यापार की, व्यवसाय की, विज्ञान की शिक्षा दान की। 2. जो ईश्वर हमारे लिए करता है वह दूसरों के लिए भी करता है हम सब एक ही ईश्वर की संतान है। यह हम हमेशा से जानते हैं, इसलिए दूसरों के सुख-दुख को समझने की प्रेरणा मिली। 3. तो संसार में ज्ञान-विज्ञान नहीं होता।

दीर्घ उत्तरीय : 1. भारतीय संस्कृति में कर्म की महत्ता है और कर्म को कर्तव्य की भाँति करने की शिक्षा दी जाती है न कि फल कामना के वशीभूत होकर। गीता में भी कहा गया है कि कर्म पर तेरा अधिकार है, फल पर नहीं। वास्तव में कर्म का परिणाम तो स्वयं उसमें निहित ही है। कर्म होगा तो परिणाम प्राप्त ही होगा। जिस रीति से कर्म किया जाएगा, उसी प्रकार उसका परिणाम मिलेगा। यही कारण है कि भारतवर्ष में परमार्थ को भी बहुत महत्त्व दिया गया है। जब परमार्थ किया जाता है तो उसका सुपरिणाम स्वयं को भी समुचित रूप से प्राप्त हो जाता है। 2. सर्वप्रथम संयम व नियमपूर्वक बल और विद्या प्राप्त करते थे। यह काल ब्रह्मचर्यआश्रम का था। गुरूकुल से ज्ञान प्राप्त कर युवक घर लौट आते थे और गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर गृहस्थ कार्य का निर्वहन करते थे। यह काल गृहस्थआश्रम का था। इसके पश्चात्, सभी सांसारिक बंधनों को त्यागकर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर वन जप-तप करते। इसके पश्चात् आदर्श भावी पीढ़ी को सब कुछ सौंपकर संसार से मुक्ति प्राप्त कर लेते थे।

3. भारतीय संस्कृति में परमार्थ को बहुत महत्त्व दिया गया है। हम सदैव परोपकार में जीवन बिताने के आकांक्षी रहे हैं। यही मानवमात्र का कर्तव्य भी माना गया है। हम दूसरों के दुख को अपना दुख मानते और उसे दूर करने का यत्न करते थे। भला हम यह क्यों न करते जब हमें यह ज्ञान था कि हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं और हममें बंधुत्व का नाता है। सभी चाहे भिन्न-भिन्न रीति से कार्य करते हुए जीवन व्यतीत करते हों अंतत: तो सब की रचना एक ही तत्त्व, एक ही मिट्टी से हुई है। यही विचार तो मनुष्य को सब भेदभावों से परे रखता है।

भाषा-बोध :

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. नरोत्तम-नरों में जो उत्तम 2. पुरूषोत्तम-पुरुषों में जो उत्तम 3. मुनिवर-मुनियों में श्रेष्ठ

(ग) 1. **अप** - अपराध , अपमान; 2. **अधि** - अधिनायक, अधिकार; 3. **अध** - अधपका, अधखिला; 4. **स** - सहित, सरस;

(घ) 1. आई - चतुराई, कठिनाई; 2. कार - कलाकार, चर्मकार; 3. शाली - वैभवशाली, बलशाली; 4. ईय – ईश्वरीय, भारतीय

आओं सीखें : स्वयं कीजिए।

15. आरोग्य की कुंजी

(क) 1. मूर्खता 2. असंयम 3. सशक्त

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब)

(घ) अति लघु : 1. उचित आहार-विहार से शारीरिक नीरोगता प्राप्त की जानी चाहिए। 2. असंयम से शरीर रोगी बन जाता है। 3. संयम शरीर को न केवल स्वास्थ्य देता है, अपितु मन को भी स्वस्थ रखकर व्यक्ति को नीरोगी व दीर्घायु बनाता है।

लघु उत्तरीय : 1. कीमती चीजों की पौष्टिकता भी उन्हें ग्रहण करने वाले के उचित आहार-विहार पर निर्भर करती है। 2. फूलों की सेज पर सोने ..... स्वादिष्ट लगे। 3. हकीम ..... उत्पन्न करती है।

दीर्घ उत्तरीय : 1. असंयम और उससे उपजी बुरी आदतें ही वास्तव में विकृतियाँ हैं। यदि दृढ़तापूर्वक इन पर नियंत्रण न करके उचित आहार-विहार का निर्धारण कर उस पर आरूढ़ रहा जा सके, तब ही ये विकृतियाँ दूर हो सकेंगी। ऐसा होने पर रूणता की जड़े आप सूखती चली जाएँगी और बिना चिकित्सा उपचार के नीरोगी रहा जा सकेगा। 2. हकीम लुकमान कहते थे कि मनुष्य समय से पहले मरने और गड्ने के लिए अपनी कब्र अपनी जीभ से खुद खोदता है। इसका तात्पर्य यह था कि चटोरेपन के वशीकृत जिह्वा अनुपयोगी पदार्थों को अनावश्यक मात्रा में उदरस्थ करती है और जीवन मरण का संकट उत्पन्न करती है। 3. आहार-विहार की रीति-नीति को सही बनाने वाला हर व्यक्ति सुदृढ़ स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन प्राप्त कर सकता है। ऐसे असंख्य उदाहरण सर्वत्र मिलते हैं जिनमें नियमित और व्यवस्थित जीवनचर्या अपनाने वालों ने स्वास्थ्य संवर्धन में सफलता पाई और कायाकल्प जैसा उदाहरण प्रस्तुत किया। गाँधीजी जिन दिनों दक्षिण अफ्रीका में थे, उन दिनों उनका पेट बुरी तरह खराब रहता था। कब्ज निवारण के लिए एनिमा का सहारा लेना पड़ता था। लगता था वे बहुत दिन न जी सकेंगे। स्थिति को बदलने के लिए उन्होंने दृढ़तापूर्वक स्वास्थ्य के नियम अपनाए। प्राकृतिक जीवनचर्या की राह अपनाई और लंबा जीवन जिया।

भाषा-बोध

(क) 1. निरोग = निः + रोग 2. निर्बल = निः + बल 3. निराशा = निः + आशा 4. निर्भय = निः + भय

(ख) 1. भूखा (आ) 2. देवत्व (त्व) 3. मिठास (आस) 4. ममेरा (एरा)

(ग) 1. कुमार्ग (कु) 2. अपमान (अप) 3. कमजोर (कम) 4. अधिकार (अधि) 5. सुपात्र (सु) 6. अवगुण (अव)

(घ) 1. (ब) 2. (द) 3. (द) 4. (अ)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

16. पर्यावरण-प्रदूषण के खतरे

(क) 1. विश्वव्यापी 2. कार्बन डाइऑक्साइड/ ऑक्सीजन 3. ऑक्सीजन 4. इसी

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स)

(घ) अतिलघु उत्तरीय : 1. पर्यावरण को हानिकारक तत्त्वों द्वारा प्रदूषित करना पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है। 2. आज हम सभी ..... चिंतित है। 3. इससे मनुष्य का तनाव बढ़ता है, श्रवणशक्ति कम हो जाती है, हृदय की धड़कने तेज हो जाती हैं और कभी-कभी हृदयगति रूक जाने से लोगों की मृत्यु तक हो जाती है।

लघुत्तरीय: 1. हवा और पानी के कारण (प्रकृति संतुलन के कारण) 2. भूमि, जल, वायु और ध्वनि संबंधी प्रदूषण 3. मनुष्य को

दीर्घ उत्तरीय : 1. अनेक प्रकार के हानिकारक घुलनशील तत्त्व घरों और कारखानों द्वारा नाले-नालियों के मार्ग से नदियों में बहा दिए जाते हैं। इससे जल में अनावश्यक तत्त्व घुल जाने से उसके यौगिकों का अनुपात बिगड़ जाता है और वह प्रदूषित हो जाता है। ये अनावश्यक तत्त्व जहरीले रसायन के रूप में होते हैं जो जल प्रयोग द्वारा त्वचा के स्पर्श और शरीर के भीतर जाकर पेट संबंधी गंभीर बीमारियों को जन्म देते हैं। इनसे मनुष्य,

पशु-पक्षी सभी दुष्प्रभावित होते हैं। जलीय जीव तो नष्ट ही हो जाते हैं। मछलियों की कई प्रजातियाँ इसके दुष्प्रभाव से नष्ट हो चुकी हैं। मनुष्यों को जल-प्रदूषण के कारण असाध्य बीमारियों का शिकार होना पड़ रहा है। 2. आजकल नगर धुएँ के केन्द्र बन गए हैं। चाहे वाहन हों या कारखाने, सभी में ऊर्जा की खपत चाहिए। कोयला व पेट्रोलियम के जलने से ऊर्जा उत्पन्न होती है परंतु जहरीला धुआँ बड़ी मात्रा में निकलता है जो वातावरण की हवा में घुलकर उसे विषैला बना देता है जो साँस के माध्यम से शरीर में जाकर श्वास संबंधी विभिन्न बीमारियों का स्रोत बनता है। प्रदूषण के द्वारा वायुमंडल में फ्लोरा कार्बन नामक गैस की मात्रा बढ़ गई है। इसके कारण ओजोन की मात्रा कम होती जा रही है। यदि ओजोन मंडल की परत पतली हो गई तो सूर्य से आ रही पराबैंगनी किरणों से भूतलवासियों का बच पाना असंभव होगा। 3. प्रदूषण रोकने में पेड़-पौधों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। ये प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया के द्वारा कार्बन डाईऑक्साइड को ऑक्सीजन में परिवर्तित कर देते हैं। इससे वायुमंडल में ऑक्सीजन की निरंतर पूर्ति होने से प्रदूषण रोकने में सहायता मिलती है। अत: पेड़-पौधे अधिकाधिक होने चाहिएँ। साथ ही हमें चाहिए कि गंदगी न फैलाएँ और फैली हुई गंदगी को साफ रखें। आस-पास की नालियाँ साफ रखें, कूड़ा-कचरा खुले में न फेंके, खुले में मल-मूत्र विसर्जन न करें। प्रदूषण कम करने वाले परंपरागत ईंधनों का उपयोग कम करके सूर्य, हवा व पानी से शक्ति उत्पन्न कर कल-कारखानों और वाहनों को चलाएँ। प्रयास करें कि प्रकृति का भंडार भरा रहे। आबादी और गंदगी को नियंत्रित करें और जहरीले पदार्थों का उपयोग यदि बंद न करें तो कम अवश्य कर दें।

पर्यावरण-संरक्षण भारतीय संस्कृति से भी जुड़ा हुआ है। यहाँ पेड़ लगाना सदा से पुण्य कार्य माना गया है। पीपल, बरगद, आम, नीम, बेल, जामुन, आँवला, पाकड़ जैसे उपयोगी वृक्षों को लगाना धार्मिक फल माना जाता है। आज भी पानी के स्रोतों, देवालयों और मार्गों के निर्भर पेड़ लगाने और पेड़ों को न काटने की प्रथा समाज में व्याप्त है। पेयजल स्रोतों के निकट या तटों पर मल-मूत्र त्याग पाप कर्म माना गया है। इन संस्कारों को मानते हुए हम स्वभावत: पर्यावरण संरक्षण कर सकते हैं।

भाषा-बोध

(क) 1. कीटाणु = कीट + अणु 2. कदापि = कदा + अपि 3. पर्यावरण = परि + आवरण 4. जीवनाधार = जीवन + आधार

(ख) स्वयं कीजिए। **(ग)** 1. (अ) 2. (अ)

(घ) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

17. पूर्वी सीमांत असम

(क) 1. बोलियाँ 2. नारी 3. बिहू 4. माकाम

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स)

(घ) अति लघु : 1. गुवाहाटी असम का प्रवेश द्वार है। 2. हेम चंदु गोस्वामी, लक्ष्मीनाथ बैज बरूआ, चंद्रकुमार अग्रवाल। 3. ऐतिहासिक युग में इस प्रदेश की चर्चा गुप्त सम्राटों के समय में आती है। 4. यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन दाल-भात और मछली है।

लघु उत्तरीय : 1. वनों में साल ..... लुभाने वाला है। यहाँ कई ऐसे ..... सुंदर पशु-विहार है। 2. ह्वेनसांग ने इस प्रदेश के बारे में ..... रहती हैं। 3. असमिया साहित्य का उदय तेरहवीं सदी में हेम सरस्वती के प्रह्लाद चरित्र से माना जाता है। 4. पुरुष धोती पहनते हैं और सर्दियों में कंधों पर चादर डाल लेते हैं। स्त्रियों का पहनावा भी बहुत सुंदर है -मेखला, छाती ढ़कने वाली चादर और शाल, इसका लाला बूटेदार किनारा और मूंगा रेशम और कपास के सभी घरेलू वस्त्र ये स्वयं कर करघों से बुनती है। काम करते समय ये पेटीकोट और लंबी बाहों वाली शमीज पहनती हैं।

दीर्घ उत्तरीय : 1. प्रत्येक नाम का कोई-न-कोई अर्थ होता है। असम नाम बहुत नया है। बर्मा की ओर से आने वाली 'अहोम' जाति ने इस प्रदेश पर छह सौ वर्षों तक शासन किया था। उसी अहोम शब्द से यह 'असम' बना है। यहाँ के निवासी इसका उच्चारण 'अहोम' ही करते हैं।

2. 'बिहू' असम की संस्कृति का प्रतीक है। बिहू उत्सव तीन तरह के होते हैं-'काते बिहू या कंगाली बिहू' 'माघ बिहू' या 'भोगाली बिहू' और चटर बिहू या रंगाली बिहू। 'रंगाली बिहु' इन तीनों में प्रमुख है। यह बसंत के अवसर पर मनाया जाता है। यह पुराने

वर्ष को विदा करके नए वर्ष का स्वागत करता है। इसके तीन भाग हैं-'गौ सेवा', 'आमोद-प्रमोद' और 'ईश्वर सेवा'। शेष भारत की तरह असम भी कृषि प्रधान है। इसलिए गाय-बैलों की सेवा करना स्वाभाविक है। गौ सेवा के पर्व का नाम है 'गुरु बिहू'। नववर्ष के पहले दिन 'मानुहर बिहु' होता है। इसमें सब छोटे अपने बड़ों को नमस्कार करते हैं और मंदिर में एकत्र होकर कीर्तन करते हैं। 3. गाँधी युग में तरुण राम फूकन नवीनचंद्र बरदलोई, गोपीनाथ बरद लोई आदि नेताओं का योगदान बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा। 1942 ई० के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भी यह प्रदेश, पीछे नहीं रहा। पुरुषों के साथ-साथ कनकलता जैसे युवतियाँ भी अपने प्राणों की बलि देने से नहीं चूकीं।

भाषा-बोध :

(क) 1. असम (व्यक्तिवाचक संज्ञा) 2. सुख (भाववाचक संज्ञा) 3. लकड़ी (पदार्थवाचक संज्ञा) 4. धर्म (भाववाचक संज्ञा) 5. फल (जातिवाचक संज्ञा) 6. कालिदास (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

(ख) 1. दुर्गम **घाटियाँ** 2. चौड़ी **सड़कें** 3. गहरी **खाइयाँ** 4. अनेक **जातियाँ** 5. ऊँचा **पेड़** 6. लुटेरी **जातियाँ**

(ग) 1. घाटी (संज्ञा) 2. भयंकर (विशेषण) 3. नाचना (क्रिया) 4. बुनना (क्रिया) 5. धोती (संज्ञा) 6. पवित्र (विशेषण)

(घ) 1. तेल (पुल्लिंग) 2. लकड़ी (स्त्रीलिंग) 3. मंदिर (पुल्लिंग) 4. नदी (स्त्रीलिंग) 5. मैदान (पुल्लिंग) 6. पशु (पुल्लिंग)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

18. रामचरितमानस (उत्तरकांड)

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब)

(ग) अति लघु : 1. अधमाई से तात्पर्य नीचता है यह दुष्टों में प्रकट होती है। 2. दूसरों का भला करने की, प्रभु भक्ति की। 3. दुष्ट खुश होते हैं।

लघु उत्तरीय : 1. वे दीनों पर दया करते हैं तथा मन वचन और धर्म से निष्कपट प्रभु भक्ति करते हैं।

2. वे काम, क्रोध, मद और लोभ के परागण तथा निर्दयी, कपटी, जटिल और पापों के घर होते हैं। 3. तुलसी ने कहा है, ''पराहित सरिस धर्म नहिं भाई।''

दीर्घ उत्तरीय : 1. दुष्टों के विषय में तुलसीदास जी ने अनेक बातें कहीं हैं, परंतु यह चौपाई उनके विषय में प्रमुखता से वर्णन करती है-

झूठइ लेना झूठइ देना। झूठइ भोजन झूठ चबेना।।
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा। खाई महा अहि हृदय कठोरा।।

उनका झूठा ही लेना और झूठा ही देना होता है। झूठा ही भोजन और झूठा ही चलना होता है। अर्थात् वे लेने-देने के व्यवहार में झूठ का आश्रय लेकर दूसरों का हक मार लेते हैं अथवा झूठी डींग हाँका करते हैं कि हमने लाखों रूपए ले लिए और करोड़ों का दान कर दिया। इसी प्रकार अति सामान्य भोजन खाते हैं और बताते हैं कि उन्हें बढ़िया सुस्वाद् भोजन से वैराग्य है, इत्यादि। तात्पर्य यह है कि उनका संपूर्ण व्यवहार असत्य पर आधारित होता है। जैसे मोर बहुत मीठा बोलता है परंतु उसका हृदय कठोर होता है क्योंकि वह विषैले सर्पों को भी खा जाता है, वैसे ही दुष्ट जन भी ऊपर से मीठे वचन बोलते हैं परंतु हृदय के अत्यंत निर्दयी होते हैं।

2. दुष्टों के विषय में वर्णन किया गया है-

काम क्रोध मद लोभ परामन। निर्दय कपटी कुटिक मलामन।।
बयरू अकारन सब काहू सों। जो कर हित अनहित ताहू सों।।

अर्थात् वे काम, क्रोध, रूप और लोभ के परागण तथा निर्दयी, कपटी, कुटील और पापों के घर होते हैं। वे बिना ही कारण सब किसी से बैर किया करते हैं। जो भलाई करता है, उसके साथ भी बुराई करते हैं।

खलन्ह हृदय अति ताप बिसेषी। जराहिं सदा पर संपति देखी।।
जहँ कहुँ निंदा सुनहि पराई। हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई।।

अर्थात् दुष्टों के हृदय में बहुत अधिक संताप रहता है। वे पराई संपत्ति (सुख) देखकर सदा जलते रहते हैं। वे जहाँ कहीं दूसरे की निंदा सुन पाते हैं, वहाँ ऐसे हर्षित होते हैं, मानो रास्ते में पड़ी निधि (खजाना) पा ली हो।

भाषा-बोध

(क) 1. अधमाई = नीचता 2. मलायन = पापों का

घर 3. सकल = समस्त 4. परुष = कठोर 5. उर = हृदय 6. खल = दुष्ट 7. द्विज = ब्राह्मण 8. मंदमति = मंदबुद्धि

(ख) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

19. महाभारत

(क) 1. पांडवों 2. श्रीकृष्ण 3. युद्ध

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ)

(घ) अतिलघु उत्तरीय: 1. सत्य और धर्म के पथ पर दृढ़तापूर्वक बने रहने पर युधिष्ठिर की विजय संभव हो सकी। 2. परीक्षित। 3. जाँघ पर। 4. पितामह भीष्म। 5. एक सरोवर में। 6. एक व्याध ने।

लघु उत्तरीय : 1. अज्ञातवास के बाद ..... सभा हुई। 2. श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गए ..... न दूँगा। 3. एक व्याध ..... घड़ियाँ गिनने लगा। 4. क्योंकि युधिष्टिर ..... पालन किया था।

दीर्घ उत्तरीय : 1. भारतीय समाज को चार वर्णों में बाँटा गया है। जिसमें एक वर्ण का नाम है- क्षत्रिय। श्रत्रिय वर्ण को देश व समाज की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था जो राजा के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वहन करते थे। समाज में जब-जब अधर्म अपने पैर पसारता था तो राजा का यह कर्त्तव्य होता था कि अधर्मी लोगों से धर्म की रक्षा करें। कौरव और पांडवों के मध्य होने वाला युद्ध भी धर्म युद्ध ही था। युद्ध से विमुख होते अर्जुन को भगवान ने उपदेश दिया जिसका सार था कि अर्जुन क्षत्रिय है और क्षत्रिय धर्म की रक्षा के लिए है। इस प्रकार अधर्मियों के हाथों धर्म का नाश होने पर वह युद्ध से विमुख नहीं हो सकता। उसे युद्ध करना होगा क्योंकि क्षत्रिय का परम कर्तव्य है कि वह धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करे। 2. जहाँ धर्म होता है, वहीं जय होती है। कहा भी गया है—यतो धर्म: ततो जय:। जब धर्म और अधर्म के मध्य युद्ध होता है तो दैव सदैव धर्म की ओर रहता है। सत्य और धर्म ईश्वरीय गुण हैं। भला इनके त्यागने पर अधर्मी बने लोग क्या अधर्म की स्थापना कर पाएँगे। जो सत्य और धर्म के विमुख हैं, उसे देवताओं का आश्रय नहीं मिलता। अधर्मी मानवीय मूल्यों का संहार करने को तत्पर रहते हैं परंतु अंतत: जीत धर्म की ही होती है। जो जीवन में धर्म और सत्य का आश्रय करता है, ईश्वर उसके साथ रहते हैं क्योंकि ये ईश्वरीय गुण माने गए हैं।

भाषा-बोध :

(क) मच्छर, तोता, चीता, बाज, उल्लू।

(ख) 1. कक्ष (विशेष्य) 2. मलिन (विशेषण) 3. लंबे (विशेषण) 4. लोग (विशेष्य) 5. नकली (विशेषण) 6. निठल्ला (विशेषण) 7. छाया (विशेष्य) 8. विचित्र (विशेषण)

आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

20. शाश्वत संस्कृति

(क) 1. भारतीय संस्कृति 2. पहली 3. परीक्षा के लिए 4. भारत 5. आगरा **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** 1. ब 2. अ 3. स 4. ब

(घ) अति लघु : 1. अंग्रेज (कर्नल) 2. रानीखेत में 3. माली और खानसामा 4. माली को सताने का

लघु उत्तरीय : 1. रानी खेत के झरनों मे गंधक बताया जाता है। 2. पेट के समस्त रोग गरम जल से ठीक हो जाते हैं। 3. प्रकृति से प्रेम और गंधक के झरनों के कारण। 4. 'तुम क्या हो बताया।' 5. तुम्हारे पास क्या है। 6. माली ने कहा जो हुजूर की मर्जी। 7. माली मानापमान से सर्वथा परे था जिस कारण साहब के अंहकार को ठेस पहुँचती थी।

दीर्घ उत्तरीय : 1. 'एक कंबल, फटी हुई दो धोतियाँ ..... पढ़ी जा रही रामायण सुनता। 2. उस झुर्री पड़े ..... कभी नहीं देखा।" 3. साहब ने उस पर जुर्माना लगाया, उसका कंबल छीन लिया। एकादशी के व्रत पर उससे घास छिलवाई, उस पर चोरी का आरोप लगाया और पूरा काम करने पर भी उसे मंदिर नहीं जाने दिया। 4. इस सबके पीछे साहब का अहंकार था, जो माली को नीचा दिखाना चाहता था। 5. माली राम जन्म की आरती में जाना चाहता था किन्तु साहब ने उसे जाने नहीं दिया।

भाषा-बोध

(क) 1. कोई- अनिश्चयवाचक सर्वनाम 2. ये-निश्चयवाचक सर्वनाम 3. कुछ-अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. कुछ-अनिश्चयवाचक सर्वनाम 5. स्वयं-निजवाचक सर्वनाम

(ख) 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक 5. सकर्मक 6. अकर्मक

(ग) 1. खिलाना,खिलवाना 2. दिलाना, दिलवाना

3. धुलाना, धुलवाना 4. पढ़ाना, पढ़वाना
5. लिखाना, लिखवाना 6. घुमाना, घुमवाना
(घ) 1. थपथपाना 2. टनटनाना 3. बड़बड़ाना 4. थरथराना 5. खटखटाना 6. घरघराना
(ड़) 1. सामान्य भविष्यत् काल 2. संम्भाव्य भविष्यत् काल 3. सामान्य वर्तमान काल 4. अपूर्ण वर्तमान काल 5. सम्भाव्य भविष्यत् काल
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।

21. स्वराज्य की नींव

(क) 1. झाँसी 2. महान 3. महारानी 4. अविश्वास
(ख) 1. ब 2. अ 3. ब 4. स 5. अ
(ग) अति लघु : 1. लक्ष्मीबाई निराश होकर स्वयं को अकेला कहती है। 2. जूही कहती है कि आप तो गीता पढ़ती हैं फिर यह निराशा कैसी? 3. जूही महारानी को अपना स्वामी मानती है और उनसे भी बढ़कर अपने देश को अपना स्वामी मानती है। 4. कि शत्रुओं के आक्रमण रूपी संकट के बादल छाए हुऐ हैं।
लघु उत्तरीय : 1. रावसाहब! बाँदा के नवाब व सेनापति तात्या को। 2. प्रतिज्ञा की थी कि वह झाँसी नहीं देगी। 3. जनरल रोज की सेना ने मुरार में हरा दिया 4. कि कहीं हमारी वीरता कलंकित न हो जाए।
दीर्घ उत्तरीय : 1. इसलिए रखा गया है क्योंकि इसमें रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का प्रसंग है और उन्होनें ही पहली बार 'स्वराज्य' हेतु आवाज बुलंद की थी। इस प्रकार वही स्वराज्य की नींव हैं। 2. यह कथन तात्या ने रानी लक्ष्मीबाई की प्रशंसा में कहा जो उनके व्यक्तित्व के पूर्णतया अनुकूल है। रानी की वीरता की प्रशंसा में यह उक्ति सटीक है।
3. रानी लक्ष्मीबाई स्वदेशप्रमी वीरांगना थी। वे अत्यंत बुद्धिमान, प्रजा प्रेमी व अपने साथियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत थी। देश की रक्षा व स्वाभिमान के लिए वह हर पल प्राणों की बाजी लगाने को भी तत्पर रहती थीं।

भाषा-बोध

(क) 1. तीव्रता 2. निराशा 3. ऊँचाई 4. उत्साह 5. विलासिता 6. लज्जा 7. मदहोशी 8. चौड़ाई 9. सेवक **(ख)** पुल्लिंग: (1, 2, 4, 6, 8) स्त्रीलिंग: (3, 5, 7, 9) **(ग)** 1. ब 2. अ 3. स 4. ब 5. अ
(घ) 1. क्या बिना परिश्रम के भी सफल हुआ जा सकता है? 2. क्या गीता पढ़ने से निराशा नहीं होती? 3. हमें नींव का पत्थर बनने से कौन रोकेगा? 4. क्या तुम यह कार्य कर सकते हो?
(ङ) 1. चाचाजी गाँव चले गए होगें। 2. बाजार खुलता है। 3. दादी जी ने रामचरितमानस की चौपाईयाँ सुनी। 4. रेलगाड़ी जा चुकी होगी।
(च) 1. विधानवाचक 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. सरल वाक्य 5. संयुक्त वाक्य 6. मिश्र वाक्य
आओ सीखें : स्वयं कीजिए।